

२०६६, चैत - २

सर्वोच्च अदालत बुलेटिन

पाक्षिक प्रकाशन

वर्ष १८, अङ्क २४

२०६६, चैत १६-३१

पूर्णाङ्क ४२६



प्रकाशक

सर्वोच्च अदालत

रामशाहपथ, काठमाडौं

फोन नं. ४२५०७४२, ४२६२३९७, ४२६२३९८, ४२६२८०१, ४२५८१२२ Ext.२६५१ (सम्पादन), २६५० (छापाखाना), २१०९ (विक्री)

फ्याक्स: ४२६२८७८, पो.व.नं. २०४३८

Email: infor@supremecourt.gov.np, Web: www.supremecourt.gov.np

सम्पादन समिति

| | |
|--|-----------|
| माननीय न्यायाधीश श्री प्रकाश वस्ती | - अध्यक्ष |
| सहरजिष्ट्रार श्री विपुल न्यौपाने | - सदस्य |
| सम्पादक श्री तेजेन्द्रप्रसाद शर्मा सापकोटा | - सचिव |

सम्पादन शाखामा कार्यरत कर्मचारीहरू

कम्प्युटर अधिकृत श्री शम्भुप्रसाद आचार्य
मुद्रण अधिकृत श्री उत्सव कान्छा महर्जन
ना.सु. श्री कृष्णवहादुर गुरुङ
डि. श्री सरस्वती खड्का
कम्प्युटर अपरेटर श्री विदुषी रायमाफ्ठी
कार्यालय सहयोगी श्री कृष्णवहादुर श्रेष्ठ

२०६६ चैत १६ देखि ३१ सम्म विभिन्न इजलासहरूबाट सम्पादन शाखामा प्राप्त निर्णय / आदेशहरू

| | |
|---------------|----|
| विशेष इजलास | १ |
| पूर्ण इजलास | ८ |
| संयुक्त इजलास | १९ |
| इजलास नं. १ | ६ |
| इजलास नं. २ | १३ |
| इजलास नं. ३ | ५ |
| इजलास नं. ४ | १० |
| इजलास नं. ५ | १९ |
| इजलास नं. ६ | १९ |
| इजलास नं. ७ | ४ |

| | |
|-------------|-----|
| इजलास नं. ८ | ११ |
| इजलास नं. ९ | २५ |
| एकल इजलास | ६ |
| जम्मा | १४६ |

यो समाचार बुलेटिन हो । निर्णय संक्षेपीकरण गर्दा इजलासले नै प्रयोग गरेका शब्द यहाँ नपरेका पनि हुन सक्दछन् । यहाँ उल्लिखित निर्णयहरूको नक्कल लिन सकिनेछ ।

२०६६ साल चैत १६ देखि ३१ गतेसम्म मुद्दाको लगत फछ्यौट विवरण

| क्र.सं | विषयगत मुद्दा | लगत | | | फछ्यौट संख्या | बाँकी | |
|--------|---------------|---------------------------|------------------|-------|---------------|-------|------|
| | | जित्तोवा श्री सरको | यस वर्ष परिको | जम्मा | | | |
| 1= | पुनरावेदनपत्र | देवानी पुनरावेदन | ३६५१ | ८७० | ४५२१ | १४५० | ३०७१ |
| 2= | | फौजदारी पुनरावेदन | २३६८ | ५९३ | २९६१ | ८४७ | २११४ |
| 3= | | देवानी पूर्ण इजलास | ६७ | १३ | ८० | ६५ | १५ |
| 4= | | फौजदारी पूर्ण इजलास | ३६ | ७ | ४३ | ३६ | ७ |
| 5= | रिट निवेदन | वन्दीप्रत्यक्षीकरण | ३ | ५४ | ५७ | ५० | ७ |
| 6= | | साधारण रिट | २६०१ | ९३७ | ३५३८ | १०६७ | २४७१ |
| 7= | | पूर्ण रिट | १० | ६ | १६ | ९ | ७ |
| 8= | | विशेष रिट | ६४ | ४५ | १०९ | ५५ | ५४ |
| 9= | साधक | साधक | ८७ | ५५ | १४२ | ६९ | ७३ |
| 10= | दोहोरयाई पाऊँ | दोहोरयाई पाऊँ देवानी | १०९४ | ६८२ | १७७६ | ९२५ | ८५१ |
| 11= | | दोहोरयाई पाऊँ फौजदारी | ३६४ | २४० | ६०४ | ३४४ | २६० |
| 12= | पुनरावलोकन | पुनरावलोकनको निवेदन | ३२७ | ३३२ | ६५९ | १६८ | ४९१ |
| 13= | अनुमति | पुनरावेदनको अनुमति निवेदन | १०५ | २८ | १३३ | ४३ | ९० |
| 14= | विविध | विविध | ७२ | १६ | ८८ | ३० | ५८ |
| 15= | निवेदन | निवेदन | १० | २१८ | २२८ | १५८ | ७० |
| 16= | प्रतिवेदन | प्रतिवेदन | १४ | १२८ | १४२ | ८५ | ५७ |
| | | जम्मा | १०८७३ | ४२४४ | १५११७ | ५४०१ | ९७१६ |

२०६६ साल चैत १६ देखि ३१ गतेसम्मको मुद्दातर्फको संख्यात्मक विवरण

| | | | |
|--|------|--------------------|-----|
| (क) कार्यदिन | १४ | (ङ) आदेश संख्या | ३८० |
| (ख) पेशी चढेका मुद्दा संख्या | २२६९ | (च) फछ्यौट संख्या | ३४२ |
| (ग) कानून व्यवसायीद्वारा स्थगित भएका मुद्दा संख्या | ५५९ | (छ) हेर्न नभ्याएका | ७१५ |
| (घ) हेर्न नमिल्ने मुद्दा संख्या | २२८ | (ज) नि.सु. संख्या | ३५ |

समूहकृत (अभियान) मुद्दाहरूको २०६६ चैत ३१ गतेसम्मको स्थिति

| समूह | कूल मुद्दा | फैसला | | | हेदहिदै | नि.सु. | मेलमिलापमा गएको | बाँकी |
|-------------|------------|---------------------|----------------|-------|---------|--------|--------------------|-------|
| | | अघिल्लो अवधिसम्म | यस अवधिसम्म | जम्मा | | | | |
| फौजदारी | ३६५ | १७३ | ११ | १८४ | ७ | | १८१ | |
| देवानी | ११८० | ८५६ | २३ | ८७९ | ३ | ३८ | ३०० | |
| रिट/वाणिज्य | ३३६ | २४९ | १५ | २६४ | ३ | १ | ७२ | |

उद्धरण: सअ बुलेटिन २०६... .. १ वा २ पूर्णाङ्क , पृष्ठ

(साल) (महिना)

उदाहरणार्थ: सअ बुलेटिन, २०६६, चैत-२, पूर्णाङ्क ४२६, पृष्ठ ११

का.जि.द.नं. ३९।०४९।०५०

नेपाल कानून पत्रिका तथा सर्वोच्च अदालत बुलेटिन
अब हाम्रो वेभसाइटमा उपलब्ध छन्

ठेगाना

www.supremecourt.gov.np

- यो वेभसाइट खोलेपछि बायाँतर्फ नेपाल कानून पत्रिका तथा त्यसको तल सर्वोच्च अदालत बुलेटिनमा क्लिक गर्नुहोस् ।
- २०६६ साल वैशाखदेखिका यी पत्रिकामा समाविष्ट निर्णयहरू पढन र अर्को निर्णय नभएसम्म निःशुल्क डाउनलोड गर्न सकिनेछ ।

नेपाल कानून आयोगको वेभसाइटमा संविधान समेत हालसम्म २५० जति ऐनहरू र तीमध्ये १०० वटा जति ऐनको अंग्रेजी अनुवाद निःशुल्क पढन र डाउनलोड गर्न सकिनेछ ।

ठेगाना

www.lawcommission.gov.np

मूल्य रु.१५।-

मुद्रक: सर्वोच्च अदालत, छापाखाना, रामशाहपथ, काठमाडौं ।

विषयसूची

| क्र. सं | विषय | पक्ष / विपक्ष | पृष्ठ |
|----------------------|------------------------|--|----------------|
| विशेष इजलास | | | १ |
| 1= | उत्प्रेषणयुक्त परमादेश | मीना खड्का वि. मानव अधिकार आयोग ललितपुर समेत | राष्ट्रिय आयोग |
| 2= | लिलाम दर्ता बदर | अवधप्रसाद भेडिहार वि. मोनिफ मिया अन्सारी | |
| पूर्ण इजलास | | | २-४ |
| 3= | लिलाम दर्ता बदर | अवधप्रसाद भेडिहार वि. मोनिफ मिया अन्सारी | |
| 4= | उत्प्रेषण | मोहनलक्ष्मी मास्के वि. अर्थ मन्त्रालय समेत | |
| 5= | लुटपीट हक कायम | राजविराज नगरपालिका कार्यालय समेत वि. सुमित्रादेवी पाण्डे | |
| 6= | लेनदेन | महेन्द्रप्रसाद महतो वि. दुखनीदेवी महतो | |
| 7= | अंश चलन | सन्तमाया महर्जन समेत वि. रामचन्द्र महर्जन | |
| संयुक्त इजलास | | | ४-१० |
| 8= | कर्तव्य ज्यान | नेपाल सरकार वि. उपेन्द्र कट्टेल | |
| 9= | कर्तव्य ज्यान | नेपाल सरकार वि. श्रीप्रसाद सहनी | |
| 10= | कर्तव्य ज्यान | नेपाल सरकार वि. धनकुमारी चोडवाड (लिम्बूनि) | |
| 11= | कर्तव्य ज्यान | नेपाल सरकार वि. धनबहादुर धिमाल | |
| 12= | कर्तव्य ज्यान | नेपाल सरकार वि. पवित्रीदेवी महतो | |
| 13= | मोही नामसारी | बद्री कोइराला वि. वेदानन्द भ्वा | |
| 14= | सवारी ज्यान | नेपाल सरकार वि. माधवप्रसाद सापकोटा समेत | |
| 15= | लेनदेन | पानमती कनुइन वि. सिदेनी साह कानू | |
| 16= | लेनदेन | राजेन्द्र साह वि. मुखा राय यादव | |

| | | | |
|--------------------|------------------------|--|---------------|
| 17= | लेनदेन | रमेश मानन्धर वि. एशियन पेन्टस प्रा.लि. | |
| 18= | लेनदेन | काशीलाल उपाध्याय वि. शीला साह | |
| 19= | उत्प्रेषण | कृष्णप्रसाद पुडासैनी वि. प्रधानमन्त्री तथा मन्त्रिपरिषद्को कार्यालय समेत | |
| 20= | उत्प्रेषण | विनयकुमार नेपाल वि. नेपाल विद्युत प्राधिकरण वितरण केन्द्र वीरगञ्ज समेत | |
| 21= | उत्प्रेषण | राममुकुन्द महर्जन वि. गुठी संस्थान शाखा कार्यालय ललितपुर समेत | |
| 22= | उत्प्रेषणयुक्त परमादेश | आसकाजी प्रजापति वि. भक्तपुर मालपोत कार्यालय | |
| 23= | उत्प्रेषणयुक्त परमादेश | मीता खड्का वि. श्रम अदालत काठमाडौं समेत | |
| 24= | अंश चलन | सानुबाबु खत्री समेत वि. इलौरा खत्री | |
| इजलास नं. १ | | | १०-११ |
| 25= | उत्प्रेषण परमादेश | रामकुमार लिङ्गदेन वि. जिल्ला प्रशासन कार्यालय भ्वापा समेत | |
| 26= | उत्प्रेषण परमादेश | नागेन्द्रप्रसाद यादव वि. पुनरावेदन अदालत हेटौडा मकवानपुर समेत | |
| 27= | उत्प्रेषण परमादेश | सुधीरकुमार पाण्डे वि. जगरनाथ चौवे समेत | |
| 28= | लेनदेन | लक्ष्मी लाल देव वैश्य वि. कौशलयादेवी वैश्यनी | |
| 29= | अवण्डा छुट्याई पाऊँ | शम्भु यादव वि. सूर्यनारायण यादव समेत | |
| इजलास नं. २ | | | ११-११४ |
| 30= | निषेधाज्ञा | रणबहादुर श्रेष्ठ वि. ली वजीन | |
| 31= | उत्प्रेषण लगायत | इन्द्रबहादुर मगर वि. मालपोत विभाग समेत | |
| 32= | आयकर | संजय सुरेका वि. आन्तरिक राजस्व कार्यालय | |
| 33= | घर खाली गराई चलन | लीलादेवी महासेठ समेत वि. शिवनारायण यादवनथुनी साह | |

| | | | | | |
|--------------------|------------------------|---|--------------------|---------------------------|--|
| | चलाई पाऊँ | सुडी वि. शिवनारायण यादव | | | |
| 34= | परमादेश समेत | डा. मिथिला शर्मा वि. वीर अस्पताल समेत | 49= | लुटपीट | पंकज खनाल वि. कृष्णबहादुर कुँवर समेत |
| 35= | निर्णय बदर मोही कायम | राजु महर्जन वि. शुभद्रा प्रधान समेत | 50= | कर्तव्य ज्यान | शिवमुरत केवट वि. नेपाल सरकार |
| 36= | परमादेश | माधवप्रसाद पौडेल समेत वि. प्रधानमन्त्री तथा मन्त्रिपरिषद्को कार्यालय समेत | 51= | कर्तव्य ज्यान | नेपाल सरकार वि. शेष महमद जहिरशेष |
| 37= | उत्प्रेषणयुक्त परमादेश | ध्रुवबहादुर देवकोटा वि. अख्तियार दुरुपयोग अनुसन्धान आयोग समेत | 52= | मोही नामसारी | बालकुमारी शाही वि. मखमली खरेल |
| 38= | उत्प्रेषणयुक्त परमादेश | महेशप्रसाद शाह वि. अख्तियार दुरुपयोग अनुसन्धान आयोग समेत | इजलास नं. ५ | | १८-२३ |
| इजलास नं. ३ | | | १४-१६ | | |
| 39= | परमादेश समेत | अधिवक्ता भोजराज ऐर समेत वि. भौतिक योजना तथा निर्माण मन्त्रालय समेत | 53= | उत्प्रेषण मिश्रित परमादेश | शंकरप्रसाद खरेल वि. पुनरावेदन अदालत पाटन समेत |
| 40= | उत्प्रेषण समेत | शान्ति श्रेष्ठ वि. लुम्बिनी बैंक लिमिटेड कर्पोरेट अफिस काठमाडौँ समेत | 54= | अंश चलन | सन्तुमाया शाक्य समेत वि. वृद्धिलाल शाक्य समेत |
| 41= | उत्प्रेषणयुक्त परमादेश | नारायणमहर्जन डंगोल वि. राष्ट्रिय वाणिज्य बैंक केन्द्रीय कार्यालय समेत | 55= | अंश चलन | विन्देश्वरी साहु वि. भवरीदेवी |
| 42= | जबरजस्ती करणी | नेपाल सरकार वि. सोनाम शेर्पा | 56= | जबरजस्ती करणी | नरध्वज गुरुङ वि. नेपाल सरकार |
| 43= | अंश दर्ता | गवनकुमारी राई वि. श्यामकुमारी राई | 57= | कर्तव्य ज्यान | मेघबहादुर कुमाल वि. नेपाल सरकार |
| इजलास नं. ४ | | | १६-१८ | | |
| 44= | उत्प्रेषण समेत | देवशरण पण्डित वि. सामान्य प्रशासन मन्त्रालय समेत | 58= | जीउ मास्ने बेच्ने | टहल सिंह सरदार वि. नेपाल सरकार |
| 45= | कीर्ते जालसाजी | रामदास कुर्मी वि. भागिरथी अहिर यादव समेत | 59= | अंश दपोट | सत्यनारायण मण्डल समेत वि. नकछेदी सरवरिया |
| 46= | उत्प्रेषण परमादेश | चिरञ्जीवी कुवेर वि. प्रधानमन्त्री तथा मन्त्रिपरिषद्को कार्यालय समेत | 60= | उत्प्रेषणयुक्त परमादेश | रामकृष्ण के.सी. वि. जिल्ला विकास समिति सर्लाही समेत |
| 47= | हक कायम गरिपाऊँ | गुलैचा कोहार वि. सीतला कोहार समेत | 61= | अंश चलन | नथरीदेवी चौधरी समेत वि. देवीलाल चौधरी |
| 48= | खिचोला | कृष्णबहादुर कुँवर समेत वि. | 62= | उत्प्रेषण | मदनराज मिश्र वि. प्रधानमन्त्री तथा मन्त्रिपरिषद्को कार्यालय समेत |
| | | | 63= | परमादेश | भेषबहादुर खड्का वि. स्थानीय विकास मन्त्रालय समेत |
| | | | 64= | मोही लगत कट्टा | भदिया थारू वि. खेदुलाल माभी थारू |
| | | | 65= | मोही लगत कट्टा | फूलचन धामी थारू वि. खेदुलाल माभी थारू |
| | | | 66= | शैक्षिक भ्रष्टाचार | नेपाल सरकार वि. राजेन्द्र थापा |

| | | |
|--------------------|-----------------------------|---|
| 67= | अंश नामसारी | जव्वार कुजडा वि. अबुसहिम कुजडा समेत |
| 68= | घरजरगा खिचोला | प्रमोदकुमार चौधरी समेत वि. अग्रवाल आरोही |
| 69= | अंश नामसारी | सत्यदेव पाण्डे वि. त्रियुगीनारायण पाण्डे समेत |
| 70= | अदालतको अवहेलना | अशोकानन्द मिश्र वि. प्रमुख जिल्ला अधिकारी, जिल्ला प्रशासन कार्यालय सप्तरी |
| इजलास नं. ६ | | २३-२८ |
| 71= | अंश दर्ता | राजकलीदेवी कुर्मी समेत वि. वैजनाथ राउत कुर्मी |
| 72= | उत्प्रेषणयुक्त परमादेश | ज्योतिमान सिंह राजभण्डारी समेत वि. श्रम तथा यातायात व्यवस्था मन्त्रालय समेत |
| 73= | उत्प्रेषणयुक्त परमादेश समेत | दिनेशकुमार यादव वि. रानी विराटनगरका प्रहरी उपरिक्षक समेत |
| 74= | उत्प्रेषण समेत | सतन भगत वि. जिल्ला प्रशासन कार्यालय वीरगञ्ज समेत |
| 75= | कीर्ते जालसाज | राजेशकुमार साह समेत वि. भागवतप्रसाद साह तेली समेत |
| 76= | अंश दर्ता | तारादेवी साह समेत वि. मीरादेवी तेली समेत |
| 77= | अंश चलन | भगलु चौधरी वि. संगीलाल चौधरी |
| 78= | अंश दपोट हक कायम | चम्पी दमिनी वि. विमला दमिनी |
| 79= | उत्प्रेषणयुक्त परमादेश | ज्ञानबहादुर पाण्डे वि. राजनबहादुर खत्री क्षेत्री समेत |
| 80= | उत्प्रेषण परमादेश | सानुकृष्णबहादुर गिरी वि. नारायण गिरी समेत |
| 81= | उत्प्रेषण परमादेश | मायादेवी थापा क्षेत्रिनी (हमाल) वि. मालपोत कार्यालय सिराहा समेत |
| 82= | उत्प्रेषण | अमरबहादुर गुरुड समेत वि. ललित गुरुड समेत |
| 83= | परमादेश | अधिवक्ता भोजराज ऐर समेत वि. प्रधानमन्त्री तथा |

| | | |
|--------------------|------------------------|--|
| | | मन्त्रपरिषद्को कार्यालय समेत |
| 84= | उत्प्रेषण परमादेश | केतकी चेट्टर वि. गुठी संस्थान केन्द्रीय कार्यालय समेत |
| 85= | उत्प्रेषण परमादेश समेत | कृष्णगोपाल कपाली (कुस्ले) वि. गुठी संस्थान केन्द्रीय कार्यालय समेत |
| 86= | उत्प्रेषण परमादेश समेत | प्रेमनारायण महतो वि. अख्तियार दुरुपयोग अनुसन्धान आयोग समेत |
| इजलास नं. ७ | | २८ |
| 87= | लेनदेन | राजकुमार अग्रवाल वि. डिकबहादुर तामाङ |
| 88= | अंश दर्ता | राम मिलन महतो नुनिया वि. दुःखी महतो नुनिया समेत |
| 89= | परमादेश | राजेन्द्र कट्टेल वि. शालीग्राम ओझा |
| इजलास नं. ८ | | २९-३१ |
| 90= | जबरजस्ती करणी | नेपाल सरकार वि. पारस थापा |
| 91= | निर्णय दर्ता बदर दर्ता | गंगिया कवानी वि. मरहनदेवी |
| 92= | कर्तव्य ज्यान | नेपाल सरकार वि. कृष्ण क्षेत्री समेत |
| 93= | अंश | उदयभान पाण्डेय वि. रामकेशरी पाण्डेय |

| इजलास नं. ९ | | ३१-३४ |
|-------------|-----------------------------------|--|
| 94= | पोखरी खिचोला हक कायम समेत | बालेश्वर मण्डल वि. भुलीदेवी धनुकाइन |
| 95= | लिखत दर्ता बदर | कृष्णदेव महतो वि. रामपरिदेवी महतो समेत |
| 96= | निर्णय दर्ता बदर दर्ता कायम | मित्रबहादुर घिमिरे समेत वि. सरोजकुमार बज्राचार्य समेत |
| 97= | निर्णय दर्ता बदर | गंगाबहादुर तामाङ वि. शिवकुमार गौली समेत |
| 98= | निर्णय दर्ता बदर | दुर्गाबहादुर घिमिरे वि. दिनेश थापा समेत |
| 99= | लिखत दर्ता बदर | सुनरी वरैनी वि. हरेन्द्रप्रसाद वरै |
| 100= | अंश | पदमकुमारी लामा समेत वि. दिनेश लामा |
| 101= | खिचोला चलन | सोमई अहिर वि. प्रदीपकुमार तेली |
| 102= | जग्गा खिचोला | लक्ष्मीबहादुर मानन्धर वि. पूर्णराज श्रेष्ठ समेत |

| 103= | हरहिसाब गराई पाऊँ | मणिकुमार ज्ञवाली वि. तिलकराज थापा |
|-----------|---------------------------|---|
| 104= | कर्तव्य ज्यान | नारायण डाँगी वि. नेपाल सरकार |
| एकल इजलास | | ३५-३६ |
| 105= | उत्प्रेषणयुक्त परमादेश | शंकरध्वज कार्की वि. जिल्ला स्वास्थ्य कार्यालय स्याङ्जा समेत |
| 106= | उत्प्रेषणयुक्त परमादेश | कृष्णकुमार श्रेष्ठ वि. सशस्त्र प्रहरी बल सिद्धकाली गण समेत |
| 107= | उत्प्रेषणयुक्त परमादेश | राकेश विलास वि. पुनरावेदन अदालत पाटन समेत |
| 108= | उत्प्रेषणयुक्त परमादेश | राकेश विलास वि. अञ्जु विलास समेत |
| 109= | उत्प्रेषण समेत | विष्णुलाल श्रेष्ठ वि. भूमिसुधार तथा व्यवस्था मन्त्रालय समेत |
| 110= | उत्प्रेषण समेत | रामसुन्दर रघु श्रेष्ठ वि. लक्ष्मीदास रघु श्रेष्ठ समेत |

विशेष इजलास

मा.न्या.श्री रामप्रसाद श्रेष्ठ, मा.न्या.श्री ताहिर अली अन्सारी र मा.न्या.श्री मोहनप्रकाश सिटौला, रिट नं. ०६५-WS-००३५, ००३६, उत्प्रेषणयुक्त परमादेश, मीना खड्का वि. राष्ट्रिय मानव अधिकार आयोग ललितपुर समेत, विनोद फुयाँल समेत वि. प्रधानमन्त्री तथा मन्त्रिपरिषद्को कार्यालय समेत

मानव अधिकार आयोग त्यस्तो संस्था हो, जसले आफूलाई पूर्ण रुपमा विकृतिविहीन तुल्याएर अन्य संस्थाहरूका लागि उदाहरण प्रस्तुत गर्नुपर्छ। किनभने आयोगको प्रमुख जिम्मेवारी भनेकै मानव अधिकारको सम्मान, संरक्षण र सम्बर्द्धन गर्नु हो र समग्रमा नागरिकका हक अधिकारहरूको सुरक्षा गर्नु हो। नागरिकको हक अधिकारको रक्षा गर्नेले नागरिकहरूका बीचमा विभेद गर्नु हुँदैन। नियुक्ति प्रक्रियामा नै विशेष संरक्षणको अपेक्षा गर्नेले प्रभावकारी सेवा दिन सक्दैनन्। त्यसैले प्रतिस्पर्धालाई सीमित तुल्याउने गरी गरिएको कानूनी व्यवस्थालाई कुनै पनि तर्कका आधारमा संविधान अनुकूल मान्न नसकिने।

कुनै कानूनी प्रक्रिया पूरा नगरी आयोगबाट आफूखुशी करारमा भर्ना भै २ वर्ष काम गरेका कर्मचारीलाई पूर्ण र व्यापक प्रतिस्पर्धात्मक योग्यता परीक्षणविना स्थायी बनाउने उद्देश्यका साथ राष्ट्रिय मानव अधिकार आयोगका कर्मचारीको सेवा, शर्त र सुविधासम्बन्धी नियमावली, २०५८ मा मिति २०६५।१।२९ मा गरिएको तेस्रो संशोधनबाट थप गरिएको नियम ९ को उपनियम (४) को विवादित कानूनी व्यवस्थाले संविधानको धारा १८ द्वारा प्रदत्त रोजगारी प्राप्त गर्ने नेपाली नागरिकको हक, धारा १२(३) को खण्ड (च) बमोजिम पेशा, रोजगार गर्ने स्वतन्त्रता तथा धारा १३ द्वारा प्रदत्त समानताको हकमाथि समेत अनुचित बन्देज लगाएकोले संविधानसँग बाझिएको देखिँदा नेपालको अन्तरिम संविधान, २०६३ को धारा १०७ को उपधारा (१) बमोजिम प्रारम्भदेखि

नै लागू हुने गरी सो संशोधित नियम ९ को उपनियम (४) बदर गरिदिएको छ। नियमावलीको त्यस्तो असंवैधानिक व्यवस्थाबमोजिम आयोगबाट मिति २०६६।३।१९ को गोरखापत्र दैनिकमा प्रकाशित विज्ञापनबमोजिम सीमित प्रतिस्पर्धाबाट पदपूर्ति गर्न भनी प्रकाशित सूचना समेत संविधान प्रतिकूल देखिँदा संविधानको धारा १०७ को उपधारा (२) बमोजिम उत्प्रेषणको आदेशद्वारा बदर हुने ठहर्छ। अब प्रचलित कानूनबमोजिम पुनः खुल्ला प्रतिस्पर्धाबाट आयोगमा रिक्त रहेका पदहरू पूर्ति गर्नु भनी विपक्षी राष्ट्रिय मानव अधिकार आयोगका नाउँमा परमादेशको आदेश समेत जारी हुने।

इजलास अधिकृत : नारायण सुवेदी

कम्प्युटर : सीता गुरुङ

इति संवत् २०६६ साल माघ ७ गते रोज ५ शुभम्।

पूर्ण इजलास

१.

स.प्र.न्या.श्री अनूपराज शर्मा, मा.न्या.श्री खिलराज रेग्मी र मा.न्या.श्री प्रकाश वस्ती, ०६४-DF-००३३, लिलाम दर्ता बदर, अवधप्रसाद भेडिहार वि. मोनिफ मिया अन्सारी

कुनै पनि व्यवहार कि त घरको मुख्य व्यक्तिले गरेको व्यवहार हुनुपर्छ, कि त त्यस्ता मुख्य व्यक्तिको मञ्जुरी रहेको हुनुपर्छ। तर प्रस्तुत मुद्दामा ठाकुरप्रसादले कर्जा लिएको जानकारी जयकलीदेवीलाई थियो वा निज जयकलीदेवीको मञ्जुरी लिइएको थियो भन्ने कुराको प्रमाण देखिएको छैन। घरका मुख्य व्यक्तिलाई कुनै जानकारी नै नदिई लिइएको कर्जाको दायित्व वहनका लागि भने सगोलको सम्पत्तिको उपयोग गरिएको भन्ने कुरा प्रस्तुत मुद्दाको तथ्यबाट देखिन्छ। तर कानूनले घरका मुख्य व्यक्तिको सहिष्णुप वा लिखत नभएको व्यहोरा गोश्वारा धनबाट नव्यहोरिने स्पष्ट व्यवस्था गरेको छ। तसर्थ घरको मुख्य व्यक्तिका रुपमा रहेकी

जयकलीदेवीको मञ्जूरी नलिई ठाकुरप्रसादले लिएको ऋणमा सगोलको सम्पत्तिबाट भरी भराउ गर्ने कार्यलाई कानूनअनुरूपको मान्न नमिल्ने हुँदा लिलाम तथा सोसम्बन्धी कारवाही समेत बदर हुने ।

इजलास अधिकृत : उमेश कोइराला

कम्प्युटर : सीता गुरुड

इति संवत् २०६६ साल माघ २८ गते रोज ५ शुभम् ।

- यसै लगाउको ०६४ DF ००३२, दर्ता बदर, अवधप्रसाद भेडिहार वि. मोनिफ मिया अन्सारी भएको मुद्दामा यसैअनुरूप निर्णय भएको छ ।

२.

मा.न्या.श्री दामोदरप्रसाद शर्मा, मा.न्या.श्री रामकुमार प्रसाद शाह र मा.न्या.श्री रणबहादुर बम, रिट नं. ०६४-WF-०००१, उत्प्रेषण, मोहनलक्ष्मी मास्के वि. अर्थ मन्त्रालय समेत

आन्तरिक राजश्व कार्यालय भरतपुरले श्री डिष्टीलरी प्रा.लि. उपर कारवाही र निर्णय गर्दा कम्पनीले बुझाउनु पर्ने अन्तःशुल्क रकम सर्वप्रथम सो कम्पनीको सम्पत्तिबाट असूलउपर गर्नुपर्नेमा सोतर्फ कुनै कार्य नगरी यी निवेदिका शेयरवाला सञ्चालक रहेकोमात्र कारणबाट करसम्बन्धी कानून वा कम्पनी कानूनमा व्यवस्था नभए पनि निज निवेदिकाबाट असूल गर्न निजको चल अचल सम्पत्ति रोक्का राख्ने भनी मिति २०६२।१।११ को निर्णयको तपसीलमा उल्लेख गरेको र सो गर्दा यी निवेदिकालाई सो सम्बन्धमा प्रतिरक्षा र प्रतिवाद गर्न समुचित मौका नै नदिई स्वच्छ सुनुवाई (Fair Trail) को प्रक्रिया र प्राकृतिक न्याय सिद्धान्त विपरीत सम्पत्तिको संवैधानिक हकलाई आघात पर्ने गरी निर्णय गरेको देखिन आएकोले यी निवेदिकाको नामको चल अचल सम्पत्ति रोक्का राख्ने भन्ने विपक्षीको मिति २०६१।९।१२, २०६१।९।१९ र २०६१।९।१० को निर्णय तथा पत्रहरू र मिति २०६२।१।११ को निर्णयमा उल्लिखित निवेदिकाको नामको सम्पत्ति रोक्का राख्ने हदसम्मको उक्त निर्णयसमेत उत्प्रेषणको आदेशद्वारा बदर गरी उक्त

पत्रहरूद्वारा रोक्का राखिएको चल अचल सम्पत्ति समेत फुकुवा गरी दिनु भनी परमादेश समेत जारी हुने ।

इजलास अधिकृत : दीपककुमार दाहाल

कम्प्युटर : सीता गुरुड

इति संवत् २०६६ साल माघ ७ गते रोज ५ शुभम् ।

- यसै प्रकृतिको रिट नं. ०६४-WF-०००२, उत्प्रेषण, किशोरकुमार मास्के वि. अर्थ मन्त्रालय समेत भएको मुद्दामा यसैअनुरूप निर्णय भएको छ ।

३.

मा.न्या.श्री रामकुमार प्रसाद शाह, मा.न्या.श्री ताहिर अली अन्सारी र मा.न्या.श्री अवधेशकुमार यादव, २०६२ सालको पु.नि.नं. ७६३, लुटपीट हक कायम, राजविराज नगरपालिका कार्यालय समेत वि. सुमित्रादेवी पाण्डे

मन्दिरसमेत रहेको विवादित सार्वजनिक प्रकृतिको जग्गामा प्रत्यर्थी वादीको निजी हकभोग भएको भन्ने कुनै प्रमाण नहुँदा नहुँदै लुटपीटतर्फको मूल दावी नपुग्ने ठहर्नाई त्यसबाट उठाइएको हककायम मुद्दाबाट हककायम हुने ठहर गरेको यस अदालत संयुक्त इजलासको मिति २०६२।५।१३ को फैसला सार्वजनिक जग्गा व्यक्ति विशेषले दर्ता गराएकै भएपनि बदर हुने भनी यस अदालतको पूर्ण इजलासबाट पुनरावेदक वादी हेडम्बराज पराजुली विरुद्ध तारानाथ गौतम समेत प्रतिवादी भएको जग्गा खिचोला मुद्दामा (ने.का.प. २०५४, नि.नं. ६४७९, पृष्ठ ६७८) प्रतिपादित सिद्धान्तप्रतिकूल देखिँदा न्याय प्रशासन ऐन, २०४८ कने दफा ११ को उपदफा (१) को खण्ड (ख) बमोजिम पुनरावलोकन गरी हेर्ने निस्सा प्रदान हुने ।

इति संवत् २०६६ साल चैत २० गते रोज ६ शुभम् ।

यस्तै प्रकृतिका निम्न मुद्दाहरूमा यसैअनुरूप निर्णय भएका छन् :

- २०६२ सालको पु.नि.नं. ७६४, निषेधाज्ञा, राजविराज नगरपालिका कार्यालय वि. सुमित्रादेवी पाण्डे

- २०६२ सालको पु.नि.नं. ७६५, परमादेश, राजविराज नगर पालिका कार्यालय समेत वि. लखन साह हलुवाई

४.

मा.न्या.श्री प्रेम शर्मा, मा.न्या.श्री अवधेशकुमार यादव र मा.न्या.श्री गिरीशचन्द्र लाल, दे.पु.नं. ०६५-DF-०२५, लेनदेन, महेन्द्रप्रसाद महतो वि. दुखनीदेवी महतो

मा.न्या.श्री प्रेम शर्माको राय:

देवानी प्रकृतिको दायित्व निर्धारणका सम्बन्धमा साक्षीको बकपत्र र पक्षहरूको व्यवहार वा मौखिक भनाइको सारभूत महत्त्व न्यून रहन्छ। देवानी दायित्वको निर्धारण मौखिक भनाई भन्दा पनि लिखतमा अभिव्यक्त गरिएका कुराहरूका आधारमा वास्तविकता निर्धारण वा तय गरिन्छ। कानूनले पनि लिखित व्यवहारलाई नै मान्यता दिएको हुन्छ। लिखितमा उल्लेख भएका दुवै पक्षले स्वीकार गरेका कुराहरू भन्दा बाहिर गई मौखिक जिकीर वा भनाईमा विश्वास गरी अनुमान र तर्क गर्ने गुञ्जाइस यस प्रकृतिका विवादहरूमा कमै हुन्छ। लिखत नभएको वा लिखतमा केही कुरा अस्पष्ट भएको अवस्थामा अन्य कुराको सहायता लिन सकिने कुरा विचारणीय हुन पनि सक्दछ तर जहाँ लिखत छ र लिखतले नै पक्षहरूको हक र दायित्व प्रष्टरूपमा प्रतिविम्बित गरेको छ भने त्यस्तोमा पक्षको आचरण र व्यवहार जस्ता देवानी मुद्दाको रोहवाट प्रमाणित गर्न कठिन हुने अमूर्त विषयहरूको सहारा लिन मिल्दैन। त्यसकारण कपाली तमसुकबापत नै राजीनामा लिखत भएको हुँदा हर हिसाव गराई पाउँ भन्ने मुद्दाभै रु.१०,०००/- कट्टा गर्नु प्रस्तुत लेनदेन मुद्दाको सीमा तथा क्षेत्रभित्र पर्दैन। न त: तीन कट्टा जग्गा रु. १०,०००/- मा लेनदेन हुन सम्भव छैन राजीनामा लिखतमा उल्लिखित रु.१०,०००/- कपाली तमसुकमा उल्लेख भएको रकममध्येकै हुनसक्छ भन्ने जस्ता काल्पनिक र गौण

विषयहरूको अनुमान र आधारबाट प्रस्तुत विवादको निरूपण गर्न नमिल्ने।

तसर्थ उल्लिखित आधार कारण र कानूनी व्यवस्था समेतको विवेचनाबाट जग्गा पारित गरी लिनेदिने शर्त व्यहोरा पारी विवादित कपाली तमसुक नभएको, राजीनामा लिखतमा तमसुकको रकमबापत जग्गा पारित गरिएको भन्ने व्यहोरा उल्लेख भएको नदेखिएको त्यससम्बन्धी कुनै कैफियतसम्म पनि नजनिएको तमसुकबमोजिमको साँवा व्याज बुझाई सकेको देखिने तथ्ययुक्त सबूद प्रमाणको अभाव भै मुलुकी ऐन लेनदेन व्यवहारको ५ नं. ले सीमाङ्कन वा निर्धारित गरेका कुनै पनि प्रावधान वा दायित्वको पालना भएको नदेखिएको स्थितिमा केवल मौखिक जिकीर र अनुमानका आधारमा पुनरावेदक प्रतिवादीले दावीको साँवा व्याज बुझाउनु नपर्ने भन्ने ठहरे निष्कर्षमा पुग्न कानूनसंगत नदेखिदा वादी दावी नपुग्ने ठहर गरेको शुरु सुनसरी जिल्ला अदालतको फैसला सदर हुने गरी व्यक्त भएको माननीय न्यायाधीश श्री रामप्रसाद श्रेष्ठको रायसँग सहमत हुन नसकिने।

मा.न्या.श्री अवधेशकुमार यादवको राय :

सामान्यतः देवानी मुद्दामा साक्षीको भनाईलाई भन्दा लिखित प्रमाणलाई महत्त्व दिइने गरिन्छ। तथापि लिखत के कुरा प्रयोजनबाट गरिएको थियो रकम लेनदेन भएको थियो थिएन भन्ने जस्ता विषयहरूमा विवाद भएको अवस्थामा त्यस्तो कारोबार गर्दा प्रत्यक्ष उपस्थित भै रोहवरमा बस्ने साक्षीले अदालतमा गरेको बकपत्रलाई उपेक्षा नै गरिहाल्नु पदछ भन्ने तर्क न्यायोचित हुन सक्दैन। त्यसमा पनि वादीकै साक्षीले राजीनामा गर्दा लेनदेन नभएको भनी गरेको बकपत्र निजका विरुद्ध प्रमाणमा ग्रहण गर्न मिल्ने।

मा.न्या.श्री गिरीशचन्द्र लालको राय :

सामान्यतः ऋणीमाथि पहिलैबाटै असूल गर्नुपर्ने ऋण रकम बाँकी हुँदाहुँदै सो कट्टा नगरी पछिबाट पुनः रुपैयाँको लेनदेन गरी जग्गा

राजीनामा गराएको भन्ने कुरा व्यावहारिक दृष्टिकोणबाट सम्भव नहुनुका साथै विश्वासलायक हुन सक्दैन । यदि अधिवाट कपली तमसुक गरी लेनदेन भएको रकम कट्टा नगरी पछिबाट स्वतन्त्र रूपमा राजीनामा गरिन्छ भने त्यस्तो अवस्थामा सो कुरा स्पष्ट रूपमा राजीनामा लिखतमा उल्लेख गरेर मात्र पुनः रकम लेनदेन हुनु स्वाभाविक देखिन आउने ।

लेनदेन भएको मिति पछि तमसुकको धनीलाई ऋणीले लेनदेनको रकममध्येको आंशिक रकमवापत जग्गा राजीनामा पारित गरी दिएको देखिनाले मिति २०५३।५।२० मा लेनदेन भएको रु.४९,०००।- को जग्गा राजीनामा भएको मिति २०५३।९।०३ सम्मको व्याज जोडी जम्मा हुन आउनेमध्ये उक्त राजीनामा लिखतको थैली रु. १०,०००।- कटाई त्यसपछि बाँकी रहन आउने रकमलाई पुनः साँवा कायम गरी, लेनदेन व्यवहारको २ नं. अनुसार भरी पाउने साँवा र व्याज समेत वादीले प्रतिवादीबाट भराई पाउने ठहर्छ । सम्पूर्ण वादी दावी पुग्ने ठहर गरेको पुनरावेदन अदालत विराटनगरको फैसला सो हदसम्म केही उल्टी हुने ।

संयुक्त इजलासबाट व्यक्त गरिएका रायका सम्बन्धमा यस पूर्ण इजलासमा समेत बहुमत कायम हुन नसकेकोले सर्वोच्च अदालत नियमावली, २०४९ को नियम ३(३) बमोजिम तीन जनाभन्दा बढी संख्या रहेको पूर्ण इजलास समक्ष पेश हुने ।

इजलास अधिकृत : नारायण सुवेदी

कम्प्युटर : सीता गुरुड

इति संवत् २०६६ साल पुस ३० गते रोज ५ शुभम् ।

५.

मा.न्या.श्री रणबहादुर बम, मा.न्या.श्री प्रकाश वस्ती र मा.न्या.श्री भरतराज उप्रेती, दे.पु.इ.नं. ०६५-DF-००२६, ०६५-DF- ००२७, अंश चलन, सन्तमाया महर्जन समेत वि. रामचन्द्र महर्जन, रामचन्द्र महर्जन वि. सन्तमाया महर्जन समेत

मुलुकी ऐनमा २०३४ सालमा भएको सातौं संशोधनपछिका विवादमा अंशबण्डाको १८ नं. ले निजी आर्जनका रूपमा परिभाषित गरेका सम्पत्तिहरूलाई बाहेक गरी बण्डा गर्नुपर्ने हुन आउँछ । तर सो मितिभन्दा अघिको हकमा त्यसरी बाहेक गर्न मिल्ने खालको कानूनी व्यवस्थाको अभावमा अदालतले अन्यथा हुने गरी व्याख्या गर्न सक्ने स्थिति नरहने ।

मिति २०४५।३।८ को घरसारको बण्डापत्रको लिखतमा रामचन्द्र महर्जनकै आर्जन कमाईले बनाएको घर भन्ने व्यहोरा उल्लेख भएकै भरमा विवादको कित्ता नं. २४६ को घरजग्गामा निज रामचन्द्र महर्जनको एकलौटी हक लाग्ने भनी मान्न मिल्ने देखिदैन । मिति २०२७।३।८ मा घरसारको बण्डापत्रलाई आधार मानी प्रतिवादी रामचन्द्र महर्जनका नाउँमा खरीद गरिएको कित्ता नं. २४६ को जग्गा र सो जग्गामा मिति २०२८।३।१५ मा बनाएको घर समेतलाई बाहेक गर्न मिल्ने अवस्था नदेखिँदा सगोलमा रहँदा राजीनामा लिखतबाट एउटा अंशियारको नाउँमा हासिल गरिएको जग्गामा पटक-पटक गरी निर्माण गरिएको घर समेतलाई दर्तावाला अंशियारको निजी आर्जनको भनी त्यसबाट अर्को अंशियारले अंश नपाउने गर्नु कानूनी र न्यायोचित नहुने भन्ने समेतका आधारमा प्रतिवादी रामचन्द्र महर्जनका नाउँमा रहेको विवादित कित्ता नं. २४६ को घरजग्गामा वादीहरूले आधी अंश भाग पाउने ।

इजलास अधिकृत : उमेश कोइराला

कम्प्युटर : सीता गुरुड

इति संवत् २०६६ साल माघ ७ गते रोज ५ शुभम् ।

संयुक्त इजलास

१.

स.प्र.न्या.श्री अनूपराज शर्मा र मा.न्या.श्री दामोदरप्रसाद शर्मा, मुद्दा नं. २०६६-RC-००२४, कर्तव्य ज्यान, नेपाल सरकार वि. उपेन्द्र कट्टेल

२०६३ को जेठ महिनामा नचिनेको १९/२० वर्षको क्षेत्री बाहुन जस्तो केटाले आफ्नो पसलमा आई ३ नम्बरको टुक्रा-टुक्रा भएको चार आनाको सुनको मुन्दी रु. ३२५०१- मा विक्री गरेको र तत्कालै गालेर राखेको र केही दिनपछि चूडादेवी कट्टेललाई नातिले घाँटी थिची मारी सुन तथा नगद लगेको र हाल पक्राउ परी हिरासतमा छ भन्ने थाहा पाएको भनी सुन समेत दाखिला गरी उक्त बेच्ने व्यक्ति निज प्रतिवादी नै भएको भनी २०६३३३० मा कागज गरिदिएको देखिन्छ । सो भनाई प्रतिवादीले अदालतमा गरेको वयानको सवाल जवाफ ९ मा उल्लिखित “कानमा गलाउने माडवारी वानामा रु. ३२५०१- मा विक्री गरेको” भन्ने व्यहोरासँग मेल खाएको अवस्था हुँदा प्रतिवादीले कसूर स्वीकारी गरेको वयान अन्यथा भन्ने देखिन आएन । यस अवस्थामा निज प्रतिवादी बड्के भन्ने उपेन्द्र कट्टेलले अभियोग दावीबमोजिम मृतकलाई कर्तव्य गरी मारेको हुँदा मुलुकी ऐन, ज्यानसम्बन्धी महलको १३(३) नं. बमोजिम सर्वश्वसहित जन्मकैदको सजाय हुने ।

इजलास अधिकृत : दीपककुमार दाहाल

कम्प्युटर : सीता गुरुङ

इति संवत् २०६६ साल फागुन १० गते रोज २ शुभम् २.

स.प्र.न्या.श्री अनूपराज शर्मा र मा.न्या.श्री दामोदरप्रसाद शर्मा, मुद्दा नं. ०६६ RC ००२३, कर्तव्य ज्यान, नेपाल सरकार वि. श्रीप्रसाद सहनी

प्रतिवादी श्रीप्रसाद सहनीले मृतकको टाउकोमा खुकुरी प्रहार गरी सोही कारणबाट मृतकको मृत्यु भएको भन्ने तथ्य स्थापित भएको स्थितिमा प्रतिवादी श्रीप्रसाद सहनीले अभियोग माग दावीअनुरूप कसूर गरेको भनी मुलुकी ऐन, ज्यान सम्बन्धी महलको १३(१) नं. बमोजिम सर्वश्वसहित जन्मकैदको सजाय हुने ।

इति संवत् २०६६ साल फागुन १० गते रोज २ शुभम् ३.

स.प्र.न्या.श्री अनूपराज शर्मा र मा.न्या.श्री दामोदरप्रसाद शर्मा, मुद्दा नं.०६६ RC ००२१,

कर्तव्य ज्यान, नेपाल सरकार वि. धनकुमारी चोडवाड (लिम्बूनि)

प्रतिवादीले मौकामा तथा अदालतमा वयान गर्दा सोधिएका सबै प्रश्नको युक्तियुक्त ढङ्गले जवाफ दिएको देखिन्छ । वारदातको समयमा यी प्रतिवादी मानसिक रूपले विक्षिप्त रहेको भन्ने तथ्य स्पष्ट रूपमा पुष्टि हुन नआएको अवस्थामा नावालिका छोरीप्रतिको दायित्व निर्वाह गर्न महसूस गरी कर्तव्य गरी मारेको अवस्था मिसिल संलग्न तथ्यहरूबाट देखिन आएकोले निजले अभियोग दावीबमोजिम कसूर अपराध गरेको देखिँदा मुलुकी ऐन, ज्यानसम्बन्धी महलको १३(१) नं. बमोजिम सर्वश्वसहित जन्मकैद हुने ।

प्रतिवादीले अपराध गरेको कुरालाई अपराध गर्नुपर्ने कारणसहित मौकामा तथा अदालतमा वयान गरी न्यायिक प्रक्रियालाई सहज बनाएको समेत देखिन्छ । निरक्षरी प्रतिवादीले अपराध गर्नु परेको परिस्थितिलाई मध्यनजर गर्दा र निजले अपराध गरेपछि अनुसन्धान समेतका न्यायिक प्रक्रियालाई सहज बनाएको अवस्थालाई मूल्याङ्कन गर्दा कानूनबमोजिम पूर्ण आपराधिक दायित्व वहन गराउँदा बेमनासिब हुने देखिन्छ । यस अवस्थामा शुरुको समर्थन गर्दै पुनरावेदन अदालतले निज प्रतिवादीलाई अ.वं. १८८ नं. बमोजिम ५ वर्ष कैद सजाय गर्न जाहेर गरेको रायसमेत मुनासिब भै सदर हुने ।

इजलास अधिकृत : दीपककुमार दाहाल

इति संवत् २०६६ साल फागुन १० गते रोज २ शुभम् ४.

स.प्र.न्या.श्री अनूपराज शर्मा र मा.न्या.श्री दामोदरप्रसाद शर्मा, २०६६ RC ००१६, कर्तव्य ज्यान, नेपाल सरकार वि. धनवहादुर धिमाल

प्रतिवादीको आक्रमण आत्मरक्षाको लागि नै थियो भन्ने पुष्टि नभएको अवस्थामा अदालतमा भएको वयानमा आत्मरक्षाको जिकीर लिनु नै पर्याप्त हुँदैन । आत्मरक्षाको लागि केही गर्दा ज्यान मारेको भन्ने कुरा निःसन्देहात्मक रूपमा पुष्टि हुनुपर्छ । प्रतिवादीले आत्मरक्षाको लागि केही गर्दा

निजको बाबुको मृत्यु भएको भन्ने नदेखिएको अवस्थामा निजले अभियोग दावीबमोजिम कसूर अपराध गरेको भनी ज्यानसम्बन्धी महलको १३(१) नं. बमोजिम सर्वस्वसहित जन्मकैदको सजाय हुने ।

प्रतिवादीले आफ्नो कार्य गल्ती भएको हो, सुधन पाउँ भनी अदालतमा वयान गर्दा अपराधप्रति पछुतोभाव समेत देखाएको र अनुसन्धानको क्रममा तथा अदालतमा वयान गर्दा समेत वास्तविकता उजागर गरी न्यायिक प्रक्रियालाई सहज बनाएको अवस्था समेत छ । यी सबै परिस्थितिहरूलाई मध्यनजर गरी हेर्दा यी प्रतिवादीलाई कानूनले तोकेअनुरूप पूर्ण आपराधिक दायित्व बहन गराउनु युक्तिसंगत र मनासिब देखिन आउँदैन । अपराधको परिस्थिति र अभियुक्तको अवस्था समेतलाई विचार गर्दा शुरु जिल्ला अदालतले अ.वं. १८८ नं. बमोजिम प्रतिवादी धनबहादुर धिमाललाई १० वर्ष कैद गर्न राय जाहेर गरेकोलाई सदर गरेको समेत मनासिबै देखिने ।

इजलास अधिकृत : दीपककुमार दाहाल
इति संवत् २०६६ साल फागुन १० गते रोज २ शुभम्

५.

स.प्र.न्या.श्री अनूपराज शर्मा र मा.न्या.श्री दामोदरप्रसाद शर्मा, ०६६ RC ००१२, कर्तव्य ज्यान, नेपाल सरकार वि. पवित्रीदेवी महतो

प्रतिवादीउपर अभियोग लागेको र निज फरार रहेको अवस्थामा सो अभियोग अन्य प्रमाणबाट खम्बीर भएको छ, भने फरार भएकै आधारमा निजलाई निर्दोष मान्नुपर्ने अवस्था हुँदैन । संकलित प्रमाणबाट प्रतिवादी पवित्रीदेवी कसूरमा संलग्न रहेको देखिन्छ, भने निजलाई अभियोगबाट सफाई दिनु न्याय संगत र कानूनसंगत हुँदैन । निज प्रतिवादीको लोग्नेले मृतकलाई आक्रमण गर्दा लोग्नेसंग मद्दगार भै मार्नमा संयोग पारिदिएको भन्ने प्रत्यक्षदर्शीको बकपत्रबाट पुष्टि भएको अवस्थामा निज प्रतिवादीले अभियोग दावीबमोजिम कसूर अपराध गरेको भनी मुलुकी ऐन, ज्यानसम्बन्धी महलको १३(४) नं. बमोजिम

जन्मकैदको सजाय हुने । पेशेवर अपराधी भन्ने समेत नदेखिएकी ग्रामीण परिवेश किसान महिलाले मुग वालीमा भएको घाँस काटेको विषयमा उठेको विवादमा लोग्नेको समर्थन गरी वारदातमा संलग्न भएको घटनाको पृष्ठभूमिलाई मध्यनजर गर्दा यी प्रतिवादीलाई ४ वर्ष कैद सजाय गर्न जाहेर गरेको राय समेत सदर हुने ।

इजलास अधिकृत : दीपककुमार दाहाल
इति संवत् २०६६ साल फागुन १० गते रोज २ शुभम्

६.

मा.न्या.श्री अनूपराज शर्मा र मा.न्या.श्री गौरी ढकाल, २०६५ सालको दे.पु.नं. ०५५२, मोही नामसारी, बट्टी कोइराला वि. वेदानन्द भा

मोहीको १ नं. लगतमा घरबास देखिई सुकदेवको नाम जनिएको, २ नं. अनुसूची प्रकाशित भई ४ नं. अनुसूचीबमोजिम जोताहाको अस्थायी निस्सामा जग्गाधनी ठाकुरप्रसाद कोइरालाको कि.नं. २९२ को ०-१-७ जग्गा सुकदेव भाको जोत भोग रहेको भन्ने जनिएको अवस्था समेत देखिएकोले वादी दावीको कि.नं. १२२ को ज.वि. ०-३-१६ जग्गाको जोताहा मोही प्रत्यर्थी वादीका पिता सुकदेव भा रहे भएकोमा निजको मृत्युपश्चात् निजको हक खाने प्रत्यर्थी वादी वेदानन्द भाको नाममा भूमी सम्बन्धी ऐन, २०२१ को दफा २६ को उपदफा १ बमोजिम मोहियानी हक नामसारी भई मोहियानी हकको प्रमाण पत्र पाउने ।

इजलास अधिकृत : दीपक खरेल
इति संवत् २०६६ साल कात्तिक २० गते रोज ६ शुभम् ।

७.

मा.न्या.श्री अनूपराज शर्मा र मा.न्या.श्री राजेन्द्रप्रसाद कोइराला, २०६५ सालको फौ.पु.नं. ०००४, सवारी ज्यान, नेपाल सरकार वि. माधवप्रसाद सापकोटा समेत

प्रतिवादी मनोज भन्ने माधवप्रसाद सापकोटाले सवारी चलाउने इजाजत पत्र नलिई टाटा मोवाइल गाडी चलाएको देखिएकोले निज चालकले मृतकलाई मार्ने मनसायले गाडी हाँकी

चलाएको नभएतापनि गाडीको चाबी लगी सवारी तथा यातायात व्यवस्था ऐन, २०४९ को दफा १४७ अनुसार लापरवाहीपूर्वक गाडी चलाई उक्त दुर्घटना हुन गई शारदा श्रेष्ठको मृत्यु भएको देखिँदा निजले सवारी तथा यातायात व्यवस्था ऐन, २०४९ को दफा १६१ को उपदफा (२) अनुसारको कसूर अपराध गरेको ठहर्छ । सो ठहरेकोले निजलाई सोही दफाबमोजिम कैद वर्ष २ र सवारी तथा यातायात व्यवस्था ऐन, २०४९ को दफा १६१ को उपदफा (४) बमोजिम थप रु.२,०००।- जरीवाना समेत हुने ।

इजलास अधिकृत : दीपक खरेल

कम्प्युटर : सरस्वती पौडेल

इति संवत् २०६६ साल असोज २९ गते रोज ५ शुभम्

८.

मा.न्या.श्री अनूपराज शर्मा र मा.न्या.श्री राजेन्द्रप्रसाद कोइराला, २०६४ सालको दे.पु.नं. ०७३५, लेनदेन, पानमती कनुइन वि. सिदेनी साह कानू

वादी दावीअनुसारको रकम प्रतिवादीबाट वादीका पतिले बुझिलिई भरपाई गरी दिएको भन्ने जिकीर लिई वादीका पतिले गरी दिएको भनेको उल्लिखित भरपाईमा लागेको सहिछाप नमूना सहिछाप तथा राजीनामाको लिखतमा लागेको सहिछाप एक आपसमा मिले भिडेको भन्ने विशेषज्ञको राय प्रतिवेदन र वकपत्र समेत रहे भएको स्थितिमा उक्त भरपाई सद्दे होइन कीर्ते हो भनी भन्न मिल्ने अवस्था नदेखिने ।

इजलास अधिकृत : दीपक खरेल

कम्प्युटर : सरस्वती पौडेल

इति संवत् २०६६ साल असोज २९ गते रोज ५ शुभम्

९.

मा.न्या.श्री अनूपराज शर्मा र मा.न्या.श्री राजेन्द्रप्रसाद कोइराला, २०६४ सालको दे.पु.नं. ०४७७, लेनदेन, राजेन्द्र साह वि. मुखा राय यादव

प्रतिवादी स्वयंमले तमसुकका सम्बन्धमा कुनै विवाद नउठाई तमसुकबमोजिमको उक्त साँवा व्याज बुझाउँदा वादीले भरपाईमा ल्याप्ने

लगाएकोले उक्त भरपाई सद्दे भएको हुँदा बुझाइसकिएको रूपैयाँ वादीलाई तिर्नुपर्ने होइन भनी मिति २०५८।१।८ को भरपाईका सम्बन्धमा मात्र विवाद उठेको देखिन्छ । प्रतिवादीले पेश गरेको उल्लिखित भरपाई निजले प्रतिउत्तरपत्र साथ पेश नगरी प्रस्तुत मुद्दाको सुनुवाईको क्रममा पेश गरेको देखिन्छ । प्रतिवादीले आफूसँग रहे भएको उक्त भरपाई प्रमाणस्वरूप अदालतसमक्ष अ.वं. ७८ नं. को कानूनी व्यवस्थाबमोजिम प्रमाण कागज पेश गर्न तोकिएको दिनमा अनिवार्य रूपले पेश दाखेल गर्नुपर्नेमा तोकिएको दिनमा भरपाई पेश गर्न सकेको अवस्था देखिन आएन । उक्त भरपाई विशेषज्ञबाट जाँच हुँदा उल्लिखित भरपाईको ल्याप्ने अस्पष्ट हुँदा नमूनासँग ५ समानता मात्र मिलेकोले नमूनाको ल्याप्ने र भरपाईको ल्याप्ने एकै व्यक्तिको हो होइन भन्न सकिएन भन्ने विशेषज्ञको राय प्रस्तुत हुन आएको देखिएकोले उक्त भरपाई विश्वसनीय प्रमाणको रूपमा लिन सकिने अवस्था नदेखिने ।

इजलास अधिकृत : दीपक खरेल

इति संवत् २०६६ साल असोज २९ गते रोज ५ शुभम्

१०.

मा.न्या.श्री अनूपराज शर्मा र मा.न्या.श्री राजेन्द्रप्रसाद कोइराला, २०६४ सालको दे.पु.नं. ०६८९, लेनदेन, रमेश मानन्धर वि. एशियन पेन्टस प्रा.लि.

व्यापारिक कारोवारको सम्बन्धमा हदम्यादभित्रै फिराद पर्न आएको अवस्थामा मुद्दाको तथ्यभित्र प्रवेश गरी प्रमाणको मूल्याङ्कन समेत गरी इन्साफ गर्नुपर्नेमा काठमाडौं जिल्ला अदालतको मुद्दाको तथ्यभित्र प्रवेश नै नगरी हदम्यादको आधारमा फिराद खारेज हुने ठहर गरेको मिति २०६४।१।५ को फैसला मिलेको नदेखिएकोले बढर भई जे जो, बुभनु पर्ने हुन्छ बुझी प्रमाणको मूल्याङ्कन समेत गरी पुनः इन्साफ गर्नु भनी काठमाडौं जिल्ला अदालतमा पठाई दिने ठहर गरी गरेको पुनरावेदन अदालत पाटनको फैसला मनासिव देखिदा सदर हुने ।

इजलास अधिकृत : दीपक खरेल

इति संवत् २०६६ साल असोज २९ गते रोज ५ शुभम्
■ यस्तै प्रकृतिको २०६५ सालको दे.पु.नं. १०४४, लेनदेन, हरिमान जोशी समेत वि. एशियन पेन्टस प्रा.लि. भएको मुद्दामा यसैअनुरूप निर्णय भएको छ।

११.

मा.न्या.श्री अनूपराज शर्मा र मा.न्या.श्री राजेन्द्रप्रसाद कोइराला, २०६३ सालको दे.पु.नं. ००९७, लेनदेन, काशीलाल उपाध्याय वि. शीला साह

लेनदेन मुद्दाको मूल प्रमाण नै तमसुक हुने हुँदा र उक्त तमसुक जालसाज नठहरी प्रतिवादीले जालसाज भनी वयान गरे उपर सजाय भएकोमा सो उपर निजको पुनरावेदन समेत नपरेको अवस्थामा उक्त सद्दे तमसुकबाट भरी भराउ हुनसक्ने नै देखिने।

इजलास अधिकृत : दीपक खरेल

इति संवत् २०६६ साल असोज २९ गते रोज ५ शुभम्

१२.

मा.न्या.श्री अनूपराज शर्मा र मा.न्या.श्री प्रेम शर्मा, २०६० सालको रिट नं. ३५००, उत्प्रेषण, कृष्णप्रसाद पुडासैनी वि. प्रधानमन्त्री तथा मन्त्रिपरिषद्को कार्यालय समेत

रिट निवेदक ६ वर्षको अन्तराल पश्चात् नक्कल सारी थाहा पाएको भनी पुनः असाधारण अधिकारक्षेत्रअन्तर्गत अदालत प्रवेश गरेको देखिन्छ। कुनै निकाय वा अधिकारीबाट आफूलाई मर्का पर्ने निर्णय भएको अवस्थामा रिट क्षेत्रबाटै अदालत प्रवेश गर्नुपर्ने अवस्था भएकोमा पनि उचित समयभित्र अदालत प्रवेश गरी सक्नुपर्नेमा आफ्नो कर्तव्य तथा दायित्वप्रति यी निवेदक उदासीन भै उक्त निर्णयलाई स्वीकार गरी बसेको देखियो। यसरी निवेदक लामो अन्तरालपछि अदालत प्रवेश गरेको अवस्थामा विलम्बको सिद्धान्त आर्कषित हुने।

इजलास अधिकृत : दीपक खरेल

इति संवत् २०६६ साल मंसिर १५ गते रोज २ शुभम्।

१३.

मा.न्या.श्री अनूपराज शर्मा र मा.न्या.श्री प्रेम शर्मा, २०६१ सालको दे.पु.नं. ३७४३, उत्प्रेषण, विनयकुमार नेपाल वि. नेपाल विद्युत प्राधिकरण वितरण केन्द्र वीरगञ्ज समेत

रिट निवेदकले विद्युत चोरी गरेको भन्ने सम्बन्धमा मूल्याङ्कनको हिसाब नमिलेको भन्ने जस्ता प्राविधिक एवं सबूद प्रमाणको मूल्याङ्कन गरी हिसाब निकाल्नु पर्ने जस्ता प्रश्न निवेदनमा उठाएको देखिएकोमा त्यस्ता प्राविधिक र सबूद प्रमाण बुझ्नुपर्ने विषय असाधारण अधिकारक्षेत्र अन्तर्गत रिट क्षेत्रबाट हेर्न नमिले।

इजलास अधिकृत : दीपक खरेल

कम्प्युटर : सरस्वती पौडेल

इति संवत् २०६६ साल कात्तिक १७ गते रोज ३ शुभम्।

१४.

मा.न्या.श्री अनूपराज शर्मा र मा.न्या.श्री प्रेम शर्मा, २०६१ सालको रिट नं. ३६२४, उत्प्रेषण, राममुकुन्द मर्हर्जन वि. गुठी संस्थान शाखा कार्यालय ललितपुर समेत

गुठी संस्थान ऐन, २०३३ को दफा २७ मिति २०४९।१०।५ मा संशोधन भै आएको र उक्त ऐनको प्रतिबन्धात्मक वाक्यांशले दफा २७ बमोजिम मोहियानी हक प्राप्त गरिसकेको व्यक्तिको मोहियानी हक खोसिने व्यवस्था गरेको देखिन्छ। उल्लिखित ऐनको जन्म हुनु पूर्वदेखि नै निवेदकका पिता मोहीमा दरिएको स्थितिमा उक्त दफा प्रारम्भ हुनुपूर्वका कार्यलाई यस दफाले निस्तेज वा शून्यमा परिणत गर्न सक्ने स्थिति रहँदैन। निवेदकका पिताले एक पटक प्राप्त गरिसकेको मोहियानी हकका सम्बन्धमा निर्णय गर्ने अधिकार भूमिसुधार कार्यालयलाई मात्र रहे भएकोमा मोही विवादको निकयौल गर्न जग्गा धनी गुठी संस्थान आफैँ सक्षम हुने भनी स्वीकार गर्न प्राकृतिक न्यायको सिद्धान्त समेतको प्रतिकूल हुने।

इजलास अधिकृत : दीपक खरेल

इति संवत् २०६६ साल असोज २७ गते रोज ३ शुभम्

१५.

मा.न्या.श्री अनूपराज शर्मा र मा.न्या.श्री सुशीला कार्की, २०६२ सालको रिट नं. २४६९, उत्प्रेषणयुक्त परमादेश, *आसकाजी प्रजापति वि. भक्तपुर मालपोत कार्यालय*

निवेदकले जग्गा दर्ता सम्बन्धमा मिति २०६०।१।२४ मा मात्र मालपोत कार्यालय भक्तपुर समक्ष जग्गा दर्ता सम्बन्धको कारवाही चलाएको तर उल्लिखित जग्गा सो भन्दा अगावै मिति २०४९।३।३० मा नै श्री ५ को सरकारको नाउँमा दर्ता कायम भै सकेको देखिएवाट सरकारको नाममा दर्ता भई दर्ता स्रेस्ता रहेको जग्गा व्यक्ति विशेषका नाउँमा पुनः दर्ता गर्न सकिने कानूनी व्यवस्था समेत रहे भएको अवस्था नहुँदा रिट निवेदन खारेज हुने ।

इजलास अधिकृत : दीपक खरेल

कम्प्युटर : सरस्वती पौडेल

इति संवत् २०६६ साल मंसिर १८ गते रोज ५ शुभम्

१६.

मा.न्या.श्री अनूपराज शर्मा र मा.न्या.श्री भरतराज उप्रेती, २०६० सालको रिट नं. ३३८३, उत्प्रेषणयुक्त परमादेश, *मीता खड्का वि. श्रम अदालत काठमाडौं समेत*

यदि कसैलाई सूचना वा पत्र पठाउदैमा पत्र प्राप्त भएको र सो पत्रमा उल्लेख भएको व्यहोरा निजले जानकारी पाएको रहेछ अर्थात सो को जानकारी निजको नोटिसमा रहेको थियो भनी न्यायिक अनुमान गर्न सकिदैन । त्यसरी पत्र पठाएको आधारमा मात्र सेवाबाट अवकाश दिदै जाने हो भने उक्त श्रम ऐन, २०४८ ले गरेको सुनुवाईको व्यवस्था तथा यस अदालतले गम्भीरताको साथ मान्यता दिदै आएको प्राकृतिक न्यायाको सिद्धान्तान्तर्गत रहेको सुनुवाईको मौका दिने अर्थात् प्रतिवाद गर्ने मौका दिने जस्ता नैसर्गिक अधिकारको रूपमा रहेका यस्ता व्यवस्थाहरू निरर्थक हुन जान्छन् । साथै निवेदकलाई सेवाबाट हटाएको भन्ने मिति २०५८।१०।२१ (४ फेब्रुअरी २००२) को पत्र

२०५८।१०।२४ मा मानिस छैन भनी फिर्ता आएवाट २०५८।१०।२१ मा सेवाबाट हटाएको बारे निवेदकलाई जानकारी थियो भनी भन्न नमिल्ने ।

निवेदकलाई सेवाबाट अवकाश दिने गरेको निर्णय त्रुटिपूर्ण हुँदा उत्प्रेषणको आदेशद्वारा उक्त निर्णयहरू बदर गरिएको छ । रिट निवेदकलाई साविक पदमा बहाल गरी निजलाई श्रम ऐन तथा श्रम नियमावलीअनुसार प्राप्त हुने पारिश्रमिक तथा सो पारिश्रमिकको साथ नियमित रूपमा प्राप्त भुक्तानी हुने भत्ता तथा अन्य सुविधा समेत दिनु भनी विपक्षी दि एभरेष्ट होटलका नाममा परमादेश समेत जारी हुने ।

इजलास अधिकृत : विष्णुप्रसाद अर्याल

कम्प्युटर : रामशरण तिमिल्सिना

इति संवत् २०६६ साल मंसिर २ गते रोज ३ शुभम् ।

यसै लगाउका निम्न मुद्दाहरूमा यसैअनुरूप निर्णय भएका छन्:

- २०६० सालको रिट नं. ३४३८, उत्प्रेषण, *के.वी.एस. लम्ब वि. श्रम अदालत समेत*
- २०६० सालको रिट नं. ३३८८, उत्प्रेषणयुक्त परमादेश, *मीता खड्का वि. श्रम अदालत समेत*

१७

मा.न्या.श्री रामप्रसाद श्रेष्ठ र मा.न्या.श्री ताहिर अली अन्सारी, २०६२ सालको दे.पु.नं. ८०९४, अंश चलन, *सानुबाबु खत्री समेत वि. इलौरा खत्री*

एउटी महिलाले आफ्नो गर्भबाट जन्मिएको बच्चाको बाबु हो भनी कसैप्रति विनाकारण अंशमा दावी गर्नुपर्ने परिस्थिति सामान्यतया आउने पनि होइन । प्रस्तुत विवादमा वादी इलौरा खत्रीले प्रतिवादी सगुनबाबु खत्री आफ्नो पति हो भनी दावी लिई सो दावी प्रमाणित गर्ने अस्पतालको कागजात तथा फोटो समेतका प्रमाणहरू पेश गरेको अवस्थामा वादी प्रतिवादीबीचको नाता सम्बन्धमा थप विश्लेषण गरिरहनु पर्ने देखिदैन । प्राप्त प्रमाणहरूले वादी

इलौरा खत्री प्रतिवादी सगुनबाबु खत्रीको स्वास्थ्यी नाताको देखिई प्रतिवादीहरूको अंशियार देखिने ।
इजलास अधिकृत : विदुर कोइराला
कम्प्युटर : सरस्वती पौडेल
इति संवत् २०६६ साल माघ ६ गते रोज ४ शुभम् ।

इजलास नं. १

१.

मा.न्या.श्री खिलराज रेग्मी र मा.न्या.श्री कृष्णप्रसाद उपाध्याय, २०६३ सालको रिट नं. ३४७६, उत्प्रेषण परमादेश, *रामकुमार लिङ्गदेन वि. जिल्ला प्रशासन कार्यालय भापा समेत*

प्रचलित कानूनबमोजिम गठित निकायले आफ्नो कार्यसम्पादन पनि कानूनबमोजिम नै गर्नु पर्दछ । अन्यथा त्यहाँ कानूनको वर्खिलाप भई कानूनको शासनको अवधारणाप्रतिकूल हुन पुग्दछ । प्रस्तुत विषयमा पनि प्रमुख जिल्ला अधिकारीलाई प्रचलित कुनै कानूनद्वारा लेनदेन प्रकृतिको विषयमा सम्पत्ति रोक्का राख्ने अधिकार प्राप्त भएको अवस्था देखिँदैन । जिल्ला प्रशासन कार्यालय भापाको प.सं. २०६२।०६३ च.नं. ५५५९ मिति २०६२।१।२३ को मालपोत कार्यालय भापालाई लेखेको पत्रबाट मालपोत कार्यालय भापाले निवेदकको रिट निवेदनमा उल्लिखित जग्गा रोकी राखेको भन्ने रिट निवेदकको जिकीर रहेको सन्दर्भमा जिल्ला प्रशासन कार्यालय भापाको अनधिकृत कारवाहीको उल्लिखित पत्रबाट निवेदकको रिट निवेदनमा उल्लिखित जग्गाहरू अनधिकृत रूपमा रोक्का रहेको देखिँदा रोक्कासम्बन्धी सम्पूर्ण काम कारवाही उत्प्रेषणको आदेशद्वारा बढर हुने ।

इजलास अधिकृत : ध्रुवराज त्रिपाठी

कम्प्युटर : निर्मला भट्ट

इति संवत् २०६६ साल मंसिर ११ गते रोज ५ शुभम् ।

■ यसै प्रकृतिको २०६३ सालको रिट नं. ०६३-WO-०२७३, उत्प्रेषण परमादेश, *विशाल लिङ्गदेन वि. जिल्ला प्रशासन कार्यालय भापा*

समेत भएको मुद्दामा यसैअनुरूप निर्णय भएको छ ।

२.

मा.न्या.श्री खिलराज रेग्मी र मा.न्या.श्री कृष्णप्रसाद उपाध्याय, २०६३ सालको रिट नं. ०६३-WO-०५८६, उत्प्रेषण परमादेश, *नागेन्द्रप्रसाद यादव वि. पुनरावेदन अदालत हेटौँडा मकवानपुर समेत*

कि.नं. ११३६ को ०-५-० क्षे.फ. जग्गा विपक्षी सीताराम महतोले मानो छुट्टिएको मितिभन्दा पछि अंश मुद्दाको फिराद परेपछि खरीद गरेको हुँदा उक्त जग्गाको सम्बन्धमा पुनरावेदन अदालत हेटौँडाबाट निवेदन दावीको कि.नं. ११३६ को जग्गामा ५ भागमध्ये ४ भाग जग्गा पूर्व आदेशबमोजिम फुकुवा गर्नु र ऋणी प्रतिवादी सीताराम महतोको अंश भागको जग्गाबाट विगोले खाम्नेसम्म जग्गा रोक्का राखी विगो भराउनेतर्फ कारवाही गर्नु भनी मिति २०६३।८।२२ मा भएको आदेश कानूनविपरीत भएको देखिँदा उत्प्रेषणको आदेशद्वारा बढर हुने ।

इजलास अधिकृत : ध्रुवराज त्रिपाठी

कम्प्युटर : निर्मला भट्ट

इति संवत् २०६६ साल मंसिर ११ गते रोज ५ शुभम् ।

३.

मा.न्या.श्री खिलराज रेग्मी र मा.न्या.श्री कृष्णप्रसाद उपाध्याय, २०६२ सालको रिट नं. ३६३३, उत्प्रेषण परमादेश, *सुधीरकुमार पाण्डे वि. जगरनाथ चौवे समेत*

अंश मुद्दा दायर भई विचाराधीन रहेको अवस्थामा अंश मुद्दा २०६०।३।३१ मा दायर भएपश्चात् मिति २०६०।४।६ मा लेनदेन मुद्दा दायर भई उक्त मुद्दा फैसला भएको देखिँदा उक्त कपाली तमसुक लिखतको लेनदेन मुद्दा २०६०।४।६ गते मात्र अदालतमा पेश भएको अवस्थामा सोभन्दा अगाडि २०६०।३।३१ मा नै अंश मुद्दा परी अंशमा विवाद रहेको स्थितिमा अंश मुद्दा परेपछि दायर भएको लेनदेन मुद्दामा उक्त मुद्दा परेपछिको मात्र दायित्वको बारेमा विचार गर्नुपर्ने हुन आउने

देखिँदा विपक्षीमध्येको रितादेवी चौवेले २०६०।३।३१ मा दे.नं. २७१२ को अंश मुद्दा दायरपश्चात् निज तथा निजको पति साक्षी समेत नबसी तयार भएको कपाली तमसुकको सम्बन्धमा परेको मुद्दाको विगो भरी भराउको क्रममा निज रितादेवी चौवेको अंश हकको जग्गाबाट विगो भरीभराउ हुन सक्ने अवस्था नदेखिने ।

इजलास अधिकृत : ध्रुवराज त्रिपाठी
कम्प्युटर : निर्मला भट्ट
इति संवत् २०६६ साल मंसिर ११ गते रोज ५ शुभम् ।
४.

मा.न्या.श्री खिलराज रेग्मी र मा.न्या.श्री प्रकाश वस्ती, २०६० सालको दे.पु.नं. ८५०० लेनदेन, लक्ष्मी लाल देव वैश्य वि. कौशल्यादेवी वैश्यनी

विशेषज्ञले आफ्नो रायमा अक्षरहरूमाथि ल्याप्चे छाप रहेको भनेको र लिखतको बीचमा ल्याप्चेछाप परेको समेतबाट उक्त परीक्षण प्रतिवेदनमा उल्लिखित वी. ३ को लिखतको व्यहोराको तेस्रो हरफमा केरिएको भागमा पर्ने गरी व्यहोराको १ देखि ५ औं हरफलाई छुने गरी ल्याप्चे छाप लगाइएको तथा उक्त वी. ३ कै लिखतकै व्यहोराको तपसील महलको दोस्रो हरफको 'सुसरी' भनी लेखिएको भागमा तथा '२६ क' लेखी '२' केरिएको भागमा पनि ल्याप्चे छापहरू लगाइएको देखिन्छ भन्ने व्यहोरा उल्लेख भएको तथा उक्त परीक्षण प्रतिवेदनमा उल्लिखित राय मैले दिएको हो भनी २०६५।१२।२४ मा विशेषज्ञले यस अदालतमा उपस्थित भई वकपत्र समेत गरी उक्त रायलाई पुष्टि गरेको देखिएबाट उक्त लिखत लिफामा लेखिएको भन्न सकिने अवस्था नहुने ।

इजलास अधिकृत : ध्रुवराज त्रिपाठी
कम्प्युटर : विश्वराज पोखरेल
इति संवत् २०६६ साल मंसिर ९ गते रोज ३ शुभम् ।
५.

मा.न्या.श्री खिलराज रेग्मी र मा.न्या.श्री प्रकाश वस्ती, २०५९ सालको दे.पु.नं. ९१४६, अबण्डा

छुट्याई पाऊँ, शम्भु यादव वि. सूर्यनारायण यादव समेत, २०६० सालको दे.पु.नं. ९५३४, रासदेव यादव वि. सूर्यनारायण यादव समेत

कुनै मुद्दाको निर्णयले स्थापित गरिसकेको हकलाई मुद्दाको नाम र आवरण फेर्दैमा परिणाम फरक पर्न नसक्ने ।

दावी लिएको सम्पत्तिकै सम्बन्धमा पटक-पटक मुद्दा परी फैसला हुँदा उल्लिखित जग्गाहरूमा पुनरावेदक वादीहरूको हक नपुग्ने गरी फैसला भई अन्तिम भएर बसेको अवस्थामा सोही जग्गामा दावी गरी पुनः प्रस्तुत मुद्दा पर्न आएको देखिन्छ । यसरी आफूसमक्ष आएको विवादमा सम्बन्धमा अधिकार प्राप्त न्यायिक निकायबाट आवश्यक सबूद प्रमाण र विद्यमान कानूनको मूल्याङ्कन गरी आफ्नो निर्णय दिई सो निर्णयउपर कानूनद्वारा निर्धारित प्रक्रियाबमोजिम पुनरावेदन परी पुनरावेदन तहबाट समेत सो निर्णय अन्तिम भएर तथ्य स्थापित भै सकेपछि पुनः सोही दावीको विषयमा पहिले स्थापित तथ्यलाई निष्क्रिय गर्ने गरी अन्यथा निर्णय गर्नु मुद्दाको अन्तिमताको सिद्धान्त (Doctrin of Finality) अनुरूप नदेखिने ।

इजलास अधिकृत : कृष्णमुरारी शिवाकोटी
कम्प्युटर : वेदना अधिकारी
इति संवत् २०६६ साल पुस १२ गते रोज १ शुभम् ।

इजलास नं. २

१.

मा.न्या.श्री बलराम के.सी. र मा.न्या.श्री दामोदरप्रसाद शर्मा, २०६३ सालको दे.पु.नं. ०६३- CI- ०७०९, निषेधाज्ञायुक्त परमादेश, रणवहादुर श्रेष्ठ वि. ली वजीन

विद्युत ऐन, २०४९ को दफा १२(७) मा प्रयुक्त जल विद्युत उत्पादन, प्रसारण र वितरण भन्ने शब्दहरूले विद्युत उत्पादनका लागि आवश्यक पर्ने आयात गरिएका सामानहरू समेत मूल्य अभिवृद्धिकरको दायराभित्र नपर्ने र १ प्रतिशत भन्सार महसूल लाग्ने वस्तु हुन् भन्ने मान्नुपर्ने

हुन्छ । यस्तो अवस्थामा मूल्य अभिवृद्धिकर र भन्सार महसूल छुट पाउने होइन भन्ने पुनरावेदन जिकीर मनासिव देखिन नआउने ।

इजलास अधिकृत : नारायण रेग्मी

कम्प्युटर : सुदीप पंजानी

इति संवत् २०६६ साल कात्तिक २४ गते रोज ३ शुभम् ।

२.

मा.न्या.श्री बलराम के.सी. र मा.न्या.श्री राजेन्द्रप्रसाद कोइराला, २०५७ सालको रिट नं. ३२३२, उत्प्रेषण लगायत, इन्द्रबहादुर मगर वि. मालपोत विभाग समेत

आफैले सबूद प्रमाणको मूल्याङ्कन गरी दर्ता गर्ने निर्णय गरेको जग्गा तत् निकायबाट पर्याप्त आधार प्रमाणविना दर्ता बदरको निर्णय गर्न मिल्ने हुँदैन । तसर्थ निवेदन दावीको कि.नं. १९१ जग्गा वन क्षेत्रको वृक्षारोपण भएको भन्ने प्रमाणबाट पुष्टि नभएकोले दर्ता बदर गरेको मालपोत कार्यालय धादिङको मिति २०५७/७/७६ को निर्णय उत्प्रेषणको आदेशद्वारा बदर हुने ।

इजलास अधिकृत : महेन्द्रप्रसाद पोखरेल

कम्प्युटर : निर्मला भट्ट

इति संवत् २०६६ साल कात्तिक १९ गते रोज ५ शुभम् ।

३.

मा.न्या.श्री बलराम के.सी. र मा.न्या.श्री कृष्णप्रसाद उपाध्याय, २०६४ सालको फौ.पु.नं. ०६३-CR-०५४२, आयकर, संजय सुरेका वि. आन्तरिक राजस्व कार्यालय

पुनरावेदकले उपभोग नभएको एल.सी. लाई खुद आयमा समावेश गरेको र अग्रिम करबापत बुझाएको १२ लाखमध्ये रु.१०,८०,०००/- कर निर्धारण गर्दा हिसाब नगरेको भनी जिकीर लिई नेपाल राष्ट्र बैंकको भौचर नं. ७५६३९८ मिति २०५२/७/२ बाट ४,००,०००/- भौचर नं. ६४९९९२ मिति २०५२/७/३ बाट रु.४,००,०००/- र भौचर नं. ५४२६३५ मिति २०५३/३/२३ बाट रु.४,००,०००/- गरी रु.१२,००,०००/- आ.व. २०५१/०५२ सालको करबापत बुझाएको भौचरको छायाँकपी पेश गरेको देखिन्छ । सो रकममध्ये रु.१०,८०,०००/- कर

निर्धारण गर्दा हिसाबमा समावेश नगरेको भन्ने पुनरावेदकको जिकीर देखिन्छ । उक्त भौचर बमोजिमका रकम कर निर्धारण गर्दा हिसाब गर्नुपर्ने हुन्छ । प्रत्यर्थीतर्फका सरकारी वकीलले पनि सो कुरा स्वीकार गरेको अवस्था हुँदा पुनरावेदन अदालत पाटनबाट पुनरावेदकले नेपाल राष्ट्र बैंकमा जम्मा गरेको उक्त १२ लाखमध्ये रु.१०,८०,०००/- को हिसाबमा समावेश नगरी कर विभागका महानिर्देशकले आयकर निर्धारण गरेको निर्णय सदर गरेको पुनरावेदन अदालत पाटनबाट भएको मिति २०५९/८/१६ को फैसला त्रुटिपूर्ण देखिँदा बदर हुने ।

इजलास अधिकृत : महेन्द्रप्रसाद पोखरेल

कम्प्युटर : सुदीप पंजानी

इति संवत् २०६६ साल कात्तिक १६ गते रोज २ शुभम् ।

४.

मा.न्या.श्री बलराम के.सी. र मा.न्या.श्री कृष्णप्रसाद उपाध्याय, २०६३ सालको दे.पु.नं. ९०१२, ९०१५, घर खाली गराई चलन चलाई पाऊँ, लीलादेवी महासेठ समेत वि. शिवनारायण यादव, नथुनी साहू सुडी वि. शिवनारायण यादव

घरजग्गा चलन चलाउने क्रममा प्रतिवादीको नाममा जारी भएको म्याद प्रतिवादीको घर ठेगानामा मिति २०६२/११/२२ मा तामेल भएकोले सोही मितिमा प्रतिवादीले फैसलाको जानकारी पाइसकेको देखियो । प्रतिवादीले पुनरावेदन अदालत राजविराजको फैसलाको नक्कल मिति २०६२/१२/२८ र मिति २०६३/१/२१ मा सारी मुद्दा दोहोर्याई हेरी पाऊँ भनी मिति २०६३/२/२५ मा निवेदन पेश गरेको भए तापनि २०६२/११/२२ मा नै फैसलाको जानकारी पाइसकेको देखिँदा उक्त दफा १२ (३) को म्याद नाघी पुनरावेदन पत्र पेश गरेको देखिँदा त्यसरी म्याद नाघी दर्ता भएको प्रस्तुत पुनरावेदन पत्रबाट हेरी इन्साफ दिन नमिल्ने हुँदा पुनरावेदन पत्र खारेज हुने ।

इजलास अधिकृत : महेन्द्रप्रसाद पोखरेल

इति संवत् २०६६ साल मंसिर ८ गते रोज २ शुभम् ।

यसै प्रकृतिका निम्न मुद्दाहरूमा यसैअनुरूप निर्णय भएका छन्:

- २०६३ सालको दे.पु.नं. ९०१३, निर्णय बदर लिखत पारित बदर, *नथुनी साहू सुडी वि. सोनाई यादव समेत*
- २०६३ सालको दे.पु.नं. ९०१४, फैसला निर्णय रजिष्ट्रेशन लिखत दर्ता बदर दर्ता कायम, *लीलादेवी महासेठ वि. सोनाई यादव समेत*

५.

मा.न्या.श्री बलराम के.सी. र मा.न्या.श्री अवधेशकुमार यादव, २०६४ सालको रिट नं. ००२५, परमादेश समेत, डा. मिथिला शर्मा वि. वीर अस्पताल समेत

निवेदिका अध्ययन गरिरहेको विषयको अध्ययन पद्धतिमा अस्पतालमा उपस्थिति रहनु अनिवार्य हुने र यस्तो उपस्थिति अध्ययनरत उपस्थिति मानिने भन्ने देखिन्छ अर्थात् निवेदिकाले अध्ययन गरिरहेको (डिग्री) विषयको उपाधि प्राप्तिको लागि अस्पतालमा उपस्थिति Part of the Study भन्ने देखिन्छ । यस्तो अस्पतालमा उपस्थितिलाई काममा लगाएको भन्न मिलेन । निवेदिकाले आफ्नो अध्ययनको सिलसिलामा एक प्रकारले व्यावहारिक ज्ञान पाउने उद्देश्यले Part of the Study को काम कुनै अस्पतालमा Affiliate भएको त्यसरी Affiliate भएको अस्पतालले अस्पतालको लागि काममा नलगाएको हुँदा त्यस्तो अस्पतालले पनि पारिश्रमिक वा तलब दिने भन्ने प्रश्न नै नआउने हुँदा रिट निवेदन खारेज हुने ।

इजलास अधिकृत : हरिहर पौड्याल

कम्प्युटर : सुदीप पञ्जानी

इति संवत् २०६६ साल असार ७ गते रोज १ शुभम् ।

- यसै प्रकृतिको २०६४ सालको रिट नं. ०६३-WO-१०६७, परमादेश समेत, *उमा कान्त भ्रा समेत वि. वीर अस्पताल समेत* भएको मुद्दामा यसैअनुरूप निर्णय भएको छ ।

६.

मा.न्या.श्री बलराम के.सी. र मा.न्या.श्री सुशीला कार्की, २०६२ सालको दे.पु.नं. ८६७४, निर्णय बदर मोही कायम, राजु महर्जन वि. शुभद्रा प्रधान समेत
सर्जमिनको आधारमा मात्र मोही हक कायम हुन सक्ने कानूनी व्यवस्था भएको देखिँदैन । सर्जमिन अकाट्य प्रमाण नभई अन्य तथ्य तथा प्रमाणको अभावमा कुनै घटना वा कुराको स्थिति थाहा पाउन अपनाउने एउटा प्रक्रियासम्म हो । तर प्रस्तुत मुद्दामा कानूनी व्यवस्थाअनुरूपको अन्य स्वतन्त्र तथ्य र प्रमाण स्पष्ट रहेको अवस्थामा यी पुनरावेदकका पिताले जोतभोग गरेको भनी उल्लेख भएको सर्जमिनका आधारमा मात्र मोही कायम हुन नसक्ने ।

इजलास अधिकृत : उपेन्द्रप्रसाद गौतम

कम्प्युटर : निर्मला भट्ट

इति संवत् २०६६ साल माघ ८ गते रोज ६ शुभम् ।

७.

मा.न्या.श्री बलराम के.सी. र मा.न्या.श्री भरतराज उप्रेती, २०६२ सालको नि.नं. ७३८३, माधवप्रसाद पौडेल समेत वि. प्रधानमन्त्री तथा मन्त्रिपरिषद्को कार्यालय समेत, २०६६ सालको रिट नं. ०६५ WO ०६८८, परमादेश, चन्द्रकान्त ज्ञवाली समेत वि. प्रधानमन्त्री तथा मन्त्रिपरिषद्को कार्यालय समेत

नेपालको अन्तरिम संविधान, २०६३ को धारा ६३ अनुसार संविधानसभाको गठन भै धारा ६४ ले तोकेको अवधिभित्र नेपाललाई संघीय संरचनामा आधारित लोकतान्त्रिक राज्य व्यवस्थाको संविधान निर्माण गर्न संविधानसभा लगायत सिंगो देश लागि रहेको छ । धारा ६४ मा तोकिएको २ वर्षको अवधि पूरा हुन अब पुग नपुग ७ महिनामात्र बाँकी देखिन्छ । देश अहिले एउटा संवैधानिक व्यवस्थाबाट अर्को संवैधानिक व्यवस्थामा परिणत हुन लागेको हुनाले हाल नेपाल Transitional Phase मा छ । राज्यको ध्यान हाल नयाँ संविधान लेखनमा केन्द्रित भएको र नयाँ संविधान आउन धारा ६४ अनुसार केवल ७ महिना मात्र बाँकी रहेको देखिएको हुँदा धारा १३९ अनुसार

स्थानीय निकायको निर्वाचन पाँचौं संशोधन हुनासाथ अनिवार्य रूपले सम्पन्न हुनुपर्नेमा सो नभए पनि नयाँ संविधान निर्माणाधीन परिस्थितिको वर्तमान Transitional Phase को वास्तविकतालाई ध्यानमा राखी निवेदकको मागअनुसार सरकारको नाउँमा परमादेश जारी गर्न उचित नहुने ।

इजलास अधिकृत : महेन्द्रप्रसाद पोखरेल
कम्प्युटर : सुदीप पंजानी
इति संवत् २०६६ साल मंसिर १० गते रोज ४ शुभम्

८.

मा.न्या.श्री प्रेम शर्मा र मा.न्या.श्री भरतराज उप्रेती, २०६२ सालको रिट नं. ३६८२, उत्प्रेषणयुक्त परमादेश, प्रतिषेध, ध्रुवबहादुर देवकोटा वि. अख्तियार दुरुपयोग अनुसन्धान आयोग समेत

उदयपुर सिमेन्ट उद्योगलाई आफ्नो कर्मचारीमाथि कसूरको प्रकृति हेरी नियमानुसार कारवाही गर्ने अधिकार रहेको देखिँदा अ.दु.अ.आ.को निर्णयअनुसार उदयपुर सिमेन्ट उद्योगको सञ्चालन समितिको बैठकको निर्णयबाट रिट निवेदकलाई खाईपाई आएको तलवमानको तल्लो स्केलमा घट्टुवा गर्ने निर्णय गरेको कार्य उदयपुर सिमेन्ट उद्योगको कर्मचारी सेवा शर्त नियमावली, २०५६ अनुसार नै भए गरेको र उदयपुर सिमेन्ट उद्योगले आफ्नो कर्मचारीउपर उक्त नियमावलीअनुरूप विभागीय कारवाही गर्नसक्ने नै देखिन आएकोले प्रस्तुत विषयमा रिट निवेदकको संवैधानिक तथा कानूनी हकको हनन् भएको अवस्था नदेखिने ।

इजलास अधिकृत : ध्रुवराज त्रिपाठी
कम्प्युटर : विश्वराज पोखरेल
इति संवत् २०६६ साल भदौ २३ गते रोज ३ शुभम् ।

९.

मा.न्या.श्री प्रेम शर्मा र मा.न्या.श्री भरतराज उप्रेती, २०५९ सालको रिट नं. २८३४, उत्प्रेषणयुक्त परमादेश, प्रतिषेध, महेशप्रसाद शाह वि. अख्तियार दुरुपयोग अनुसन्धान आयोग समेत

कुनै संस्था वा व्यक्तिले व्यहोर्नु पर्ने थप दायित्व वा उसका विरुद्धमा गरिने कुनै पनि विषयमा निर्णयमा पुग्दा त्यस्तो निर्णयको आधार र कारण खोली निजका विरुद्धमा देखिएका कुराहरूको सम्बन्धमा निजलाई आफ्नो भनाई राख्ने मनासिव मौका प्रदान गरिन प्राकृतिक न्यायको सिद्धान्तसंग सम्बन्धित स्वच्छ सुनुवाईको सिद्धान्तअनुसार अपरिहार्य हुन्छ । प्रस्तुत निवेदनमा निवेदकबाट सामान खरीद प्रक्रियामा भएको नोक्सानीको विगो रकम असूलउपर गर्नुपर्ने सम्बन्धमा निजको भनाई राख्ने मौका प्रदान नगरी निर्णय भएको देखिँदा त्यस्तो अङ्क नै किटान गरी रकम असूलउपर गर्ने रकमको विषयको हदसम्मको निर्णय कायम रहन नसक्ने हुँदा अ.दु.अ. आयोगको मिति २०५९।४।२२ को निर्णय र सो निर्णयको आधारमा उदयपुर सिमेन्ट उद्योग लि. ले. निवेदकसंग उपरोक्त रकम असूलउपर गर्ने सम्बन्धमा भए गरेको हदसम्मको काम कारवाही उत्प्रेषणको आदेशद्वारा बढर हुने ।

इजलास अधिकृत : ध्रुवराज त्रिपाठी
कम्प्युटर : विश्वराज पोखरेल
इति संवत् २०६६ साल भदौ २३ गते रोज ३ शुभम् ।

■ यसै प्रकृतिको २०५९ सालको रिट नं. ३०२१, उत्प्रेषणयुक्त परमादेश प्रतिषेध, ध्रुवबहादुर देवकोटा वि. अख्तियार दुरुपयोग अनुसन्धान आयोग समेत भएको मुद्दामा यसैअनुरूप निर्णय भएको छ ।

इजलास नं.३

१.

मा.न्या.श्री तपबहादुर मगर र मा.न्या.श्री प्रेम शर्मा, २०६३ सालको रिट नं. ३०६६, परमादेश समेत, अधिवक्ता भोजराज ऐर समेत वि. भौतिक योजना तथा निर्माण मन्त्रालय समेत

रिट निवेदनमा खानेपानीलगायत शुद्ध वातावरण उपभोग गर्न पाउने मानिसको नैसर्गिक अधिकार भएको र पोखरावासीहरू शुद्ध खानेपानी उपभोग गर्ने अधिकारबाट वञ्चित हुनुका अतिरिक्त

अन्तर्राष्ट्रिय सन्धि संभौता र संविधानद्वारा प्रत्याभूत मानवअधिकार एवं मौलिक अधिकारसमेतको उल्लंघन भएकाले शुद्ध पानी वितरणसम्बन्धी व्यवस्था मिलाउने सम्बन्धमा निवेदकले उठाएका कुराहरू मानवीय स्वास्थ्यसँग प्रत्यक्ष र अभिन्नरूपमा गाँसिएको गम्भीर र संवेदनशील विषय हुँदा र यस सम्बन्धमा योजनाहरूसमेत कार्यान्वयन गर्ने अवस्थामा रहेको भन्ने लिखितजवाफ समेतबाट देखिँदा अब त्यस्ता योजनाहरू मानवीय स्वास्थ्यलाई ध्यानमा राखी क्रियाशील रही यथाशीघ्र सम्पन्न गर्नेतर्फ सक्रिय रहनु भनी विपक्षीहरूको नाउँमा निर्देशनात्मक आदेश जारी हुने ।

इजलास : अधिकृत: कृपासुर कार्की

कम्प्युटर : नम्रता वास्तोला

इति संवत् २०६६ साल जेठ २७ गते रोज ४ शुभम्

२.

मा.न्या.श्री तपबहादुर मगर र मा.न्या.श्री अवधेशकुमार यादव, २०६० सालको रिट नं. २७८४, उत्प्रेषण समेत, *शान्ति श्रेष्ठ वि. लुम्बिनी बैंक लिमिटेड कर्पोरेट अफीस काठमाडौं समेत*

आफ्नो कर्जा कानूनबमोजिम बैंकले असूलउपर गर्नसक्ने नै हुँदा सोही प्रक्रियाको रूपमा निवेदकलाई लेखिएको मिति २०६०।३।३० को पत्र बदर गर्नुपर्ने अवस्था देखिँदैन । कर्जा असूलीमा कस्तो प्रक्रिया अवलम्बन गर्ने भन्ने विषय सोसम्बन्धी कानूनद्वारा व्यवस्थित र निर्देशित हुने र सो कानूनद्वारा निर्धारित प्रक्रिया अपनाउनु बैंकसमेतको दायित्व हुने भएको र सोहीअनुरूपको प्रक्रियासमेत अवलम्बन भैरहेको देखिएबाट निवेदन मागबमोजिमको आदेश जारी गर्न नपर्ने ।

इजलास अधिकृत : कृपासुर कार्की

इति संवत् २०६६ साल जेठ २५ गते रोज २ शुभम् ।

३.

मा.न्या.श्री तपबहादुर मगर र मा.न्या.श्री अवधेशकुमार यादव, २०६२ सालको रिट नं. ३८४२, उत्प्रेषणयुक्त परमादेश, *नारायणमहर्जन*

डंगोल वि. राष्ट्रिय वाणिज्य बैंक केन्द्रीय कार्यालय समेत

निवेदकका छोराहरू पदम डंगोल, अमर डंगोल वादी र प्रतिवादी राष्ट्रिय वाणिज्य बैंक शाखा कार्यालय ठमेल समेत भएको २०६४।०६।५ सालको दे.नं. ६६३।३४६८ को यसै लिलाम सम्बन्धमा लिलाम बदर मुद्दा चली काठमाडौं जिल्ला अदालतबाट धितो लिलाम बदरको वादी दावी नपुग्ने भनी मिति २०६४।१०।३ मा फैसला भएको फैसलाको प्रतिलिपिबाट देखिन्छ । सोउपर पुनरावेदनको रोहबाट हेरिने विषय हुन्छ । यसरी निवेदकले लिलाम बदरतर्फ दावी लिएको विषय वाणिज्य बैंक ऐन, २०३१ को प्रक्रिया अवलम्बन गरी भएको र सोतर्फ निवेदककै छोराहरूको लिलाम बदरतर्फ मुद्दा परी जिल्ला अदालतबाट फैसला समेत भएको स्थिति देखिएबाट साधारण अधिकारक्षेत्र ग्रहण भै चलेको मुद्दाको सम्बन्धमा रिट क्षेत्रबाट बोल्न समेत उपयुक्त नहुने ।

इजलास अधिकृत : महेन्द्रप्रसाद पोखरेल

कम्प्युटर : सुदीप पंजानी

इति संवत् २०६६ साल पुस १४ गते रोज ३ शुभम् ।

४.

मा.न्या.श्री तपबहादुर मगर र मा.न्या.श्री गिरीशचन्द्र लाल, २०६५ सालको फौ.पु.नं. ०२५१, जबरजस्ती करणी, *नेपाल सरकार वि. सोनाम शेर्पा*

शुरु अदालतबाट जबरजस्ती करणीको उद्योग गरेको ठहराएउपर पुनरावेदन नगरी बसेको र यस अदालतबाट निजलाई भिकाउने आदेश भै निजको घरदैलामा म्याद तामेल हुँदा समेत निज उपस्थित हुन आएको देखिँदैन । यसरी प्रतिवादीको अधिकार प्राप्त अधिकारीसमक्षको साविती बयानलाई त्रि.वि. शिक्षण अस्पतालको रिपोर्ट, पीडितको मौकाको भनाई, जाहेरवालीको मौकाको जाहेरी र जाहेरीलाई समर्थन हुने गरी अदालतमा भएको बकपत्र समेतबाट समर्थन एवं पुष्टि भैरहेको समेतका आधार प्रमाणबाट जबरजस्ती करणीको कसूर अपराध गरेको देखिँदै रहेको अवस्थामा तत्काल वारदात मितिमै भएको

पीडितको उल्लिखित शारीरिक जाँच प्रतिवेदनलाई उल्लेख नै नगरी वारदात मितिभन्दा पछि भएको प्रसूतीगृहको प्रतिवेदनलाई आधार लिई जबरजस्ती करणीको उद्योग मात्र ठहर गरेको नमिली जबरजस्ती करणी महलको १ न. को कसूरमा ऐ महलको ३(१) न. बमोजिम प्रतिवादी सोनाम शर्पालाई १० वर्ष कैद हुने भए तापनि निज प्रतिवादीको उमेर १५ वर्षको देखिएकोले बालबालिकासम्बन्धी ऐन, २०४८ को दफा ११(३) बमोजिम सोको आधा ५ वर्ष कैद हुने ।

इजलाश अधिकृत : नारायणप्रसाद दाहाल
कम्प्यूटर : नम्रता वास्तोला

इति संवत् २०६६ साल मंसिर ८ गते रोज २ शुभम् ।

५.

मा.न्या.श्री तपबहादुर मगर र मा.न्या.श्री गिरीशचन्द्र लाल, २०६४ सालको दे.पु.नं. ०२०८, अंश दर्ता, गवनकुमारी राई वि. श्यामकुमारी राई

शुरु म्याद गुजारी प्रतिउत्तरपत्र नै नफिराई बसेकी, पुनरावेदन गर्ने हक अधिकार नै नभएकी र संलग्नसमेत नगराइएकी यी पुनरावेदिका प्रतिवादीलाई पुनरावेदन गर्न पाउने अधिकार नहुने भएकोले यी प्रतिवादीले कानूनले दर्ता गर्न नमिल्ने पुनरावेदनपत्र दर्ता गराएको देखिँदा प्रस्तुत पुनरावेदनपत्रमा केही विचार गरिरहनु परेन । प्रस्तुत पुनरावेदनपत्र खारेज हुने ।

इजलास अधिकृत : कृपासुर कार्की

कम्प्यूटर : मो. अख्तर अली

इति संवत् २०६६ साल असाज २१ गते रोज ४ शुभम्

इजलास नं. ४

१.

मा.न्या.श्री दामोदरप्रसाद शर्मा र मा.न्या.श्री रामकुमारप्रसाद शाह, २०६४ सालको रिट न. ०६४- WO- ०००३, उत्प्रेषण समेत, देवशरण पण्डित वि. सामान्य प्रशासन मन्त्रालय समेत

यातायात व्यवस्था विभागको मिति २०६३/११/९ को परिपत्रको आधारमा निवेदकलाई

सरुवा भएको कार्यालय यातायात व्यवस्था कार्यालय जनकपुरले हाजिर नगराएउपर यस अदालतको मिति २०६४/४/१० को अन्तरिम आदेशबमोजिम निज सरुवा भएको कार्यालयमा हाजिर भै कामकाज गरी निजामती सेवा नियमावलीबमोजिम सरुवा भएको निवेदकको जिकीरबमोजिम एउटा कार्यालयमा कामकाज गर्न पाउने अवधिसमेत भुक्तान गरिसकेको देखिँदा कानूनबमोजिम सरुवा गरिएमा बाहेक निजलाई पूर्ववत् कामकाजमा लगाउनु भनी यातायात व्यवस्था कार्यालय जनकपुर लगायत विपक्षीहरूको नाममा परमादेशको आदेशसम्म जारी हुने ।

इजलास अधिकृत : हेमबहादुर सेन

कम्प्यूटर : अमिररत्न महर्जन

इति संवत् २०६६ साल मंसिर ९ गते रोज ३ शुभम् ।

२.

मा.न्या.श्री दामोदरप्रसाद शर्मा र मा.न्या.श्री ताहिर अली अन्सारी, २०६४ सालको दु.फौ.पु.नं. ०६६७, कीर्ते जालसाजी, रामदास कुर्मी वि. भागिरथी अहिर यादव समेत

अंशियार अंशियारबीच अंशको कुरामा परेको फिराद र प्रतिउत्तरका कुराले तेस्रो व्यक्तिको हक हितमा कुनै असर नपरेको स्थितिमा प्रस्तुत कीर्ते जालसाजी भनी अर्थ गर्न नमिल्ने ।

इजलास अधिकृत : श्रीप्रसाद संजेल

कम्प्यूटर : अमिररत्न महर्जन

इति संवत् २०६६ साल मंसिर २२ गते रोज २ शुभम् ।

३.

मा.न्या.श्री दामोदरप्रसाद शर्मा र मा.न्या.श्री ताहिर अली अन्सारी, २०६३ सालको WO ०९६५, उत्प्रेषण परमादेश, चिरञ्जीवी कुवेर वि. प्रधानमन्त्री तथा मन्त्रिपरिषद्को कार्यालय समेत

सशस्त्र प्रहरी महानिरीक्षकले सशस्त्र प्रहरी नियमावली, २०६० को नियम ८४(क) को खण्ड (४) बमोजिम दुई वर्ष पदोन्नति रोक्का गर्ने भनी निजउपर विभागीय कारवाही गरेको कार्यमा कुनै उचित र पर्याप्त आधार तथा कारण उल्लेख गर्न नसकी गृह मन्त्रालयको पत्रको हवाला दिई

निवेदकलाई सुनवाईको मौकासमेत नदिई प्राकृतिक न्याय सिद्धान्तसमेतको विपरीत निवेदकको दुई वर्ष बहुवा रोक्का गरिएको सशस्त्र प्रहरी महानिरीक्षकको मिति २०६३।१।२९ को पत्रसमेत कानूनसम्मत नदेखिँदा उत्प्रेषणको आदेशद्वारा बदर हुने ।

इजलास अधिकृत : श्रीप्रसाद संजेल

कम्प्युटर : अमिररत्न महर्जन

इति संवत् २०६६ साल असार २८ गते रोज १ शुभम्

४.

मा.न्या.श्री दामोदरप्रसाद शर्मा र मा.न्या.श्री मोहनप्रकाश सिटौला, २०६१ सालको दे.पु.नं. ८३५२, हक कायम गरिपाऊँ, गुलैचा कोहार वि. सीतला कोहार समेत

मिन्ही घडेरी घरबासको जग्गा वण्डा लाग्ने भै पहिले नै फैंसला भैंसकेको अवस्थामा सोही ठहर खण्डमा लेखेको कुरा अन्यथा नहुँदा वादी दावी पुग्न सक्ने ।

इजलास अधिकृत : हेमबहादुर सेन

कम्प्युटर : भवानी ढुंगाना

इति संवत् २०६६ साल भदौ ३ गते रोज ४ शुभम्

५.

मा.न्या.श्री दामोदरप्रसाद शर्मा र मा.न्या.श्री अवधेशकुमार यादव, २०६२ सालको दे.पु.नं. ९०४२, खिचोला चलन, कृष्णबहादुर कुँवर समेत वि. पंकज खनाल

कि.नं. ९९ को त्रिभुज आकार जस्तो देखिने क्षेत्रफल ०-३-२-० जग्गा प्रतिवादीले खिचोला गरेको भन्ने दावी लिएको देखिएको र उक्त कि.नं. ९९ को नक्सा ट्रेस र अदालतबाट भएको नक्साको स्वरूप र आकृतिमा पनि उपरोक्तबमोजिम फरक नभएको अवस्थामा उक्त विवादित न.नं. १ को अर्थात् कि.नं. ९९ ले समेटेको सबै जग्गा वादीको हुने भएको र त्यसमा केही मेरो भन्ने प्रतिवादीको भनाई नभई विवादित जग्गा सबै मेरो भन्ने प्रतिवादीहरूको दर्तापूर्जाको जग्गाभन्दा बढी नै जग्गा विवादित जग्गाभन्दा

बाहेक भोग नक्साबाट देखिएकोले दावीबमोजिम प्रतिवादीले खिचोला गरेको ठहर्ने ।

इजलास अधिकृत : हेमबहादुर सेन

कम्प्युटर : भवानी ढुंगाना

इति संवत् २०६ साल कात्तिक १० गते रोज ३ शुभम् ।

६.

मा.न्या.श्री दामोदरप्रसाद शर्मा र मा.न्या.श्री अवधेशकुमार यादव, २०६५ सालको दे.पु.नं. ०६५-CR-०६२६, लुटपीट, पंकज खनाल वि. कृष्णबहादुर कुँवर समेत

बुझिएका वादीकै साक्षीहरूले समेत के कसरी लुटपीट गरी लगेको हो भन्ने कुरा स्पष्ट रूपमा खुलाउन लेखाउन नसकी वारदात प्रमाणित हुन नसकेको अवस्थामा प्रतिवादीहरूले लुटपीट गरी लगे होलान् भन्ने यथेष्ट र सम्बद्ध प्रमाणको अभावमा विश्वासप्रद देखिन नआउने ।

इजलास अधिकृत : हेमबहादुर सेन

कम्प्युटर : भवानी ढुंगाना

इति संवत् २०६ साल कात्तिक १० गते रोज ३ शुभम् ।

७.

मा.न्या.श्री दामोदरप्रसाद शर्मा र मा.न्या.श्री सुशीला कार्की, २०५६ सालको स.फौ.पु.नं. ३३१४, कर्तव्य ज्यान, शिवमुरत केवट वि. नेपाल सरकार

प्रतिवादी शिवमुरत केवटउपरको अभियोग दावी नै पुष्टि र प्रमाणित नभएको अवस्थामा पुनरावेदन अदालतले अभियोग दावीभन्दा पृथक गई साधारण लाठा, ढुंगा, लात, मुक्का इत्यादि हान्दा सोही चोट पीरले ऐनका म्यादभित्र ज्यान मरेमा दश वर्ष कैद हुने कानूनी व्यवस्था आकर्षित गरी सजाय हुने ठहर गरेको देखिन्छ । अभियोग दावी नै नपुगेका, वारदात र घटनास्थलमा उपस्थित भएको भन्ने तथ्ययुक्त ठोस सबूद प्रमाण नभएको सह-अभियुक्तहरूले समेत निजलाई पोल गर्न नसकेको, चशमदिद भनिएको र मौकामा कागज गर्ने सबै व्यक्तिहरूले निज प्रतिवादीको वारदातस्थलमा उपस्थित र संलग्नता रहे भएको भनी भन्न र लेखाउन नसकेकोबाट जाहेरीमा नाम लेखिदिँदा र केही व्यक्तिले वारदातस्थलमा देखेको

भनेकै आधारमा निज उपरको दावी शंकारहित तवरले पुष्टि र प्रमाणित हुने तथ्ययुक्त ठोस सबूद प्रमाणको अभावमा शुरु जिल्ला अदालतले १ नं. को कसूर अपराधमा १३(४) नं. बमोजिम सजाय गरेकोलाई पुनरावेदन अदालतले अभियोग दावीभन्दा बाहिर गर्दै १४ नं. आकर्षित गरी १० वर्ष सजाय गरेको फैसलालाई कानूनसम्मत मान्न नसकिने हुँदा निज पुनरावेदकको हकमा सम्म उल्टी भई निजले सफाइ पाउने ।

इजलास अधिकृत : श्रीप्रसाद संजेल

कम्प्युटर : अमिररत्न महर्जन

इति संवत् २०६६ साल असार ३० गते रोज ३ शुभम् ।

८.

मा.न्या.श्री दामोदरप्रसाद शर्मा र मा.न्या.श्री सुशीला कार्की, २०६० सालको फौ.पु.नं. ३३६०, ३६०५, ४५९, कर्तव्य ज्यान, नेपाल सरकार वि. शेष महमद जहिर, शेष महमद जहिर वि. नेपाल सरकार, नेपाल सरकार वि. शेष तवकिर अहमद, २०६३ सालको नि.नं. ५३१७, सगिर अहमद वि. नेपाल सरकार

प्रतिवादी शेख तवकिर अहमदले प्रहरीसमक्ष वयान गर्दा यी प्रतिवादी शेष महमद जहिरले सफिया खातुनलाई मार्नको लागि बन्दुक र गोली ल्याइदिएको र मैले सोही बन्दुकको गोली प्रहार गरी सफिया खातुनको ज्यान मारेको हो भनी वयान गरेको पाइन्छ । प्रतिवादी शेख तवकिर अहमदको उक्त वयान व्यहोरा मिसिल संलग्न अन्य कुनै स्वतन्त्र प्रमाणबाट समर्थित भएको पाइँदैन । सहअभियुक्तको पोल अन्य स्वतन्त्र प्रमाणबाट समर्थित नभएको अवस्थामा सो पोलमात्रको आधारमा कसैलाई कसूरदार ठहर गर्न मिल्ने हुँदैन । तसर्थ वारदातका बखत अन्यत्र थिएँ भन्ने प्रतिवादी शेष महमद जहिरको जिकीर निजका साक्षीको बकपत्रबाट समर्थित भएको देखिएको र निजविरुद्धको सहअभियुक्तको पोलसमेत अन्य स्वतन्त्र प्रमाणबाट समर्थित भएको नदेखिएको हुँदा शुरु फैसला उल्टी गरी निज प्रतिवादीलाई ज्यानसम्बन्धी महलको १७(३) नं. अनुसार तीन

वर्ष कैद ठहर्‍याएको पुनरावेदन अदालत हेतौडाको फैसला मिलेको नदेखिदा सो हदसम्म केही उल्टी भै निज प्रतिवादी शेष महमद जहिरले सफाइ पाउने ।

इजलास अधिकृत : मातृकाप्रसाद आचार्य

कम्प्युटर : अमिररत्न महर्जन

इति संवत् २०६६ साल पुस २० गते रोज २ शुभम् ।

■ यसै लगाउको २०६५ सालको फौ.पु.नं. ०६५-CR- ०३०८, हातहतियार खरखजाना, शेष महमद जहिर वि. नेपाल सरकार भएको मुद्दामा यसैअनुरूप निर्णय भएको छ ।

९.

मा.न्या.श्री दामोदरप्रसाद शर्मा र मा.न्या.श्री सुशीला कार्की, २०६३ सालको दे.पु.नं. ०२९९, मोही नामसारी, बालकुमारी शाही वि. मखमली खरेल

मोही हक कानूनद्वारा सिर्जित हक भएकोले कानूनी प्रक्रिया पूरा नगरी त्यस्तो मोही हकको लगत कट्टा हुन नसक्ने र मोही हक नै प्राप्त नभएको व्यक्तिले मोहियानी हक छोडेकोबाट हकवालाको हक कुण्ठित हुन समेत नसक्ने हुँदा प्रत्यर्था वादीका पति कृष्णबहादुर खरेल विवादित जग्गाको मोही यथावत् कायम रहेको अवस्थामा निजको मृत्युपछि भूमि सम्बन्धी ऐन, २०२१ को दफा २६(१) अनुसार मोही हक नामसारी गराई लिन सक्ने ।

इजलास अधिकृत : श्रीप्रसाद संजेल

कम्प्युटर : अमिररत्न महर्जन

इति संवत् २०६६ साल कात्तिक गते रोज ६ शुभम् ।

इजलास नं. ५

१.

मा.न्या.श्री रामकुमार प्रसाद शाह र मा.न्या.श्री राजेन्द्रप्रसाद कोइराला, ०६३-WO-२१७, उत्प्रेषण मिश्रित परमादेश, शंकरप्रसाद खरेल वि. पुनरावेदन अदालत पाटन समेत

सम्झौताका पक्षहरू बीच विवाद उत्पन्न भएकोमा सोही सम्झौतामा उल्लेख भएबमोजिम मध्यस्थद्वारा विवाद समाधान गर्नुपर्नेमा सम्झौताको एकपक्षीय निवेदकले मध्यस्थ नियुक्ति नगरेको वा गर्न अनिच्छुक देाएको अवस्थामा पुनरावेदन अदालत पाटनले मध्यस्थता ऐन, २०५५ बमोजिम आफ्नो क्षेत्राधिकार प्रयोग गरी मध्यस्थ नियुक्त गरेको देखिँदा कानूनबमोजिम गरे भएको कार्यबाट निवेदकको संविधानप्रदत्त हकमा आघात परेको सम्झन नमिल्ने।

इजलास अधिकृत : पुष्पराज थपलिया

कम्प्युटर : सरस्वती पौडेल

इति संवत् २०६६ साल मंसिर २५ गते रोज ५ शुभम् ।

२.

मा.न्या.श्री रामकुमार प्रसाद शाह र मा.न्या.श्री प्रेम शर्मा, २०६३ सालको दे.पु.नं. ८९४५, अंश चलन, सन्तुमाया शाक्य समेत वि. बुद्धिलाल शाक्य समेत

पुनरावेदकले आफ्नो प्रतिउत्तर जिकीरमा एक पटक स्वीकार गरिसकेको तथ्यलाई पुनः इन्कार गरी त्यसको प्रतिकूल पुनरावेदनमा जिकीर लिएको देाँदा सो आधारमा यी पुनरावेदकलाई प्रत्यक्ष रुपमा कुनै असर परेको समेत नदेखिएको अवस्थामा उक्त फैसलालाई कानूनप्रतिकूल भएको भनी मान्न नमिल्ने।

इजलास अधिकृत : सुदीप दंगाल

कम्प्युटर : सरस्वती पौडेल

इति संवत् २०६५ साल कात्तिक ११ गते रोज ४ शुभम् ।

३.

मा.न्या.श्री रामकुमारप्रसाद शाह र मा.न्या.श्री प्रेम शर्मा, २०६३ सालको दे.पु.नं. ९०४९, अंश चलन, विन्देश्वरी साहु वि.भवरीदेवी साहु, २०६४ सालको ०६४-CI-०९२८, भवरीदेवी साहु वि. महावीर साहु समेत

मतदाता नामावलीमा अलग-अलग ठाउँमा बसोवास रहेको वा छुट्टाछुट्टै नाम उल्लेख हुँदा सो नामावली अंशीयारहरू बीच अंशबण्डा भइसकेको भनी अकाट्य प्रमाणको स्वरुप ग्रहण

गर्न सकिने हुँदैन। पारित भएको मानो छुट्टिएको लिखत वा अन्य यस्तै प्रकारको विवाद हुन नसक्ने लिखत वा कानूनी कारवाहीद्वारा छुट्टिएको देखिने निर्विवाद तथ्यको अभावमा ७ नं. फारम भरेको वा मतदाता नामावलीमा पृथक-पृथक घर बसोवास भएको जस्ता कुरालाई मानो छुट्टिएको मिति निर्धारण गर्ने अकाट्य प्रमाणको रुपमा ग्रहण गर्न नसकिने।

इजलास अधिकृत : सुदीप दंगाल

कम्प्युटर : रानु पौडेल

इति संवत् २०६६ साल कात्तिक ११ गते रोज ४ शुभम् ।

५.

मा.न्या.श्री रामकुमार प्रसाद शाह र मा.न्या.श्री रणबहादुर वम, २०६४ सालको फौ.पु.नं. ०६४-CR-०६९०, जबरजस्ती करणी, नरध्वज गुरुङ वि. नेपाल सरकार

पीडित "ग" कुमारी बक्कलाटी भएको तथ्यमा विवाद नभएको र प्रतिवादीले पीडितलाई जबरजस्ती करणी गरेको वारदात समेत स्थापित भै सकेको अवस्थामा जबरजस्ती करणीले ३क नं. बमोजिम प्रतिवादीलाई थप कैद वर्ष ५(पाँच) सजाय गरेको पुनरावेदन अदालतको फैसला कानूनसंगत भै मनासिव नै देखिने।

इजलास अधिकृत : सुदीप दंगाल

कम्प्युटर : रानु पौडेल

इति संवत् २०६६ साल असोज २८ गते रोज ४ शुभम् ।

६.

मा.न्या.श्री रामकुमार प्रसाद शाह र मा.न्या.श्री रणबहादुर वम, २०६४ सालको स.फौ.पु.नं. ०६४-CR-०५८२, कर्तव्य ज्यान, मेघबहादुर कुमाल वि. नेपाल सरकार

मृतकको मृत्यु यिनै प्रतिवादीहरूको कुटपीटको कारणबाट भएको भनी किटानी जाहेरी परेको र घटनाका चशमदिद् रबुल अंसारी समेतले धारा मर्मतको पैसा उठाउने विषयमा नै भगडा भै यी प्रतिवादीको कुटपीटबाट मृतक नमाजीको मृत्यु भएको भनी अदालतमा बकपत्र गदा लेखाइदिएको अवस्थामा प्रत्यक्षदर्शीको कथन प्रत्यक्ष प्रमाण हुँदा प्रमाण ऐन, २०३१ को दफा १० (१)(क) बमोजिम

उक्त कथनलाई प्रमाणको रूपमा ग्रहण गर्न मिल्ने नै देखिने हुँदा प्रतिवादीउपरको कसूर प्रमाणित भैरहेको अस्थामा प्रतिवादी गैडाकोटे भन्ने मेघबहादुर कुमाललाई ज्यानसम्बन्धीको १ नं. विपरीतको कार्य गरेकोले ऐ. १३(३) नं. बमोजिम सर्वस्वसहित जन्मकैद गर्ने गरेको शुरु फैसला सदर गर्ने गरेको पुनरावेदन अदालतको फैसला मनासिब देखिँदा सदर हुने ।

इजलास अधिकृत : सुदीप दंगाल

कम्प्युटर : रानु पौडेल

इति संवत् २०६६ साल असोज २८ गते रोज ४ शुभम् ।

७.

मा.न्या.श्री रामकुमार प्रसाद शाह र मा.न्या.श्री रणबहादुर बम, २०६४ सालको स.फौ.पु.नं. ०६४-CR-०६०१, जीउ मास्ने बेच्ने, टहल सिंह सरदार वि. नेपाल सरकार

ऐनले नै कुनै पनि किसिमले मानिस बेचबिखन गर्न हुँदैन भनी प्रष्ट रूपमा उल्लेख गरेको र ऐनको सो प्रावधान उल्लंघन गरी कार्य गरेमा त्यस्तो व्यक्तिले फौजदारी दायित्व बहन गर्नुपर्ने हुन्छ । यसरी पीडित "ख" कुमारीलाई बलेन्द्र सिंहसँग विवाह गराई दिएबापत यी प्रतिवादीले आर्थिक मुनाफा समेत गरेको अवस्थामा निजले पीडितलाई विक्री गरेको होइन भनी सजायबाट उन्मुक्ति पाउन सक्ने अवस्था समेत नदेखिने ।

इजलास अधिकृत : सुदीप दंगाल

कम्प्युटर : रानु पौडेल

इति संवत् २०६६ साल असोज २८ गते रोज ४ शुभम् ।

८.

मा.न्या.श्री रामकुमार प्रसाद शाह र मा.न्या.श्री सुशीला कार्की, ०६५-CI-०४२४, अंश दपोट, सत्यनारायण मण्डल समेत वि. नकछेदी सरवरिया

प्रतिवादी सत्यनारायण मण्डलले आफूले राजीनामा लिएको कि.नं. ७८, ८९ र ९० समेतका ३ कित्ता जग्गाहरू अंश मुद्दाको तायदाती फाँटवारीमा उल्लेख नगरी दवाए छपाएको भनी वादीले दावी लिएकोमा उक्त जग्गा आफ्नो नाममा दर्ता नै नभएको कारण देखाई तायदातीमा उल्लेख

नगरेको हो । दवाए छपाएको छैन भनी निजले जिकीर लिएको पाइन्छ । उक्त जग्गाहरू २०३६ सालको सर्भे नापीको कित्ता नं. समेत खुलाई दर्तावालाबाट यी पुनरावेदक सत्यनारायणले राजीनामा पारित गरी दिएको देखिएकोले आफ्नो स्वामित्वमा ती जग्गाहरू आइसकेको अवस्थामा जग्गाधनी प्रमाण पूर्जा नलिएको कारणले मात्र सो जग्गाहरू सगोलको होइन भनी मान्न नमिल्ने ।

इजलास अधिकृत : सुदीप दंगाल

कम्प्युटर : सरस्वती पौडेल

इति संवत् २०६६ साल भदौ २४ गते रोज ४ शुभम् ।

९.

मा.न्या.श्री रामकुमार प्रसाद शाह र मा.न्या.श्री सुशीला कार्की, २०६४ सालको रिट नि.नं. ६३८, उत्प्रेषणयुक्त परमादेश, रामकृष्ण के.सी. वि. जिल्ला विकास समिति सर्लाही समेत

कानूनबमोजिम बाहेक कर लिन नपाउने भनी नेपालको अन्तरिम संविधान, २०६३ को धारा ८९ ले व्यवस्था गरेको परिप्रेक्ष्यमा कानूनमा नतोकिएको घनमीटरको आधारमा कर लिन पाउने भन्ने तर्क गरी प्रतिट्रिपको कानूनले तोकेको रु. १,०००/- भन्दा बढी सिफारिश दस्तूर लिएको उक्त कार्य कानूनविपरीत हुँदा विपक्षीहरूको सो कार्य र तत्सम्बन्धी मिति २०६४।३।१७ को निर्णय समेत उत्प्रेषणको आदेशद्वारा बदर गरिदिएको छ । साथै कानूनले तोकेभन्दा बढी असूल गरेको कर दस्तूर निवेदकहरूलाई फिर्ता दिनु भन्ने समेत परमादेश जारी हुने ।

इजलास अधिकृत : श्रीप्रसाद उप्रेती

कम्प्युटर : रानु पौडेल

इति संवत् २०६६ साल मंसिर १६ गते रोज ३ शुभम् ।

१०.

मा.न्या.श्री रामकुमार प्रसाद शाह र मा.न्या.श्री सुशीला कार्की, २०६५ - CI - ०२४७, अंश चलन, नथरीदेवी चौधरी समेत वि. देवीलाल चौधरी

प्रमाण ऐन, २०३१ को दफा ६(क) बमोजिम अन्यथा प्रमाणित नभएसम्म एकाघर सगोलका जुनसुकै अंशियारको नाममा दर्ता रहेको

सम्पत्ति सगोलको सम्पत्ति हो भनी अदालतले अनुमान गर्ने भन्ने हुँदा अदालतको सो अनुमानलाई खण्डित गर्नुपर्ने दायित्व समेत यी पुनरावेदकहरूमा नै रहेको अवस्थामा निजहरूबाट ठोस प्रमाण पेश गरी सो अनुमान खण्डित हुन सकेको पाइदैन । यसरी सबूद प्रमाणबेगर फिराद पत्र र पुनरावेदन पत्रमा कुनै सम्पत्तिलाई पेवा वा सोको आयस्ताबाट बढे बढाएको निजी आर्जनको सम्पत्ति भनी उल्लेख गरेको आधारमा मात्रै सगोलको अंशियारको नाममा रहेको यस्तो सम्पत्तिलाई अंशियारबीच बण्डा नलाग्ने भनी मान्न नमिल्ने ।

इजलास अधिकृत : सुदीप दंगाल

कम्प्युटर : रानु पौडेल

इति संवत् २०६६ साल भदौ २४ गते रोज ४ शुभम् ।

११.

मा.न्या.श्री रामकुमार प्रसाद शाह र मा.न्या.श्री सुशीला कार्की, २०६२ सालको रिट नं. २८७६, उत्प्रेषण, मदनराज मिश्र वि. प्रधानमन्त्री तथा मन्त्रिपरिषद्को कार्यालय समेत

निवेदकले अधि बहुवा भई नियुक्ति समेत पाएबमोजिमको कार्यरत रहेको देखिएकोले सा बहुवापछि भएको अदालतको आदेशले बहुवासम्म बदर भए पनि निजको नेपाल प्रशासन सेवा, लेखा समूह, रा.प.द्वितीय श्रेणी उपसचिव स्तरको पदमा भएको नियुक्ति बदर नभएको र सोही पदमा हालसम्म पनि कार्यरत रहेको देखिँदा निजको सो नियुक्ति हाल बदर नगर्नु भनी विपक्षीहरूका नाममा प्रतिषेधको आदेश जारी हुने ठहर्छ । निजामती सेवा नियमावली २०४९ को नियम ८९ (ख)(१) बमोजिम पछिबाट रिक्त भएको पदमा मिलान गर्ने गरी निजलाई हाल सोही पदमा यथावत् कायम राख्नु भनी विपक्षीहरूको नाममा परमादेश समेत जारी हुने ।

इजलास अधिकृत : श्रीप्रकाश उप्रेती

इति संवत् २०६६ साल मंसिर २ गते रोज ३ शुभम् ।

१२.

मा.न्या.श्री रामकुमार प्रसाद शाह र मा.न्या.श्री सुशीला कार्की, २०६४ सालको रिट नि.नं. २९७, परमादेश, भेषबहादुर खड्का वि. स्थानीय विकास मन्त्रालय समेत

निवेदकले करार ऐनबमोजिमको उपचार खोजेको नभै यस अदालतमा असाधारण उपचारको लागि प्रस्तुत रिट निवेदन दिएको हुँदा वैकल्पिक उपचारको विद्यमानताको कारणले नेपालको अन्तरिम संविधान, २०६३ को धारा १०७(२) बमोजिम निवेदकको मागबमोजिमको आदेश जारी हुनसक्ने अवस्था देखिन आएन । प्रस्तुत रिट निवेदन खारेज हुने ।

इजलास अधिकृत : श्रीप्रकाश उप्रेती

कम्प्युटर : रानु पौडेल

इति संवत् २०६६ साल मंसिर १६ गते रोज ३ शुभम् ।

१३.

मा.न्या.श्री रामकुमारप्रसाद शाह र मा.न्या.श्री सुशीला कार्की, २०६४ सालको दे.पु.नं. ९२६, मोही लगत कट्टा, भदिया थारू वि. खेदुलाल माफी थारू

मोहीले जग्गा जोत्न छोडेमा वा भागी वेपत्ता भएमा भूमिसम्बन्धी ऐन, २०२१ को दफा २६(१)(ग) को कानूनी व्यवस्थाबमोजिम २५ दिनभित्र जग्गावालाले तोकिएको अधिकारीसमक्ष सो कुराको लिखित सूचना दिनुपर्ने हुन्छ, तर प्रस्तुत मुद्दामा सो म्याद भित्र यी जग्गाधनीले सो कुराको जानकारी दिएको थियो भन्ने जिकीर लिन नसकी हाल मिति २०६०।१।२६ मा मात्र प्रस्तुत उजूरी दिएको पाइन्छ । सोको विपरीत मोहीको मृत्युपश्चात् निजका छोरा यी विपक्षीले आफूले सालसालै खेती लगाएको भन्ने निजले आफ्नो प्रतिउत्तर जिकीरमा उल्लेख गरेको देखिन्छ । यस्तो अवस्थामा मोहीले जग्गा जोत्न छोडेमा वा भागी वेपत्ता भएकोमा जहिलेसुकै उजूर दिन पाउने व्यवस्था भूमिसम्बन्धी ऐन, २०२१ को दफा २६(१) (ग) ले गरेको देखिँदैन । ऐनले तोकेको हदम्याद भित्र उजूरी दिनुपर्ने कुरामा उजूरी दिने हदम्याद प्रारम्भ हुने अवस्थाको समेत स्पष्ट र किटानी

रुपमा उल्लेख नगरी दिएको प्रस्तुत उजुरीको आधारमा सो कानूनी व्यवस्थाबमोजिम मोही लगत कट्टा हुन नसक्ने ।

इजलास अधिकृत : श्रीप्रकाश उप्रेती

कम्प्युटर : सरस्वती पौडेल

इति संवत् २०६६ साल मंसिर ५ गते रोज ६ शुभम् ।

१४.

मा.न्या.श्री रामकुमारप्रसाद शाह र मा.न्या.श्री सुशीला कार्की, २०६४ सालको दे.पु.नं. ९२९, मोही लगत कट्टा, फूलचन धामी थारू वि. खेदुलाल माझी थारू

मोहीले जग्गा जोत्न छोडेमा वा भागी बेपत्ता भएमा जहिलेसुकै उजूर दिन पाउने व्यवस्था भूमिसम्बन्धी ऐन, २०२१ को दफा २६(१)(ग) ले गरेको देखिँदैन । ऐनले तोकेको हदम्यादभित्र उजुरी दिनुपर्ने कुरामा उजुरी दिने हदम्याद प्रारम्भ हुने अवस्थाको समेत स्पष्ट र किटानी रुपमा उल्लेख गरी उजुरी दिनुपर्नेमा सो उल्लेख नगरी दिएको प्रस्तुत उजुरीको आधारमा सो कानूनी व्यवस्थाबमोजिम मोही लगत कट्टा हुनसक्ने अवस्था नहुने ।

इजलास अधिकृत : श्रीप्रकाश उप्रेती

कम्प्युटर : सरस्वती पौडेल

इति संवत् २०६६ साल मंसिर ५ गते रोज ६ शुभम् ।

■ यसै प्रकृतिको २०६४ सालको दे.पु.नं. ४१८, मोही लगत कट्टा, कलावती थरुनी वि. टिहकी थरुनी भएको मुद्दामा यसैअनुरूप निर्णय भएको छ ।

१५.

मा.न्या.श्री रामकुमारप्रसाद शाह र मा.न्या.श्री सुशीला कार्की, २०६४ सालको फौ.पु.नं. ८०९, शैक्षिक योग्यताको भूट्टा प्रमाणपत्र पेश गरी भ्रष्टाचार गरेको, नेपाल सरकार वि. राजेन्द्र थापा

विवादित प्रमाणहरूको सत्यताको अन्तिम निर्णय गर्न सक्ने आधिकारिक निकाय सो प्रमाणपत्र जारी गर्ने सम्बन्धित विश्वविद्यालयले नै नक्कली भनिएका प्रमाणपत्रलाई नक्कली नभएको र आफैले जारी गरेको सही प्रमाणपत्र हुन भनी लिखित

रुपमा जवाफ समेत पठाई सकेको अवस्थासम्म विवादित भनिएका प्रमाणपत्रलाई नक्कली प्रमाणपत्र भन्न नमिल्ने ।

इजलास अधिकृत : श्रीप्रकाश उप्रेती

कम्प्युटर : रानु पौडेल

इति संवत् २०६६ साल असोज ३० गते रोज ५ शुभम्

१६.

मा.न्या.श्री रामकुमार प्रसाद शाह र मा.न्या.श्री प्रकाश वस्ती, २०६१ सालको दे.पु.नं. ९१४९, अंश नामसारी, ज्वार कुजडा वि. अबुसहिम कुजडा समेत

वादीले यस अघि मिति २०१८।२।१५ गतेमा गोल्हाईसमेत उपर दिएको अंश मुद्दामा मिलापत्र गरी कच्ची पाँच विगाहा जग्गा जीवनयापनको लागि बेचविखन गर्न नपाउने गरी पाएको भन्ने प्रतिउत्तर समेतबाट देखिए पनि सो जग्गा निजले आफ्नो भागको अंशबापत पाएको भन्ने नभई जीवनयापनसम्मको लागि पाएको भन्ने देखिन्छ । अंश भन्ने कुरा अंशियारको अधिकारको कुरा भएको र अंश पाएको सम्पत्तिमा निजको पूर्ण स्वामित्व स्थापित हुने भई कानूनबमोजिम निजले भोग गर्न पाउने र बेचविखनलगायत आफूखुश गर्न पाउने अधिकार निहीत रहेको हुन्छ । तर मिति २०१८।२।१५ गतेमा भएको मिलापत्र अनुसार निजले कानूनबमोजिम पाउने अंश भाग पाएको नभई भोग गर्नसम्मको लागि पाएको सम्पत्तिलाई अंशबापत निजले पाएको भन्न नमिल्ने ।

इजलास अधिकृत : नारायणप्रसाद पराजुली

कम्प्युटर : अमिररत्न महर्जन

इति संवत् २०६६ साल पुस २९ गते रोज ४ शुभम् ।

१७.

मा.न्या.श्री रामकुमार प्रसाद शाह र मा.न्या.श्री प्रकाश वस्ती, २०६२ सालको दे.पु.नं. ८४८२, घरजग्गा टण्टा खिचोला चलन, प्रमोदकुमार चौधरी समेत वि. अग्रवाल आरोही

वादीको कि.नं. १६५ को जग्गाको उत्तर पूर्वतर्फको माझबाट पश्चिमबाट खुम्चिएको भाग १२ फीट देखिएकोमा भई आएको नक्सामा सो

ठाउँमा वादीको जग्गाको उत्तरतर्फको चौडाई ९ फीट ९ इञ्चमात्र देखिन आउँछ । सो जग्गाको पश्चिमतर्फको उत्तर दक्षिण चौडाई ट्रायल चेकबाट ८ फीट देखिन आएकोमा भई आएको नक्सामा ६ फीट मात्र देखिएबाट वादीको जग्गा घट्टन गएको देखिनाले वादीको घरको उत्तरतर्फको ३ फीट जग्गामा प्रतिवादीले खिचोला गरेको देखिँदा शुरु बारा जिल्ला अदालतको फैसला उल्टी गरी विवादित जग्गामध्ये पश्चिमतर्फबाट उत्तरतर्फ ट्रायल चेकअनुसार नपुग हुन आउने २ फीट र पूर्वतर्फ उत्तर दक्षिण २ फीट ३ इञ्च सरदर जग्गामा सम्म प्रतिवादीले बनाएको प्रारूप भत्काई सो जग्गामा वादीले चलन चलाई पाउने ।

इजलास अधिकृत : श्रीप्रकाश उप्रेती
कम्प्युटर : रानु पौडेल
इति संवत् २०६६ साल पुस ७ गते रोज ३ शुभम् ।

१८.

मा.न्या.श्री रामकुमार प्रसाद शाह र मा.न्या.श्री भरतराज उप्रेती, २०६३ सालको दे.पु.नं. ५६०, अंश नामसारी, सत्यदेव पाण्डे वि. त्रियुगीनारायण पाण्डे समेत

अड्डाबाट पारित लिखतसम्बन्धी जिकीर कुनै पक्षले लिएमा सो पारित लिखत देखाउनु सुनाउनु पर्ने भन्न मिल्ने हुँदैन । अड्डाबाट पारित लिखतबाट निजलाई असर परेको भए सो सम्बन्धमा सो अड्डाबाट नक्कल लिई सोलाई बदर गराउन नालेस दिन पाउने अधिकार र अवसर मुद्दाका पक्षलाई रहेको नै हुनाले अ.वं. ७८ नं. को प्रक्रियाबाट मात्र सद्दे कीर्ते वा जालसाजी भनी दावी लिन पर्खी रहन पर्ने अवस्था नहुँदा पारित भएको सो राजीनामा सो प्रयोजनका लागि देखाउन सुनाउन नपर्ने हुँदा आफूलाई अ.वं. ७८ नं. अनुसार देखाउनु सुनाउनु पर्ने भन्ने वादीको जिकीर कानूनसंगत एवं युक्तिसंगत मान्न नमिल्ने ।

इजलास अधिकृत : श्रीप्रकाश उप्रेती
कम्प्युटर : रानु पौडेल
इति संवत् २०६६ साल कात्तिक १८ गते रोज ४ शुभम् ।

१९.

मा.न्या.श्री रामकुमारप्रसाद शाह र मा.न्या.श्री भरतराज उप्रेती, २०६४ सालको फौ.पु.नं. ५१७, अदालतको अवहेलना, अशोकानन्द मिश्र वि. जिल्ला प्रशासन कार्यालय सप्तरी राजविराज प्रमुख जिल्ला अधिकारी

अदालतको अवहेलनाको विषय मूलतः विपक्षीको कार्य र सोमा निहीत निजको मनसाय तत्वलाई मूल्याङ्कन गरी निरुपण गर्नु पर्ने विषय भएकोले अदालतको आदेश पालना गर्न ढिलाईसम्म भई हाल निर्णय भइसकेको भन्ने प्रतिवाद रहेको सन्दर्भमा तथा प्रस्तुत मुद्दा पुनरावेदन अदालतबाट सूचना म्याद जारी हुनुपूर्व नै उल्लिखित अदालतको आदेश परिपालना भई उक्त सार्वजनिक अपराधका मुद्दाको फैसला प्रमुख जिल्ला अधिकारीबाट भइसकेको समेत देखिएको हुनाले विपक्षीको सो भनाईलाई युक्तिसंगत एवं तथ्यपरक नै मान्नु पर्ने ।

इजलास अधिकृत : श्रीप्रकाश उप्रेती
कम्प्युटर : रानु पौडेल
इति संवत् २०६६ साल कात्तिक १९ गते रोज १ शुभम् ।

इजलास नं. ६

१.

मा.न्या.श्री कल्याण श्रेष्ठ र मा.न्या.श्री राजेन्द्रप्रसाद कोइराला, २०६२ सालको दे.पु.नं. ८२५१, अंश दर्ता, राजकलीदेवी कुर्मी समेत वि. वैजनाथ राउत कुर्मी

वादीले आफूले अंश नलिएको हुँदा अंश पाऊँ भन्ने दावीलाई प्रतिवादीबाट प्रमाणस्वरूप पेश गरेको २०१८।१०।४ को लिखतलाई अन्यथा हो भनी सो कुरा पुष्टि गर्न यी वादीले सकेको नपाइदा तथा छुट्टै जालसाजी मुद्दा दिँदा समेत उक्त जालसाजी मुद्दामा वादी दावी नपुग्ने भनी फैसला भएको अवस्थामा उक्त लिखतको सत्यतामा प्रश्न गर्नुपर्ने अवस्था नहुँदा वादी तथा प्रतिवादीका पति

तथा बाबुका बीचमा पहिले नै छुट्टि भिन्न भैसकेको अवस्था देखिने ।

इजलास अधिकृत : विमल पौडेल

कम्प्युटर : शम्भुप्रसाद शाह

इति संवत् २०६६ साल असोज २८ गते रोज ४ शुभम् ।

- यस्तै लगाउको २०६२ सालको दे.पु.नं. ८२५२, अंश दर्ता, राजकलीदेवी कुर्मी वि. सीतादेवी कुर्मी भएको मुद्दामा यसैअनुरूप निर्णय भएको छ ।

२.

मा.न्या.श्री कल्याण श्रेष्ठ र मा.न्या.श्री राजेन्द्रप्रसाद कोइराला, २०६२ सालको रिट नं. ३०२८, उत्प्रेषणयुक्त परमादेश, ज्योतिमान सिंह राजभण्डारी समेत वि. श्रम तथा यातायात व्यवस्था मन्त्रालय समेत

निवेदकहरू साविकको नेपाल यातायात संस्थानदेखि नै निरन्तर रूपमा सेवा भित्र रही नेपाल रेल्वे खडा भएपछि सो कम्पनीमा समेत साविककै पदीय हैसियतबमोजिम कार्य गरी रहेको भन्ने देखिँदा कम्पनीको सेवामा बहाल छँदा वा त्यहाबाट अवकाश दिँदा नेपाल यातायात संस्थानले दिएको वा दिई आएको वा निवेदकहरूले खाई पाई आएको सेवा सुविधामा कटौती गरी वा सोबमोजिमको सुविधा घटाई वा निवेदकहरूलाई प्रत्यक्ष असर पुग्ने गरी विनियमावली तर्जुमा गर्न नमिल्ने ।

इजलास अधिकृत : रमेशप्रसाद ज्ञवाली

कम्प्युटर : धनबहादुर गुरुङ

इति संवत् २०६६ साल साउन ३२ गते रोज १ शुभम् ।

३.

मा.न्या.श्री कल्याण श्रेष्ठ र मा.न्या.श्री राजेन्द्रप्रसाद कोइराला, २०६१ सालको रिट नं. ३७३०, उत्प्रेषणयुक्त परमादेश समेत, दिनेशकुमार यादव वि. रानी विराटनगरका प्रहरी उपरिक्षक समेत

घरद्वारमा फेला नपरेको मुचुल्का गर्दैमा र निर्णय पचाँमा निजलाई नियम ८९(२) बमोजिम सफाइको मौका प्रदान गरेको भनी उल्लेख गर्दैमा

प्राकृतिक न्यायको सिद्धान्तबमोजिम सुनुवाईको मौका दिएको रहेछ भनी मान्न सकिँदैन । निवेदकलाई नोकरीबाट हटाउनु पूर्व सजायको प्रस्ताव गरी आधारसहितको अभियोग लगाएको पनि देखिँदैन । यस्तो अवस्थामा सफाइको मौका दिई निवेदकलाई नोकरीबाट हटाएको रहेछ भनी मान्न नमिल्ने ।

इजलास अधिकृत : नारायणप्रसाद पराजुली

कम्प्युटर : धनबहादुर गुरुङ

इति संवत् २०६६ साल कात्तिक १६ गते रोज २ शुभम् ।

- यस्तै प्रकृतिको २०६२ सालको रिट नं. २६८१, उत्प्रेषणयुक्त परमादेश समेत, लक्ष्मीनारायण सिंह वि. जिल्ला प्रहरी कार्यालय रामेछाप समेत भएको मुद्दामा यसैअनुरूप निर्णय भएको छ ।

४.

मा.न्या.श्री कल्याण श्रेष्ठ र मा.न्या.श्री राजेन्द्रप्रसाद कोइराला, २०६१ सालको रिट नं. ३४७७, उत्प्रेषण समेत, सतन भगत वि. जिल्ला प्रशासन कार्यालय बीरगञ्ज समेत

विपक्षीले दर्ता गरेको संस्थाको विधानको प्रस्तावनामा लेखिएको "इटियाही मठको श्री सम्पत्तिको संरक्षण, सम्बर्धन एवं विकासको लागि भन्दै श्रीराम औतारदास मठ सेवा समितिको विधान तर्जुमा गरिएको छ भन्ने उल्लेख भएबाट निवेदकको हक अधिकारको प्रयोग गरी कर्तव्य निर्वाह नगरेको देखिनाले त्यस्तो अवस्थामा हस्तक्षेप गर्न सकिने स्थिति देखिएकोले त्यस्तो संस्थाको दर्ता संवैधानिक एवं कानूनी व्यवस्था समेतको आधारमा कानूनसम्मत मान्न मिलेन र गुठीको महलको ११ नं. विपरीत गठन गर्न दिन पनि नमिल्ने ।

इजलास अधिकृत : नारायणप्रसाद पराजुली

कम्प्युटर : धनबहादुर गुरुङ

इति संवत् २०६६ साल कात्तिक १६ गते रोज २ शुभम् ।

५.

मा.न्या.श्री कल्याण श्रेष्ठ र मा.न्या.श्री कृष्णप्रसाद उपाध्याय, २०६३ सालको दे.पु.नं. ०१४५, कीर्ते

जालसाज, राजेशकुमार साह समेत वि.
भागवतप्रसाद साह तेली समेत

जुन लिखतलाई जालसाज घोषित गरिपाउँ भन्ने पुनरावेदकले जिकीर लिएको छ, सो लिखत नै बदर भई अस्तित्वविहीन भइसकेको अवस्थामा त्यस्तो अस्तित्वविहीन लिखतलाई जालसाज घोषित गरिरहनुको कुनै औचित्य नहुने ।
इजलास अधिकृत : नारायणप्रसाद पराजुली
कम्प्युटर : धनबहादुर गुरुङ
इति संवत् २०६६ साल कात्तिक १८ गते रोज ४ शुभम् ।

६.

मा.न्या.श्री कल्याण श्रेष्ठ र मा.न्या.श्री कृष्णप्रसाद उपाध्याय, २०६३ सालको दे.पु.नं. ८८८५, अंश दर्ता, तारादेवी साह समेत वि. मीरादेवी तेली समेत

फिराद परेपछि भएको अंश छोडपत्रको लिखतबाट अधि नै छुट्टिएको भन्ने मान्न पनि मिल्ने नदेखिने ।

जग्गाहरू सगोलमा नै रहँदा खरीद गरेको देखिएको र निजी आर्जन भन्ने कुनै ठोस लिखत प्रमाण पेश गर्न नसकेको हुँदा दावी लिएकै आधारमा त्यस्ता जग्गालाई निजी आर्जनको मान्न नसकिने हुँदा तायदातीमा देखाएका प्रतिवादीका नाम दर्ताका जग्गाहरू बण्डा लाग्ने ।

इजलास अधिकृत : नारायणप्रसाद पराजुली
कम्प्युटर : धनबहादुर गुरुङ

इति संवत् २०६६ साल कात्तिक १८ गते रोज ४ शुभम् ।

७.

मा.न्या.श्री कल्याण श्रेष्ठ र मा.न्या.श्री कृष्णप्रसाद उपाध्याय, ०६१ सालको दे.पु.नं. ८३९७, अंश चलन, भगलु चौधरी वि. संगीलाल चौधरी

प्रमाण ऐन, २०३१ को दफा ७(ख) ले कुनै व्यक्तिको साथमा रहेको लिखत पेश गर्न निजलाई अदालतले आदेश दिँदा निजले पेश नगरेमा सो लिखत पेश भएको खण्डमा निजका विरुद्ध प्रमाण लाग्नसक्ने किसिमको छ, भनी अदालतले अनुमान गर्न सक्नेछ, भन्ने व्यवस्थाका आधारमा पनि डी.एन.ए. परीक्षण गर्न असहयोग गर्नुका पछाडि सो डी.एन.ए. परीक्षण भए निजका विरुद्ध प्रमाण

लाग्नसक्ने भएकोले नै वादी अनुपस्थित रहेको अनुमान गर्नुपर्ने ।

इजलास अधिकृत : नारायणप्रसाद पराजुली

कम्प्युटर : धनबहादुर गुरुङ

इति संवत् २०६६ साल कात्तिक १८ गते रोज ४ शुभम् ।

८.

मा.न्या.श्री कल्याण श्रेष्ठ र मा.न्या.श्री कृष्णप्रसाद उपाध्याय, २०६२ सालको दे.पु.नं. ८६३७, अंश दपोट हक कायम, चम्पी दमिनी वि. विमला दमिनी, २०६३ सालको दे.पु.नं. ६१७, विमला दमिनी वि. चम्पी दमिनी समेत

आफ्नो नाममा दर्ता नै नभएको अर्काको जग्गामा बनेको घरलाई तायदातीमा नदेखाएको हुँ भन्ने प्रतिवादीको जिकीर देखिन आउँछ । अर्काको जग्गा तायदातीमा देखाउन मिल्ने पनि होइन । प्रतिवादीले घर नै अर्काको जग्गामा बनेको हुँदा घर तायदातीमा देखाउन नसकेको भनेको देखिन्छ । तर घर नदेखाउन लुकाउन तायदातीमा उल्लेख नगरेको भन्ने तथ्ययुक्त आधार भने देखिँदैन । तसर्थ यस्तो कार्यलाई मुलुकी ऐन अंशबण्डाको २७ नं. अन्तर्गत प्रतिवादीले दपोट गरेको भन्न नमिल्ने ।

इजलास अधिकृत : नारायणप्रसाद पराजुली

कम्प्युटर : धनबहादुर गुरुङ

इति संवत् २०६६ साल कात्तिक १८ गते रोज ४ शुभम्

९.

मा.न्या.श्री कल्याण श्रेष्ठ र मा.न्या.श्री रणबहादुर वम, २०६४ सालको WO ०२४२, उत्प्रेषणयुक्त परमादेश, ज्ञानबहादुर पाण्डे वि. राजनबहादुर खत्री क्षेत्री समेत

लिलाम भएको जग्गाको पञ्चकिर्ते मूल्य रु.३,८५,०००/- कायम भई लेनदेन मुद्दाका वादी विपक्षी राजनबहादुरले भन्दा अधि लक्ष्मी आचार्यले रु.४,०१,०००/- कमल आचार्यले रु.४,०३,०००/- शेरबहादुर थापाले रु.४,०५,०००/- र रोमाकान्त पाण्डेले रु.४,०७,०००/- डाक बोल कबोल गरी अन्त्यमा वादी राजनबहादुरले रु.४,०९,००१/- मा लिलाम सकार गरेको देखियो । यस्तो अवस्थामा पञ्चकिर्ते मूल्यभन्दा बढी मूल्यमा अन्यले बोल

कवोल गरेको अङ्क भन्दा बढी अङ्कमा वादीले सकार गरेको लिलामी कारवाहीलाई जिल्ला अदालत नियमावलीको नियम ७५(७) विपरीत रहेछ भन्नु नमिल्ने ।

इजलास अधिकृत : रमेशप्रसाद ज्ञवाली
इति संवत् २०६६ साल भदौ ५ गते रोज ६ शुभम्
१०.

मा.न्या.श्री कल्याण श्रेष्ठ र मा.न्या.श्री अवधेशकुमार यादव, २०६२ सालको रिट नं. ३७७६, उत्प्रेषण परमादेश समेत, *सानुकृष्णबहादुर गिरी वि. नारायण गिरी समेत*

मालपोत कार्यालयबाट भएका निर्णयहरू मालपोत ऐन, २०३४ को दफा ७(३) ले दिएको अधिकारभन्दा बाहिर गई भएको देखिन्छ । अर्थात् उक्त निर्णयहरू प्रचलित कानूनको गम्भीर त्रुटि गरी गरेको अवस्था छ भने त्यस्ता निर्णयहरू बदर गर्न र पुनः निर्णय गर्नसक्ने अधिकार मालपोत ऐन, २०३४ को दफा ३२ख ले मालपोत विभागका महानिर्देशकलाई प्रदान गरिरहेको अवस्थामा मालपोत विभागका महानिर्देशकबाट मालपोत कार्यालय भक्तपुर र ललितपुरबाट भएको निर्णय बदर गर्ने गरी भएको मिति २०६२।२।१८ गतेको निर्णयमा कुनै संवैधानिक एवं कानूनी त्रुटि विद्यमान रहेको देखिन नआई प्रचलित कानूनको परिधिभित्र रहेर नै निर्णय गरेको देखिदा रिट निवेदन खारेज हुने ।

इजलास अधिकृत : नारायणप्रसाद पराजुली
कम्प्युटर : धनबहादुर गुरुङ
इति संवत् २०६६ साल मंसिर १६ गते रोज ३ शुभम् ।

११.
मा.न्या.श्री कल्याण श्रेष्ठ र मा.न्या.श्री अवधेशकुमार यादव, २०६२ सालको रिट नं. २६१२, उत्प्रेषण परमादेश, *मायादेवी थापा क्षेत्रिनी(हमाल) वि. मालपोत कार्यालय सिराहा समेत*

निवेदिकाले समेत आफू वास्तविक मायादेवी हुँ भनी जिकीर लिएको देखिँदा यी निवेदिका वास्तविक जग्गाधनी मायादेवी थापा क्षेत्रिनी हुन् होइनन् भन्ने सम्बन्धमा निवेदिकालाई

समेत बुझी यकीन गर्नुपर्ने हुन्छ । तसर्थ जिल्ला प्रशासन कार्यालयमा हाल विचाराधीन अवस्थामा रहेको फैसला बदर मुद्दामा निवेदिका समेतलाई बुझी निजलाई आफ्नो भनाई राख्ने पर्याप्त अवसर दिई वास्तविक जग्गाधनीका सम्बन्धमा निष्कर्षमा पुग्नुपर्ने देखिँदा निवेदिकालाई समेत भिकाई बुझी निजको भनाई समेत सुनी कानूनबमोजिम निर्णय गर्नु भनी विपक्षी जिल्ला प्रशासन कार्यालय सिराहाका नाउँमा परमादेशको आदेश जारी हुने ।

इजलास अधिकृत : रमेशप्रसाद ज्ञवाली
कम्प्युटर : धनबहादुर गुरुङ
इति संवत् २०६६ साल भदौ ४ गते रोज ५ शुभम् ।

१२.

मा.न्या.श्री कल्याण श्रेष्ठ र मा.न्या.श्री अवधेशकुमार यादव, २०६३ सालको WO ०७४७, उत्प्रेषण, *अमरबहादुर गुरुङ समेत वि. ललित गुरुङ समेत*

नावालक भनेका प्रवीण गुरुङको जन्ममिति सम्बन्धमा मुद्दा विचाराधीन रहेको मातहतको अदालतले सबूद प्रमाण समेत बुझी यकीन गरेको विषयका सम्बन्धमा रिट क्षेत्रबाट निज प्रवीण गुरुङको उमेरसम्बन्धी प्रश्नका बारेमा थप सबूद प्रमाण बुझी वा निवेदकहरूको भनाईका भरमा अन्य आदेश गर्न मिल्ने समेत हुँदैन । त्यसै गरी विपक्षी ललिताले यी निवेदकहरूको मासिक आयस्ता भनी उल्लेख गरेको रकमका सम्बन्धमा समेत निजहरूको मासिक आम्दानी के कति थियो वा रहेछ सो सम्बन्धमा पनि सबूद प्रमाण बुझी निष्कर्षमा पुग्नुपर्ने विषय देखिँदा सो कुरा समेत अंश नामसारी मुद्दा विचाराधीन रहेको सम्बन्धित अदालतले नै सबूद प्रमाण बुझी निर्णय गर्नुपर्ने विषय भएकोले त्यस्तो तथ्यगत प्रश्न एवं मातहत अदालतमा विचाराधीन विषयमा असाधारण अधिकारक्षेत्रअन्तर्गत परेको रिटक्षेत्रबाट वोल्न नमिल्ने ।

इजलास अधिकृत : रमेशप्रसाद ज्ञवाली
कम्प्युटर : धनबहादुर गुरुङ
इति संवत् २०६६ साल भदौ १ गते रोज २ शुभम्

१३.

मा.न्या.श्री कल्याण श्रेष्ठ र मा.न्या.श्री सुशीला कार्की, २०६० सालको रिट नं. ३०९३, परमादेश, अधिवक्ता भोजराज ऐर समेत वि. प्रधानमन्त्री तथा मन्त्रिपरिषद्को कार्यालय समेत

पोखरा उपमहानगरपालिका क्षेत्रभित्रको सार्वजनिक पर्ति जग्गा, पोखरी, चौतारीजस्ता वस्तुहरूको संरक्षण नभएको भन्ने निवेदन जिकीर भएको विपक्षीहरूले आफ्नो कर्तव्यप्रति सचेत रहेको भने पनि उक्त क्षेत्रमा कति सार्वजनिक खुल्ला जग्गा, पोखरी तथा चौताराहरू रहेको भन्ने अद्यावधिक तथ्यांकसहित प्रतिवाद गर्न सकेको नदेखिएकोले त्यस्तो सार्वजनिक सम्पत्ति सार्वजनिक न्यासको रूपमा राज्यको जिम्मामा छाडिएको भै तिनको संरक्षण गर्नु जनताको हक र हितमा रहने र वर्तमान तथा भावी पिढी समेतको लागि महत्त्वपूर्ण हुने हुँदा स्थानीय प्रशासन ऐन, स्थानीय स्वायत्त शासन ऐन, मालपोत ऐन, वातावरण संरक्षण ऐन, र सार्वजनिक न्यास सिद्धान्त समेतका आधारमा निवेदनमा उल्लिखित सम्पत्तिको हकमा मागबमोजिम उक्त सम्पत्तिहरूको लगत तथ्यांक अद्यावधिक र दुरुस्त राखी तिनको संरक्षण गर्ने व्यवस्था मिलाउनु र त्यस्तो लगतहरू सार्वजनिक गर्नु भनी विपक्षी भूमिसुधार तथा व्यवस्था मन्त्रालय मालपोत, कार्यालय पोखरा, कास्की जिल्ला प्रशासन कार्यालय कास्की र पोखरा उपमहानगरपालिका समेतका विपक्षीहरूको हकमा परमादेशको आदेश जारी हुने ।

इजलास अधिकृत : शिशिरराज ढकाल
इति संवत् २०६६ साल वैशाख ३० गते रोज ४ शुभम्

१४.

मा.न्या.श्री कल्याण श्रेष्ठ र मा.न्या.श्री भरतराज उप्रेती, २०६५ सालको WO ०३०४, उत्प्रेषण परमादेश समेत, केतकी चेष्टर वि. गुठी संस्थान केन्द्रीय कार्यालय डिल्लीबजार समेत

निवेदक जुन कानूनको सहारा लिई जुन कानूनको जुन दफाले दिएको अधिकार हनन् भयो भनी यस अदालतमा आउनु भएको छ, सो समयमा

सो एनको उक्त दफा नै अस्तित्वमा नरही अमान्य र बदर घोषित भइसकेको देखिँदा यस अदालतमा प्रवेश गर्दा र निर्णय गर्दाका वखत अस्तित्वमा नै नरहे नभएको कानूनबाट निवेदिकाको हक हनन् भएको मान्न नमिल्ने ।

इजलास अधिकृत : नारायणप्रसाद पराजुली
इति संवत् २०६६ साल मंसिर १२ गते रोज ६ शुभम् ।

१५.

मा.न्या.श्री कल्याण श्रेष्ठ र मा.न्या.श्री भरतराज उप्रेती, २०६५ सालको WO ०६७२, उत्प्रेषण परमादेश समेत, कृष्णगोपाल कपाली (कुस्ले) वि. गुठी संस्थान केन्द्रीय कार्यालय समेत

कुनै व्यक्तिको संवैधानिक वा कानूनी हक उल्लंघन भएको अवस्थामा त्यस्तो हक प्रचलन गराउने अन्य उपचारको व्यवस्था नभएको वा भए पनि प्रभावकारी उपचारको व्यवस्था नभएको अवस्थामा मात्र सार्वजनिक निकाय वा अधिकारी वा अन्य निकायबाट भएको कुनै निर्णयबाट मर्का पर्ने व्यक्तिले उपचारको लागि रिट क्षेत्र ग्रहण गरी यस अदालतमा आउन सक्ने र यस अदालतबाट उपर्युक्त आदेश जारी गरी त्यस्तो निर्णय बदर गर्न उत्प्रेषणको आदेश जारी गर्न सक्ने हो । कुनै व्यक्तिको संविधानप्रदत्त वा कानूनी हकाधिकारमा असर पर्ने गरी निर्णय नै नभएको अवस्थामा अपरिपक्व (Premature) कार्य वा निर्णयउपर रिट जारी हुन सक्दैन । प्रस्तुत रिट निवेदनमा निवेदकको संवैधानिक वा कानूनी हकाधिकारमा असर पर्ने गरी कुनै निर्णय नै भएको नदेखिएको र निजको निवेदनबाट थप कारवाही हुनसक्ने अवस्था विद्यमान रहेको अवस्थामा कारवाहीको क्रममा भएको आदेशलाई अन्तिम निर्णय भएसरह मानी त्यस्तो कार्यबाट निवेदकको संविधान वा कानूनप्रदत्त हक हनन् भएको भनी उत्प्रेषणको आदेशद्वारा सो निर्णय बदर गरी दिन मिल्ने नदेखिँदा मागबमोजिम उत्प्रेषणयुक्त परमादेशको आदेश जारी गर्न नमिल्ने ।

इजलास अधिकृत : नारायणप्रसाद पराजुली
इति संवत् २०६६ साल मंसिर १२ गते रोज ६ शुभम् ।

- यसै प्रकृतिको २०६५ सालको WO ०६७३, उत्प्रेषण परमादेश समेत, कर्मनाथ कपाली (कुस्ले) वि. गुठी संस्थान केन्द्रीय कार्यालय समेत भएको मुद्दामा यसैअनुरूप निर्णय भएको छ।

१६.

मा.न्या.श्री कल्याण श्रेष्ठ र मा.न्या.श्री भरतराज उप्रेती, २०६३ सालको WO ०६२८, उत्प्रेषण परमादेश समेत, प्रेमनारायण महतो वि. अख्तियार दुरुपयोग अनुसन्धान आयोग समेत

साधिकार निकायबाट कानूनको रीत पुऱ्याई तामेल भएको म्याद बढेर गरिपाऊँ भनी परेको निवेदनउपर पुनः जाचँबुझ गरी म्याद रीतपूर्वक नै तामेल भएकोले कानूनबमोजिम गर्नु भनी भएको आदेशलाई चित्त बुझाई बसी सो आदेशउपर थप उपचार नखोजी अन्तिम भएर रहेको अवस्थामा त्यस्तो म्यादलाई कानूनबमोजिम नै तामेल भएको मानी विशेष अदालतबाट भएको फैसलाबाट निवेदकको कुनै पनि संवैधानिक एवं कानूनी हकको हनन् भएको नदेखिने।

इजलास अधिकृत : नारायणप्रसाद पराजुली

कम्प्युटर : धनबहादुर गुरुङ

इति संवत् २०६६ साल मंसिर १२ गते रोज ६ शुभम्।

इजलास नं. ७

१.

मा.न्या.श्री गौरी ढकाल र मा.न्या.श्री कृष्णप्रसाद उपाध्याय, २०६४ सालको CI ०८२६, लेनदेन, राजकुमार अग्रवाल वि. डिकबहादुर तामाङ

व्यापारी कारोवारको सिलसिलामा खडा भएको लिखतलाई कपाली तमसुकको संज्ञा दिन पनि कानूनतः मिल्ने देखिएन। लेनदेन व्यवहारको ४० नं. हदम्यादभित्र दायर हुन आएको कुरालाई वादी स्वयंमले पनि उक्त लेनदेन व्यवहारको ४० नं. समेतको आधारमा फिराद गर्न आएको छु भनी आफ्नो फिरादमा उल्लेख गरेबाट उक्त ४० नं. को कानूनी व्यवस्थालाई स्वीकारै गरेको देखिन्छ। यसर्थ

२०५८१०१४ मा भएको भनेको लिखत विधिवत रूपमा तयार भएको कपाली तमसुकको लिखत भन्न मिल्ने। लिखत भएको मिति २०५८१०१४ बाट २ वर्षभित्र प्रस्तुत फिराद दायर हुन आएको नभई ऐनको हदम्याद व्यतीत भई दर्ता हुन आएको देखिँदा खारेज हुने।

इजलास अधिकृत : लालप्रसाद अर्याल

इति संवत् २०६६ साल कात्तिक १९ गते रोज ५ शुभम्

२.

मा.न्या.श्री गौरी ढकाल र मा.न्या.श्री प्रकाश वस्ती, २०६१ सालको दे.पु.नं. ८७२५, अंश दर्ता, राम मिलन महतो नुनिया वि. दुःखी महतो नुनिया समेत

वादीहरूको मावलीपट्टिका बाजे बज्यै मरी अपुतालीको ८ नं. अनुरूप वादीमा अपुताली परेको उक्त विवादित कि.नं. २४० र २४५ को जग्गा वादीले तायदातीमा उल्लेख नगरेकोमा सो जग्गालाई छुटफुट तायदाती पेश गरेको भनी यी पुनरावेदक प्रतिवादीले देखाउदैमा सो जग्गा सगोलको बण्डा लाग्ने सम्पत्ति मानी बण्डा गर्नु अंशबण्डाको १८ नं. विपरीत हुने।

इजलास अधिकृत : हरिराज कार्की

इति संवत् २०६६ साल मंसिर ३ गते रोज ४ शुभम्

यसै लगाउका निम्न मुद्दाहरूमा यसैअनुरूप निर्णय भएका छन् :

- २०६१ सालको दे.पु.नं. ९५३१, लिखत दर्ता बढेर, कैलसीयादेवी नुनियाइन वि. मेघु महतो नुनिया समेत
- २०६३ सालको दे.पु.नं. ६८१, २०६१ सालको दे.पु.नं. ६८०, लिखत दर्ता बढेर, शंकर राउत कुर्मी वि. दुःखी महतो नुनिया समेत, राम मिलन नुनिया वि. दुःखी महतो नुनिया समेत

इजलास नं. ८

१.

मा.न्या.श्री ताहिर अली अन्सारी र मा.न्या.श्री राजेन्द्रप्रसाद कोइराला, ०६३ सालको दे.पु.नं.

८८४४, परमादेश, राजेन्द्र कट्टेल वि. शालीग्राम ओभा

सार्वजनिक संस्था वा संस्थाको पदाधिकारीले आफ्नो अधिकारको प्रयोग कानूनको परिधिभित्र रही गर्नुपर्ने हुन्छ । कानूनी अख्तियारीविना गरेको कार्यले र कानूनले निर्धारित गरेको प्रक्रियाविपरीत गरिएको कारवाहीले कानूनी मान्यता नपाउने हुँदा त्यस्तो कार्यको प्रभाव स्वतः शून्य हुन्छ । त्यसकारण एक व्यक्तिले लिएको रकम असूल गर्न विपक्षी बैंकले अर्कै व्यक्ति यी निवेदकको खाता र पेन्सनको रकम रोक्का राख्ने गरी गरेको कार्य कानूनी अख्तियारीअनुसार भए गरेको भन्न मिल्ने देखिएन । त्यसमा पनि निवेदककी श्रीमतीले ओभरड्रन गरेको रकम चुक्ता भइसकेको अहिलेको परिवर्तित परिस्थितिमा बैंकले निवेदकको बैंक खाता र पेन्सनको भुक्तानी रोक्नुपर्ने कुनै कानूनी आधार र औचित्य बाँकी नरहने ।

इजलास अधिकृत : खड्गबहादुर श्रेष्ठ
इति संवत् २०६६ साल असार ११ गते रोज ५ शुभम् ।

२.

मा.न्या.श्री ताहिर अली अन्सारी र मा.न्या.श्री मोहनप्रकाश सिटौला, ०६३ सालको फौ.पु.नं. ३६८७, जबरजस्ती करणी, नेपाल सरकार वि. पारस थापा

जबरजस्ती करणी मुद्दामा पीडित भनिएकी कुमारी केटीको Medical Specilist बाट शारीरिक परीक्षण गर्दा जबरजस्ती करणीका कुनै लक्षणहरू शरीरमा फेला परेनन् भने केवल मौखिक भनाईको आधारमा मात्र जबरजस्ती करणी जस्तो गम्भीर प्रकृतिको मुद्दामा कसैलाई कसूरदार ठहर्‍याउन मिल्दैन । शारीरिक परीक्षण गर्दा कुमारी केटीको कन्याजाली च्यालिएको छैन भने (Hymen Rupture) वीर्य स्खलन भएको पाइएन भने यौनाङ्गमा कुनै पनि चोटपटक या रक्तश्रावका चिन्ह देखिएन भने पीडितको शरीरमा घर्षण या चोट पटकमध्येका कुनै पनि चिन्ह फेला परेन भने

त्यस्तो अवस्थामा जबरजस्ती करणी वारदात भएको छ, भनी अनुमान गर्न नमिल्ने ।

इजलास अधिकृत : खड्गबहादुर श्रेष्ठ
इति संवत् २०६६ साल मंसिर १५ गते रोज शुभम्
३.

मा.न्या.श्री ताहिर अली अन्सारी र मा.न्या.श्री गिरीशचन्द्र लाल, २०६० सालको दे.पु.नं. ८१२४, निर्णय दर्ता बदर दर्ता, गंगिया क्वार्नी वि. मरहनदेवी

वास्तविक र साँचो व्यहोरा लुकाई भूट्टा व्यहोरा देखाई गा.वि.स. को सिफारिश समेत लिई मालपोत कार्यालयमा दर्ताको लागि निवेदन दिनु र सम्पूर्ण तथ्य नबुझी कि.नं. २२५ प्रतिवादी मरहनीदेवीको नाममा दर्ता गर्ने गरी मालपोत कार्यालय, धनुषाबाट भएको २०५६।१।१८ को निर्णय गैरकानूनी, अन्यायपूर्ण र दूषित देखिन आउँछ । यस्तो दूषित निर्णय कानूनी मान्यताविहीन भई कायम रहन नसक्ने हुनाले बदर हुने ।

इजलास अधिकृत : कृपासुर कार्की

कम्प्युटर : नम्रता बास्तोला

इति संवत् २०६५ साल चैत ६ गते रोज ५ शुभम्

■ यस्तै लगाउका २०६० सालको दे.पु.नं. ८१२५, लिखत बदर, गंगिया क्वार्नी वि. मरहनदेवी समेत भएको मुद्दामा यसैअनुरूप निर्णय भएको छ ।

४.

मा.न्या.श्री ताहिर अली अन्सारी र मा.न्या.श्री सुशीला कार्की, २०५८ सालको स.फौ.पु.नं. २५१७, कर्तव्य ज्यान, नेपाल सरकार वि. कृष्ण क्षेत्री समेत प्रतिवादीमध्ये कृष्ण क्षेत्री र कृष्ण तिमिल्सिनाको हकमा सर्वप्रथम विचार गर्दा निजहरूले अदालतमा वयान गर्दा कसूरमा इन्कार रहे पनि अनुसन्धान अधिकारीसमक्ष कृष्ण क्षेत्री र चाइनिजबीच हानाहान भएको थाहा पाई घटनास्थल जाँदा कृष्ण क्षेत्रीलाई टाउकोमा चाइनिजले हानी घाइते बनाएको देखी मैले पनि चाइनिजलाई हातले २-३ मुक्का हानेको हुँ भनी कृष्ण तिमिल्सिनाले र क्षतिपूर्तिको रकमको

विषयमा छैनजोडले मलाई धकेलेको हुँदा मैले पनि निजको छातीमा समाती हानाहान भएको हो भनी कृष्ण क्षेत्रीले हात मुक्कासम्म छोडेको कुरामा सावित भई वयान गरेका छन् । सो कुरा मौकामा कागज गर्ने व्यक्तिहरूको भनाई र अदालतमा भएको वकपत्र समेतबाट समर्थित हुन आउँछ । यसको साथै माथि उल्लिखित प्रश्नहरूको विवेचना गर्ने क्रममा उक्त दुवै जनाको संलग्नतामा समेत प्रस्तुत वारदात भएको कुरा स्थापित भए तापनि ज्यान लिने इवी लाग र मनसाय नभएको र निजहरू मध्ये को कसले छाडेको चोटबाट छैनजोडको मृत्यु भएको हो भन्ने आरोपित कसूर स्थापित र प्रमाणित हुन नसकेकोले अनुमानको आधारमा यी प्रतिवादीहरूलाई आरोपित कसूरको कसूरदार ठहराउन र ज्यान सम्बन्धीको १३ को देहाय (३) बमोजिम सजाय गर्न नमिल्ने हुँदा मुलुकी ऐन ज्यान सम्बन्धी महलको ५ नं. को कसूर गरेको ठहर गरी ऐ. ६(२) बमोजिम सजाय हुने ।

मृतक छैनजोडको शरीरमा अनेक घा-चोट देखिए पनि त्यहाँ धेरै जनाको भीडले हात हालाहाल गरेको अवस्थामा कसले प्रहार गरेको भन्ने खुल्न र प्रमाणित हुन नसकेकोले अनुमानको आधारमा केही खास खास व्यक्तिलाई मात्र दोषी ठहराउन मिल्दैन । दुई पक्षबीच भएको झडप र कुटपीट हानाहानको समग्र घटनामा दुवै पक्षका व्यक्तिको संलग्नता भएको र धेरै जनाबीच कुटपीट भएको देखिए तापनि उल्लिखित प्रतिवादीहरूको सहभागीताको स्वरूप र प्रकृति निश्चित हुन सकेको छैन । छैनजोडको मृत्युको कारण यी प्रतिवादीहरूको कुटपीट वा निजहरूले छाडेको चोटको प्रहार हो भन्ने कुरा प्रमाणित नभएसम्म निजहरूलाई सामूहिक रूपले हत्याको वारदातको जिम्मेवार ठहराई सजाय गर्नु कानूनसम्मत र न्यायपूर्ण हुन सक्दैन । उक्त वारदातमा यी प्रतिवादीहरूले आपराधिक क्रियाकलाप गरेको वा वारदातमा सरिक भएको भन्ने शंका, अनुमान र

तर्कका आधारमा कसूरदार ठहर्‍याउन फौजदारी न्यायका मान्य सिद्धान्त समेतले नमिल्ने ।

इजलास अधिकृत : दीपक ढकाल

कम्प्युटर : शम्भुप्रसाद शाह

इति संवत् २०६६ साल पुस १३ गते रोज २ शुभम् ५.

मा.न्या.श्री ताहिर अली अन्सारी र मा.न्या.श्री सुशीला कार्की, २०५५ सालको दे.पु.नं. ७६३४, अंश, उदयभान पाण्डेय वि. रामकेशरी पाण्डेय

वकसपत्र दिनु लिनु र अंश दिनु लिनु दुई अलग अवस्था हुन् र अलग-अलग ऐनका परिधिभिन्न पर्ने विषयवस्तुहरू हुन् । अंशसम्बन्धी विवादमा वकसपत्रलाई कुनै हालतमा पनि पाउनेको विपक्षमा र दिनेको पक्षमा प्रयोग गर्न मिल्ने देखिँदैन । वकस भनेको कसैको सेवा काम वा व्यवहारबाट खुशी भई आफूखुशी दिने कुरा हो । पाउनेको अधिकारको कुरा होइन । तर यसको विपरीत अंशहक पाउनेको नैसर्गिक र कानूनी अधिकार हो । त्यसकारण वकसपत्र पाउनु अंश नपाउनेको आधार बन्न सक्दैन । आफूखुशी आफैले आफ्नो अंश हक नत्यागेसम्म अशियार अंश पाउनु पर्ने नै देखिने ।

इजलास अधिकृत : कृपासुर कार्की

इति संवत् २०६५ साल चैत ५ रोज ४ शुभम् ।

यसै लगाउका निम्न मुद्दाहरूको यसैअनुरूप निर्णय भएका छन् :

- २०५५ सालको दे.पु.नं. ७६३५, लिखत बदर, उदयभान पाण्डेय वि. रामकेशरी पाण्डेय समेत
- २०५८ सालको फौ.पु.नं. ३१९८, जालसाजी, उदयभान पाण्डेय वि. गुन्जेश्वरीप्रसाद त्रिपाठी समेत
- २०५५ सालको फौ.पु.नं. २६७८, जालसाजी, उदयभान पाण्डेय वि. रामकेशरी पाण्डेय समेत
- २०५५ सालको दे.पु.नं. २६७७, जालसाजी, उदयभान पाण्डेय वि. गुन्जेश्वरी त्रिपाठी

- २०५९ सालको दे.पु.नं. ७९३५, खिचोला मेटाई चलन चलाई पाऊँ, उदयभान पाण्डेय वि. गुन्जेश्वरीप्रसाद त्रिपाठी

इजलास नं. ९

१.

मा.न्या.श्री राजेन्द्रप्रसाद कोइराला र मा.न्या.श्री रणबहादुर बम, २०६१ सालको दे.पु.नं. ८६०१, ८३७८, ८७९२, पोखरी खिचोला हक कायम समेत, बालेश्वर मण्डल वि. भुलीदेवी धनुकाइन, रजियादेवी धनुकाइन समेत वि. भुलीदेवी धनुकाइन, विमलादेवी मण्डल वि. भुलीदेवी धनुकाइन

२००४ सालभन्दा अघिदेखि नै उक्त जग्गामा रहेको पोखरी वादी प्रतिवादी समेतका पुर्खा डोमनकै पालादेखि भोग रही हालसम्म निजहरूकै संयुक्त भोगमा रहेको देखिँदा विवादित पोखरीमा वादीको हक छैन भन्न मिल्दैन । प्रतिवादी विमला र निजका छोराहरू बीच अंश मुद्दा चली सप्तरी जिल्ला अदालतबाट मिति २०५५।३।७ मा विवादित पोखरी समेत बण्डा हुने गरी फैसला भए तापनि सबै हाँगामा अंश हक निहीत रहेको अबण्डा गोश्वाराको साविक लगतभित्रको विवादित पोखरी एक हाँगाका सन्तानले मात्र अनधिकृत र दूषित रुपमा आफ्नो मात्र हक हुने गरी गरिएको कुनै मिलापत्र वा फैसलाले अन्य अंशियारको हक समाप्त गर्न नसक्ने ।

इजलास अधिकृत : दीपक ढकाल

इति संवत् २०६६ साल पुस २१ गते रोज ३ शुभम् यसै लगाउका निम्न मुद्दाहरूको यसै अनुरूप निर्णय भएका छन् :

- २०६१ सालको दे.पु.नं. ८३७४, ८५९९, अबण्डा पोखरी खिचोला फैसला बदर हक कायम, रजियादेवी मण्डल समेत वि. रामदेव मण्डल समेत, बालेश्वर मण्डल वि. रामदेव मण्डल समेत

- २०६१ सालको दे.पु.नं. ८३७७, ८६००, फैसला हक कायम, रजियादेवी मण्डल समेत वि. बालेश्वर मण्डल, बालेश्वर मण्डल वि. वतहीदेवी मण्डल समेत

२.

मा.न्या.श्री राजेन्द्रप्रसाद कोइराला र मा.न्या.श्री रणबहादुर बम, २०६० सालको दे.पु.नं. ९४०६, लिखत दर्ता बदर, कृष्णदेव महतो वि. रामपरिदेवी महतो समेत

लिखतबाट नै कीर्ते गरी अर्काको हक मेट्ने कार्य भएको देखिन्छ भने त्यस्तो अवस्थामा लेनदेन व्यवहारको ४० नं. आकर्षित भई सो लिखत सदर कायम रही रहन सक्ने अवस्थै रहदैन । लेनदेन व्यवहारको ४० नं. तथा कीर्ते कागजको ३ नं. को छुट्टाछुट्टै अवस्थाअनुसारको दावी लिई अदालत प्रवेश गर्न मिल्ने र लिखत बदर मुद्दाबाट व्यक्तिको हक पुनर्स्थापित गर्न कीर्ते जालसाज मुद्दाको निर्णयलाई पर्खिरहनु नपर्ने ।

इजलास अधिकृत : दीपक ढकाल

इति संवत् २०६६ साल पुस २१ गते रोज ३ शुभम् ३.

मा.न्या.श्री राजेन्द्रप्रसाद कोइराला र मा.न्या. श्री प्रकाश वस्ती, २०६१ सालको दे.पु.नं. ९९०५, निर्णय दर्ता बदर दर्ता कायम, मित्रबहादुर घिमिरे समेत वि. सरोजकुमार बज्राचार्य समेत

कुनै ठोस प्रमाणको अभावमा रीतपूर्वक अड्डाबाट पारित गरेको राजीनामाको लिखतलाई जालसाजीबाट तयार भएको मान्न नमिल्ने ।

इजलास अधिकृत : विमल पौडेल

कम्प्युटर : धनबहादुर गुरुङ

इति संवत् २०६६ साल असोज २७ गते रोज ३ शुभम् ४.

मा.न्या.श्री राजेन्द्रप्रसाद कोइराला र मा.न्या. श्री प्रकाश वस्ती, २०६१ सालको दे.पु.नं. ९९०६, निर्णय दर्ता बदर दर्ता कायम, गंगाबहादुर तामाङ वि. शिवकुमार गौली समेत

यिनै वादीकी आमा भक्तमायाको मु.स. गर्ने गंगाबहादुर तामाङ्ग र प्रतिवादी नवीनकुमार गौलीसमेत भएको २०४७ सालको दे.नं. ३६१९४ को जग्गा खिचोला चलन मुद्दामा २०५०/११९ मा संखुवासभा जिल्ला अदालतबाट प्रतिवादी नवीनकुमार गौलीले खिचोला गरेको नठहराई वादी दावी नपुग्ने गरी फैसला भएपश्चात् सो फैसला समेतका आधारमा ७ नं. नापी गोश्वराले उक्त विवादित जग्गा प्रतिवादीको नाउँमा अस्थायी दर्ता गरिदिएको रहेछ । त्यसैगरी प्रमाणको रूपमा पेश भएको शम्भुमाया गौली वादी र यस मुद्दाका पुनरावेदक प्रतिवादी भएको २०४० सालको दे.दा.नं. १२१९४ को जग्गा खिचोला मुद्दामा यी पुनरावेदक वादी अर्थात् सो मुद्दामा प्रतिवादी गंगाबहादुर तामाङ्गले खिचोला गरेको ठहरी शुरु अदालतबाट मिति २०४०/८१४ मा फैसला भएको र सोउपर पूर्वाञ्चल क्षेत्रीय अदालतबाट २०४४/७२३२ मा उक्त फैसला नै सदर गरेको समेत देखिएबाट समेत उक्त विवादित कि.नं. का जग्गाहरू वादीको जग्गा हुन भनी मान्न मिल्ने देखिएन । त्यसैगरी उपरोक्त मुद्दाहरू अन्तिम भै बसेको तथा सो मुद्दाहरूमा भएको नक्सा र सर्भे नापीको नक्सा स्केच मिले भिडेको समेत देखिँदा ७ नं. नापी गोश्वराको मिति २०५१/१२५ को निर्णय बदर हुन सक्ने अवस्था नहुँदा सो निर्णय बदर गरी कि.नं. २६९ र २७० को जग्गासमेत दर्ता गरिपाऊँ भन्ने वादी दावी पुन नसक्ने ।

इजलास अधिकृत : विमल पौडेल
कम्प्युटर : भवानी हुंगाना
इति संवत् २०६६ साल असोज २७ गते रोज ३ शुभम्
५.

मा.न्या.श्री राजेन्द्रप्रसाद कोइराला र मा.न्या.श्री प्रकाश वस्ती, २०६१ सालको दे.पु.नं. ९९०७, निर्णय बदर दर्ता बदर दर्ता कायम, *दुर्गाबहादुर घिमिरे वि. दिनेश थापा समेत*

भै आएको नक्सा मुचुल्का र प्रतिवादीहरूले विभिन्न मितिमा गरिलिएको राजीनामाको लिखतको किल्ला एकआपसमा मिल्न एवं भिड्न आएको देखिन्छ । तसर्थ नक्सा एवं चार किल्ला मिली भिडी ७ नं. नापी गोश्वारा तथा शुरु जिल्ला अदालत तथा पुनरावेदन अदालतले निर्णय गरिसकेको विषयमा अनावश्यक विवाद फिकी अन्यथा गर्नुपर्ने अवस्था नदेखिने ।

इजलास अधिकृत : विमल पौडेल
कम्प्युटर : बेदना अधिकारी
इति संवत् २०६६ साल असोज २७ गते रोज ३ शुभम्
६.

मा.न्या.श्री राजेन्द्रप्रसाद कोइराला र मा.न्या.श्री प्रकाश वस्ती, २०६० सालको दे.पु.नं. ८६००, ८६०१, लिखत दर्ता बदर, *सुनरी वरैनी वि. हरेन्द्रप्रसाद वरै, विद्या ठाकुर लोहार समेत वि. हरेन्द्रप्रसाद वरै*

कुनै लिखत दूषित हो वा होइन त्यो विधिसम्मत तरिकाले उठेको विवादमा सक्षम अदालतले बोलेको हुनुपर्दछ । दावी गर्ने अधिकार पक्षलाई हुन्छ । तर स्वयं घोषणा गर्ने अधिकार भने हुँदैन । सक्षम अदालतले नबोलेको विधिसम्मत लिखतका हकमा अन्यथा सोचिरहने अवस्था नै नपर्ने ।

इजलास अधिकृत : सुदीप दंगाल
कम्प्युटर : रानु पौडेल
इति संवत् २०६६ साल कार्तिक ९ गते रोज २ शुभम्
■ यसै लगाउका २०६० सालको दे.पु.नं. ८६०२, जग्गा खिचोला चलन, *दुर्बल राउत वरै वि. हरेन्द्रप्रसाद वरै समेत* भएको मुद्दामा यसैअनुरूप निर्णय भएको छ ।

७.

मा.न्या.श्री रणबहादुर बम र मा.न्या.श्री प्रकाश वस्ती, २०६१ सालको दे.पु.नं. ९७२८, अंश, *पदमकुमारी लामा समेत वि. दिनेश लामा*

जिल्ला प्रशासन कार्यालय काठमाडौंबाट वादीलाई नागरिकता प्रमाणपत्र उपलब्ध गराउने क्रममा सो कार्यालयबाट खटाइएको प्रहरी सहायक निरीक्षक नेत्रबहादुर बोहरा समेतको टोली खटाई सर्जमिन मुचुल्का हुँदा दिनेश लामा वंशजको नाताले नागरिकता पाउने हैसियतका व्यक्ति भएका र निजका बाबु कृष्णबहादुर लामा भएको भनी काठमाडौं थानकोट गा.वि.स. वडा नं. १ का वडा सदस्य तीर्थबहादुर लामा समेतको रोहवरमा भई आएको मुचुल्का समेतका आधारमा जिल्ला प्रशासन कार्यालय काठमाडौंबाट मिति २०५३।१।१५ मा दिनेश लामा कृष्णबहादुर लामाको छोरा भनी ना.प्र.नं. १३१६० बाट नागरिकता प्रमाणपत्र जारी भएको देखिन्छ । यदि वादीले कृष्णबहादुर लामालाई पिता भनी भूठा विवरण भरी नागरिकता प्रमाणपत्र लिएको भए प्रचलित नागरिकता ऐनबमोजिम नागरिकता बदरतर्फ कारवाही चलाई बदर गराउन सक्नु पर्दथ्यो । बदर गराउन नसकेको अवस्थामा नागरिकता प्रमाणपत्रमा सनाखत नगरेकै कारणले मात्र कृष्ण लामा र दिनेश लामा बाबु छोराका नाताका व्यक्ति होइनन् भनी प्रतिवादीको कथनको भरमा र अनुमानका आधारमा मात्र अरु प्रमाणलाई बाहेक गर्न नमिल्ने ।

इजलास अधिकृत : दीपक ढकाल
इति संवत् २०६६ साल माघ १८ गते रोज २ शुभम् यसै लगाउको निम्न मुद्दाहरूमा यसैअनुरूप निर्णय भएको छः

- २०६१ सालको दे.पु.नं. ९७२७, लिखत बदर, चन्द्रकुमारी के.सी. समेत वि. दिनेश लामा
- २०६१ सालको दे.पु.नं. ९७२९, लिखत बदर, कृष्णबहादुर लामा समेत वि. दिनेश लामा
- २०६१ सालको दे.पु.नं. ९७३०, राजीनामा लिखत बदर, पदमकुमारी लामा समेत वि. दिनेश लामा

- २०६१ सालको दे.पु.नं. ९७३१, लिखत दर्ता बदर, सानुकान्छी लामा वि.दिनेश लामा
- २०६१ सालको दु.फौ.पु.नं. ३६७०, भूठा बकपत्र, कृष्णबहादुर लामा समेत वि.दिनेश लामा समेत
- २०६१ सालको दु.फौ.पु.नं. ३६७१, भूठा बकपत्र, राजकुमार लामा वि.दिनेश लामा समेत
- २०६१ सालको दु.फौ.पु.नं. ३६७२, गाली वेइज्जती, राजकुमार लामा वि.दिनेश लामा समेत
- २०६१ सालको दु.फौ.पु.नं. ३६७३, गाली वेइज्जती, राजकुमार लामा वि. दिनेश लामा
- २०६१ सालको दु.फौ.पु.नं. ३६७४, गाली वेइज्जती, राजकुमार लामा वि.दिनेश लामा समेत
- २०६१ सालको दु.फौ.पु.नं. ३६७५, गाली वेइज्जती, पदमकुमारी लामा समेत वि.दिनेश लामा समेत

८.

मा.न्या.श्री रणबहादुर बम र मा.न्या.श्री प्रकाश वस्ती, २०६१ सालको दे.पु.नं. ९७८४, घर भत्काई खिचोला मेटाई चलन चलाई पाऊँ, सोमई अहिर वि. प्रदीपकुमार तेली

विवादित घरजग्गा २०२२ सालदेखि नै प्रतिवादीहरूको भोगमा रहेको देखिएको र घर बनाउनेको ११ नं. को हदम्याद नाघी दायर हुन आएको फिराद अ.वं. १८० नं. बमोजिम खारेज गर्नुपर्नेमा दावीबमोजिम प्रतिवादीहरूले खिचोला गरेको र हक कायम हुने ठहर गरेको पुनरावेदन अदालत बुटवलको मिति २०६०।१।२० को फैसला मिलेको नदेखिदा उल्टी हुने ।

इजलास अधिकृत : दीपक ढकाल
इति संवत् २०६६ साल माघ १८ गते रोज २ शुभम्

९.

मा.न्या.श्री रणबहादुर बम र मा.न्या.श्री प्रकाश वस्ती, २०६० सालको दे.पु.नं. ८०८३, ८९३२,

जग्गा खिचोला जग्गा खाली गराई पाऊँ, लक्ष्मीबहादुर मानन्धर वि. पूर्णराज श्रेष्ठ समेत

वादीको कि.नं. २६० र २६१ प्रतिवादीको कि.नं. ३१६ र ३१७ का जग्गाहरू अधिग्रहणमा परेको उक्त जग्गाको क्षतिपूर्ति मापदण्डअनुसार विकसित घडेरी वा जग्गा नै फिर्ता लिन चाहेमा आयोजनाको योगदान कटाई नपुग जग्गा थप गरी फिर्ता समेत गरिने भनी लेखी आएको र सो मापदण्डअनुसार वादी प्रतिवादी दुवै पक्षले फिर्ता पाउने नै देखिएकोले हाल मुद्दाको परिस्थिति नै पृथक हुन गएबाट कुन कि.नं. को जग्गा कुन स्थानमा छ, कति क्षेत्रफल खिचोला भएको हो, छुट्याई रहन तथा मुद्दाको तथ्यभिन्न प्रवेश गरिरहन नपर्ने ।

इजलास अधिकृत : दीपक ढकाल
इति संवत् २०६६ साल माघ १८ गते रोज २ शुभम्

१०.

मा.न्या.श्री मोहनप्रकाश सिटौला र मा.न्या.श्री गिरीशचन्द्र लाल, २०६५ सालको दे.पु.नं. ०५११, हरहिसाब गराई पाऊँ, मणिकुमार ज्ञवाली वि. तिलकराज थापा

करार ऐन, २०५६ को दफा ७९ मै “परिस्थितिमा आधारभूत परिवर्तन भएमा करार परिपालना गर्न नपर्ने” भन्ने कानूनी व्यवस्था भएको स्थितिमा सम्झौता पत्रका पक्षहरूलाई त्यस्तो अवस्था सिर्जना भएमा उक्त दफा ७९ ले नै मद्दत गर्नसक्ने हुन्छ । तर सम्झौता पत्रमा उल्लेख भएमा र करारको प्रकृतिअनुसार करार परिपालना गर्न असम्भव भएमा करारका मर्का पर्ने पक्षहरूले करार ऐन, २०५६ को दफा ७९ को उपदफा १, २, ३, ४ र ५ का प्रावधानहरूको सहारा लिन सक्दछन् । तर प्रस्तुत मुद्दामा उल्लिखित अवस्था छैन । यी वादी प्रतिवादीबीच मिति २०६०।७।२८ मा भएको सम्झौता पत्रको शर्तहरू हेर्दा सो ठेक्का लमसम प्रकृतिको भएको र बन्द हडताल जस्ता कुराहरूमा ठेकेदारको कूल रकमको अङ्कमा

पछिबाट मिनाहा दिन सकिने उल्लेख छैन । यसरी सम्झौतापत्रमै उल्लेख नभएको र वादीले उक्त दफा ७९(३)(घ) को दावी पनि नलिएको अवस्थामा आर्थिक कार्यविधि ऐन, २०५५ को दफा २९ को कानूनी व्यवस्थाले वादीलाई मद्दत गर्न नसक्ने ।

इजलास अधिकृत : खड्गबहादुर श्रेष्ठ
इति संवत् २०६६ साल मंसिर १९ गते रोज ६ शुभम् ।

■ यसै लगाउको २०६२ सालको दे.पु.नं. ९५११, ७९४१, निषेधाज्ञा मिश्रित परमादेश, चिरञ्जीवी भण्डारी वि. तिलकराज थापा, तिलकराज थापा वि. जिल्ला विकास समिति रुपन्देही भएको मुद्दामा यसैअनुरूप निर्णय भएको छ ।

११.

मा.न्या.श्री मोहनप्रकाश सिटौला र मा.न्या.श्री अवधेशकुमार यादव, २०६४ सालको फौ.पु.नं. ०६६१, कर्तव्य ज्यान, नारायण डाँगी वि. नेपाल सरकार

घटना घट्टाको चश्मदिद प्रत्यक्षदर्शी कोही नरहेको अवस्थामा प्रत्यक्षदर्शीको अभावमा अन्य स्वतन्त्र परिस्थितिजन्य प्रमाणको मूल्याङ्कन नगरी गम्भीर प्रकृतिका फौजदारी मुद्दामा निष्कर्षमा पुग्ने हो भने चश्मदिद गवाहविनाको कसूरमा सबै आरोपितलाई सफाई दिँदै जानुपर्ने अवस्था रहन्छ । यस्तो भएमा अपराधीको मनोबल बढ्दै जाने र त्यसले समाजमा दण्डहीनताको स्थिति उत्पन्न हुनसक्ने र न्याय व्यवस्थाप्रति पनि वितृष्णा पैदा हुन्छ । स्वतन्त्र रूपमा स्थापित भएका परिस्थितिजन्य प्रमाण फौजदारी न्यायिक प्रणालीमा कसूर स्थापित गर्ने एक मुख्य आधारको रूपमा रहेको हुन्छ । यस्तो आधारलाई नजरअन्दाज गरी निर्णय दिँदा समाजमा न्याय व्यवस्थाको प्रवर्धनमा बाधा अड्चनको अवस्था सिर्जना हुनजाने ।

इजलास अधिकृत: चन्द्रप्रकाश तिवारी
कम्प्युटर: शम्भुप्रसाद शाह
इति संवत् २०६६ साल माघ १३ गते रोज ४ शुभम्

एकल इजलास

१.

मा.न्या.श्री रामप्रसाद श्रेष्ठ, रिट नं. ०६६-WO-०८५०, उत्प्रेषणयुक्त परमादेश, शंकरध्वज कार्की वि. जिल्ला स्वास्थ्य कार्यालय, स्याङ्जा समेत

सरुवा निर्णय संशोधन गरी यथावत् कायम गर्ने कार्यले पेशा, रोजगार हक वा रोजगारी तथा सामाजिक सुरक्षाको हकमा आघात पुग्ने अवस्था रहँदैन। एउटै स्थानमा अवस्थित एउटा कार्यालयबाट अर्को कार्यालयमा भएको सरुवालार्ई संशोधन गरिँदा निवेदकलाई कुनै किसिमको अप्ठेरो पर्ने वा त्यसले निवेदकको रोजगारीमा कुनै पनि किसिमबाट बाधा अवरोध सिर्जना हुनसक्ने संभावना नदेखिने।

इजलास अधिकृत : उमेश कोइराला
इति संवत् २०६६ साल चैत १५ गते रोज १ शुभम्

२.

मा.न्या.श्री श्री रामकुमार प्रसाद शाह, २०६६ सालको WO-०३३०, उत्प्रेषणयुक्त परमादेश, कृष्णकुमार श्रेष्ठ वि. सशस्त्र प्रहरी बल सिद्धकाली गण पकली समेत

निवेदकले आफू कार्यरत् रहेको व्यारेकभित्र पाहुना भै आएको व्यक्तिको मोवाइल सेट र रुपैया चोरी गरेको स्वीकार गरी वयान र कागज गरी दिनुका साथै विभागीय कारवाहीको क्रममा सशस्त्र प्रहरी नियमावलीबमोजिम निजबाट स्पष्टीकरण माग गरी प्रतिवादको मौकासमेत दिइएको निज निवेदकले दिएको स्पष्टीकरणमा पनि आफूले आचरणविपरीतको कार्य गरेको भनी स्वीकार गरेको देखिँदा कानूनबमोजिम स्पष्टीकरण मागी सशस्त्र प्रहरी नियमावली, २०६० को नियम ८७(१) (ग)(घ) र (ङ) को आचरण विपरीत कुरा गरेको भन्ने अभियोगमा नियम ८४(ख)(१) बमोजिम सेवाबाट हटाइएको विपक्षीको निर्णय कानूनअनुकूल नै रहेको देखिएकोले

कानूनबमोजिमको निर्णयबाट निवेदकको संविधानप्रदत्त पेशा रोजगार गर्ने हकमा आघात पुगेको भन्न प्रथम दृष्टिमा नै देखिन नआउने।

इजलास अधिकृत : गायत्रीप्रसाद रेग्मी
इति संवत् २०६६ साल मंसिर ३० गते रोज ३ शुभम्।

३.

मा.न्या.श्री श्री रामकुमार प्रसाद शाह, २०६१ सालको रिट निवेदन नं. ३७४, उत्प्रेषणयुक्त परमादेश, राकेश विलास वि. पुनरावेदन अदालत पाटन समेत

रिट निवेदकले आफ्नो रिट निवेदनमा आफूले पाउनु पर्ने अंश नपाएको वा घटी अंश पाएको भन्ने दावी लिएको नभई फैसलाबाट कायम भएका केही अंशियारहरूको मृत्यु भएको कारणले घटी अंशियार कायम गर्ने आदेश हुँदा आफूले सूचना नपाएको सम्म दावी लिएको अवस्था देखिँदा निजको सम्पत्तिसम्बन्धी अधिकारमा आघात परेको अवस्था निवेदन लेखबाट नदेखिने।

इजलास अधिकृत : श्रीप्रकाश उप्रेती
कम्प्युटर : सरस्वती पौडेल
इति संवत् २०६६ साल मंसिर १ गते रोज २ शुभम्

४.

मा.न्या.श्री श्री रामकुमार प्रसाद शाह, २०६१ सालको रिट नं. निवेदन नं. ३७३, उत्प्रेषणयुक्त परमादेश, राकेश विलास वि. अञ्जु विलास समेत

मरिसकेको अंशियारहरूलाई बाहेक गरी बाँकी अंशियारहरू बीच भाग बण्डा छुट्याउँदा यी निवेदकको अंशसम्बन्धी हकमा कुनै प्रतिकूल प्रभाव परेको भन्ने निज निवेदक स्वयंको कथन नरहेको अवस्थामा निवेदकको हकहित प्रतिकूल कुनै काम कारवाही वा निर्णय नभएको स्थितिमा सो कारवाहीको सूचना नदिएको मात्र कारणले सो काम कारवाही र निर्णय बदर हुन सक्ने अवस्था नहुँदा प्रस्तुत मुद्दामा प्रथम दृष्टिमा निवेदकको मागबमोजिम उत्प्रेषणको आदेश जारी हुनुपर्ने अवस्थाको विद्यमानता नदेखिने।

इजलास अधिकृत : श्रीप्रकाश उप्रेती
इति संवत् २०६६ साल मंसिर १ गते रोज २ शुभम्

५.

मा.न्या.श्री श्री मोहनप्रकाश सिटौला, २०६६ सालको रिट नं. ०६९९, उत्प्रेषण समेत, *विष्णुलाल श्रेष्ठ वि. भूमिसुधार तथा व्यवस्था मन्त्रालय समेत*

जग्गा दर्ता समेत गरी दिई जग्गाधनी प्रमाण पूर्जा समेत प्राप्त गरिसकेका र निजहरूले दर्ता गराएका सो जग्गाहरू र निर्णय समेत हालसम्म अन्यथा हुन गएको छ भनी निवेदकले लेख्न भन्न नसक्नुको साथै गैरकानूनी रूपमा जग्गा दर्ता भए प्रचलित कानूनबमोजिमको उपचारको बाटो निवेदकले अवलम्बन गर्न पाउने नै देखिँदा प्रस्तुत निवेदनमा निवेदकको मागबमोजिम कारण देखाउ आदेश जारी गरिरहनु नपर्ने ।

इजलास अधिकृत: चन्द्रप्रकाश तिवारी

इति संवत् २०६६ साल माघ २५ गते रोज २ शुभम्

६.

मा.न्या.श्री श्री गिरीशचन्द्र लाल, २०६६ सालको रिट नं. ०७५१, उत्प्रेषण समेत, *रामसुन्दर रघु श्रेष्ठ वि. लक्ष्मीदास रघु श्रेष्ठ समेत*

फैसलाले यो यस्तो प्रकारको दावी पुग्न सक्ने भनी बोलेको अवस्थामा दावीअनुसारको हक पक्षहरूमा सिर्जना तथा स्थापित हुन जान्छ । फैसलाको ठहर खण्डमा तायदातीमा उल्लिखित कित्ता नम्बरका जग्गामध्ये स्पष्ट रूपमा कित्ता नम्बर उल्लेख गरी सो कित्ता नम्बरका जग्गाहरूबाट वादी दावीअनुसार ४ भागको १ भाग अंश पाउने ठहरी अन्तिम भै बसेको फैसलामा अंश पाउने भनी नबोलिएका अमुक कित्ताका जग्गाहरूबाट समेत बण्डा गरिपाऊँ भनी निवेदकले गरेको दावी नठहराई फैसलामा उल्लेख भएका कित्ताहरू मध्येबाट बण्डा गर्ने गरी भएको आदेश निवेदकको दावीअनुसार कानून विपरीतको भन्न नमिल्ने ।

इजलास अधिकृत: चन्द्रप्रकाश तिवारी

इति संवत् २०६६ साल फागुन ९ गते रोज १ शुभम्